मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू ( ठाणंगसुत्त, ५२९ )



# अनुसंधान

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य विषयक संपादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

संपादक: विजयशीलचन्द्रसूरि

39



जैन मुनि द्वारा चित्रित पोथीचित्र ( जुओ आ अंकमां टूंक नोंध )

कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि, अहमदाबाद

#### मोहित्ति सच्चवयणस्स पिलमंथू ( ठाणंगसुत्त, ५२९ ) 'मुखरता सत्यवचननी विधातक छे'

# अनुसंधान

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य-विषयक सम्पादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका



सम्पादकः विजयशीलचन्द्रसूरि



श्रीहेमचन्द्राचार्य

किलकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि अहमदाबाद २००७

#### अनुसन्धान ३९

आद्य सम्पादक: डॉ. हरिवल्लभ भायाणी

सम्पादक: विजयशीलचन्द्रसूरि

सम्पर्क: C/o. अतुल एच. कापडिया

A-9, जागृति फ्लेट्स, पालडी

महावीर टावर पाछळ

अमदावाद-३८०००७

फोन: (०७९) २६५७४९८१, (M) ९९७९८५२१३५

प्रकाशक: कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम

जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि,

अहमदाबाद

प्राप्तिस्थान: (१) **आ. श्रीविजयनेमिसूरि जैन स्वाध्याय मन्दिर** १२, भगतबाग, जैननगर, नवा शारदामन्दिर रोड,

आणंदजी कल्याणजी पेढीनी बाजुमां,

अमदावाद-३८०००७

(२) सरस्वती पुस्तक भण्डार

११२, हाथीखाना, रतनपोल,

अमदावाद-३८०००१

मूल्य: Rs. 80-00

मुद्रक:

क्रिश्ना ग्राफिक्स, किरीट हरजीभाई पटेल

९६६, नारणपुरा जूना गाम, अमदावाद-३८००१३

(फोन: ०७९-२७४९४३९३)

#### निवेदन

विश्वख्यात भारतीय पुरातात्त्विक डो. हसमुखभाई सांकळिया साथे, अने त्यार पछीना अग्रणी पुरातत्त्विविद डो. र. ना. महेता साथे, ज्यारे पण सम्पर्कमां आववानुं बन्युं, त्यारे एक मुद्दो सतत सांभळवा मळ्या कर्यो : ''अमारे तो ठीकरां-पथरा कहे ते ज मानवानुं; ते सिवायनी, परम्परागत वातो अमे न मानीए.''

मने थतुं, अने हुं दलील पण करतो ज, के ''तो वीतेला शतकोमां जे घटनाओ खरेखर घटी गई होय, अने छतां अनेक कारणोसर सर्जाती रहेली उथलपाथलोने कारणे तेना पुरावारूप सामग्री मात्र अनुपलब्ध होय, तो शुं ते घटनाओने अवास्तविक-काल्पनिक गणीने ज चालवानुं ? पुरातात्त्विक के ऐतिहासिक गणावीए तेवा स्थूल-भौतिक पुरावा न जडे, अने छतां ते बाबत परत्वे सेंकडो के सहस्रो वर्षोथी एक अविच्छित्र परम्परा चाली आवती होय, तो तेने केवळ अप्रमाण गणीने ज चालवानुं ?'' जेम ए लोको आ दलीलनो अस्वीकार ज करे, अम एमनी आ धारणा पण मारा गळे न ज ऊतरे.

अलबत्त, परम्परागत धारणाओनो यथावत् स्वीकार थाय, एवो आग्रह तो कोई विवेकी न राखे. एमां संशोधनने तथा कांट-छांटने अवकाश होय ज, होवो ज घटे. सवाल एना सदंतर इन्कारनो छे. शुं अमुक बाबतो एवी न होय के जे खरेखर बनी होवा छतां, विदेशी-विधर्मी आक्रमणो, युद्धो अने लूंटफाट तथा कुदरत-सर्जित आसमानी सुलतानीने कारणे, ते अंगेनां पुरावारूप साधनो नाश पाम्यां होय ?

मारा हिसाबे, सत्यनी प्राप्ति, परम्परा अने पुरातत्त्व/इतिहासना समन्वयने आधीन छे.

— शी.

# अनुक्रमणिका

वा. श्रीसकलचन्द्रगणिकृत : मुनिमाला सं. विजयशीलचन्द्रसूरि	1
षड्भाषामय श्रीऋषभप्रभुस्तवः सं. मुनि कल्याणकीर्तिविजय	9
तपागच्छ गुर्वावली स्वाध्याय 💮 सं. उपा. भुवनचन्द्र	20
श्रीवाचक सकलचन्द्रगणि-विरचित सत्तरभेदी पूजा - सस्तबक: अवलोकन विजयशीलचन्द्रसूरि	24
उ. श्रीसकलचन्द्रगणिकृत सत्तरभेदी पूजा । सस्तबक । सं. साध्वी दीप्तिप्रज्ञाश्री	39
कविवर-श्रीहेमरत्नप्रणीतो भावप्रदीप: म. विनयसागर	76
टूंक नोंध विजयशीलचन्द्रसूरि	93
विहंगावलोकन उपा. भुवनचन्द्र	94
नवां प्रकाशनो	98

अप्रिल-२००७ 1

#### वा. श्रीसकलचन्द्रगणिकृत मुनिमाला

सं. विजयशीलचन्द्रसूरि

तपगच्छपति विजयदानसूरिगुरुना शिष्य उपाध्याय सकलचन्द्रगणिनी आ एक भक्तिप्रधान लघु रचना छे: मुनिमाला, प्राकृतमां 'मुणिमाल'. ५० गाथानी आ रचना तद्दन सरल प्राकृत-महाराष्ट्री प्राकृतमां गाथाबद्ध छे. आमां कर्ताए पुरातन तपस्वी, त्यागी, संयमी, मोक्षगामी एवा अनेक मुनिराजोनां नामोनुं स्मरण करतां जईने तेमने वन्दना करी छे. हृदयनी भक्तिभावनानुं ज प्राधान्य होईने आ नामस्मरणमां कोई कम-व्यवस्था नथी. आ तो किवनुं भक्त हैयुं भावविभोर बनीने महापुरुषोने याद करवामां लीन बन्युं होय अने ते क्षणे जेम जेम नामो याद आवतां जाय तेम तेम गाथामां गुंथातां-वणातां-वर्णवातां जाय. अंटले आमां कालनो के बीजी कोई रीतनो पण कम न जळवातो होय तो ते फरियादनो विषय नथी बनतो.

प्रथम गाथामां मुनिपदे प्रतिष्ठित एवा मुनिओनी मालानुं स्मरण करवानी प्रतिज्ञा करीने, २ थी ८ गाथाओमां ऋषभदेव, तेमना भरतराजा आदि सो पुत्रो, पौत्रो, गणधरो, आदर्शभुवनमां ज्ञानप्राप्त करनार ८ राजाओ तथा सिद्धि अने सर्वार्थसिद्ध देविवमानने वरनारा असंख्य मुनिओने स्मरेल छे. गा. ९मां सगरादि चक्रवर्ती राज-मुनिओनुं, १०मां सुदर्शन शेठ-मुनिनुं, ११मां ८ बलदेवोनुं, १२मां बलरामनुं, मिल्लनाथिजनना ६ राज-मित्रोनुं, १३मां विष्णुकुमारनुं तथा स्कन्धकसूरिना ४९९ शिष्योनुं, १४मां कार्तिक शेठ तथा तेमनी साथे दीक्षित ८ हजार विणक्पुत्रोनुं तेमज सुकोशल अने कीर्तिधर मुनिओनुं, १५मां ४० हण्णाना मोक्षगामी पुत्रो तथा अक्षोभ, सागरचन्द्र, रथनेमि, नेमिनाथनुं, १६मां जालि-मयालि-उवयालि-पुरुषसेन-वारिषेण-प्रद्युम्न-शाम्ब-अनिरुद्ध-सत्यनेमि-दृढनेमिनुं, १७मां शत्रुंजय पर्वत पर सिद्ध थनारा ६ देवकीपुत्रोनुं अने गजसुकुमाल(कृष्णपुत्र)नुं, १८मां ढंढणऋषि, थावच्चापुत्र तथा तेना हजार साधुओ, शुक मुनिनुं, १९मां ५०० मुनियुक्त शेलगाचार्य तथा सागर अने सारण (?)मुनि अने नारदनुं, २०-२१मां नेमिनाथ-तीर्थमां दीक्षित

नारदादि २०नुं तेमज पार्श्वनाथना तीर्थमां १५ अने महावीरिजनना तीर्थमां १० प्रत्येकबुद्धोनुं के जेमणे ४५ ऋषिभाषित अध्ययनोनुं प्रतिपादन-कथन करेलुं तेनुं, २२मां दमदन्तमुनि, कुब्जवारक (बलदेवपुत्र) मुनि, पांच पाण्डव तथा केशीकुमारनुं, २३मां कालिक तथा मेखिल स्थिवर तथा आनन्दरिक्षतनुं तेमज पार्श्वापत्य काश्यप मुनिनुं, २४मां एक राजिषनुं, जे दीक्षा लई मरण पामी सर्वार्थसिद्ध विमाने गया छे तेनुं, स्मरण कर्युं छे.

गा. २५-२६मां वीरजिनना इन्द्रभृति आदि ११ गणधरोनुं, २७मां वीरजिनना पूर्व पिता-माता ऋषभदत्त-देवानन्दानुं, २८मां ४ प्रत्येकबुद्धोनुं तथा प्रसन्नचन्द्र ऋषिनुं, २९मां वल्कलचीरी, अइमुत्त, क्षुल्लककुमार, अर्जुनमाली, लोहार्य तथा दृढप्रहारीनुं, ३०मां कूरगडु तथा ४ तपस्वी साधुओनुं अने गौतमस्वामीना सोबती १५०० तापस साधुओनुं, ३१मां शिवराजर्षि, दशार्णभद्र, नन्दिषेण, मेतार्य, इलापुत्र, चिलातीपुत्रनुं, ३२मां मृगापुत्र, बहुपिण्डिक एवा इन्द्रनाग केवली, धर्मरुचि, तेतलिपुत्र तथा सुबुद्धिनुं, ३३मां सुबुद्धिना वचने बोध पामेल जितशत्र, तथा प्रतिमाना दर्शनथी बोध पामेल आर्द्रकुमारनुं, ३४मां पेढालपुत्र, सुदर्शन, गांगेय, जिनपालित, धर्मरुचिनुं, ३५मां जिनदेव, कपिल, इषुकारराजा वगेरे ६ साधको (इसुयारिज्जं, उत्तरज्झयणे), संजयराजर्षि, क्षत्रियमुनि, हरिकेशी मुनि, ३६मां शीलकसूरि तथा तेमना केवलज्ञानी भाणेजो, सुबाहुकुमार अने ९ मुनिवरोनुं, ३७मां रोह, पिंगल, स्कन्धक, तिष्य, कुरुदत्त, अभयकुमार अने मेघकुमारनुं, ३८मां हल्ल-विहल्ल, सर्वानुभूति-सुनक्षत्र, सिंह अणगार तथा धन्य-शालिभद्रनं, ३९मां अन्तिम राजर्षि उदायन के जेने वीतभय पत्तनमां वीरिजने स्वयं दीक्षा आपेली तेनं, ४०मां जम्बुस्वामी, प्रभव, शय्यंभव, यशोभद्र, सम्भृतविजय तथा भद्रबाहुनं, ४१-४२मां भद्रबाहुना चार शिष्यो के जेमणे राजगृहीमां रात्रिना चार पहोरमां पोतानुं कार्य साधेलुं: एके सिंहगुफामां रहीने, बीजाए दृष्टिविष सर्पना राफडे रहीने, त्रीजाए कूवाना थाळे ऊभा रहीने अने चोथाए कोशा-वेश्याना घेर रहीने (स्थूलभद्र), तेनुं, ४३मां सम्प्रतिराजाना गुरु सुहस्ती तथा आर्य महागिरि अने पन्नवणासूत्रनिर्माता श्यामार्य तथा अवन्तीसुकुमालनुं, ४४मां कालकाचार्य, आर्यसमुद्र, सिंहगिरि, धनगिरि, समित, वज्र, अर्हद्दत्तनुं, ४५मां वज्रसेन, दुर्बलिका पुष्यमित्र, अप्रिल-२००७ 3

आर्यरिक्षत,वन्ध्य (विन्ध्य) तथा स्कन्दिलसूरिनुं, ४६मां देविधगणिनुं तथा तपवंत, जिनशासनना भूषण होय एवा तमाम गणि-आचार्योनुं स्मरण कर्युं छे.

४७मां अढी द्वीपना जिनोने वन्दन छे. ४८मां आ काळना छेल्ला थनार आचार्य दुप्पसहसूरिने वन्दन करीने चन्दनबालादि श्रमणीगणने संकलित वन्दना करी छे. ४९मां सीमन्धरजिन अने तेमना गणधर तथा लब्धिसम्पन्न मुनिओने वन्दन करीने कर्ता पोताना गुरुनुं तथा पोतानुं नाम निर्देशे छे. गा. ५०मां मुनिमाला ते मुनिओना नामरूपी मन्त्रनी माला होवानुं जणावीने तेनुं माहात्म्य वर्णवी रचना पूर्ण करे छे.

ऐतिहासिक कही शकाय तेवी केटलीक वातो आमांथी जडे छे ते आम छे: १. आजे 'इसिभासियाइं' (ऋषिभाषित) ना नामे अलग अलग ऋषिओनां सुभाषितो के उपदेशोना संग्रहरूप जे आगमग्रन्थ प्राप्त थाय छे, ते नेमिनाथ भगवानना नारद वगेरे २०, पार्श्वनाथना १५ तथा महावीरस्वामीना १०- एम कुल ४५ प्रत्येकबुद्ध साधुओना उपदेशोना संकलनरूप छे (गा. २०). आ ऋषिओनां नामो तथा केटलांक वचनो वर्तमान प्रचलित परम्पराना सन्दर्भमां विलक्षण जणाय तेवां छे. आ प्रत्येक ऋषिने ते ग्रन्थमां 'अर्हत्' तरीके ओळखावेल छे. सार एटलो के ते तमाम जैन साधको हता; तेओ मात्र महावीरनी परम्पराना ज न होतां तेमना पुरोगामी बे तीर्थंकरोनी परम्परामांना पण हता.

२. वीरस्वामीना ११ गणधरो पैकी चोथा 'व्यक्त' ने अहीं 'विउत्त' नामे तथा 'मौर्यपुत्र'ने अहीं 'मोरीसुत' नामे वर्णवाया छे (गा.२५). तो 'करकण्डु' नामे प्रख्यात राजिषने अहीं 'वरकुण्ड' मुनिना नामे ओळखाव्या छे. प्रसिद्ध छे के 'करकण्डु' ए तेमनुं उपनाम हतुं. (गा. २८). ३. प्रचितित कथानुसार स्थूलभद्रादि ४ मुनिओ सम्भूतिवजयसूरिना शिष्यो होवानुं समजाय छे, ज्यारे अहीं तेओने आ. भद्रबाहुना शिष्य गणाव्या छे. वळी, 'चऊिहं रयणिजामेहिं' ए पद द्वारा, ते चारे मुनिओ, एक ज रात्रिना ४ प्रहरोमां, कमशः, कालधर्म पाम्या होवानो संकेत पण प्राप्त थाय छे. (गा. ४१-४२).

आ रचनानी, सम्भवत: १७मा शतकमां लखायेली, ३ पत्रोनी

हस्तप्रतिनी झेरोक्स नकल मांडवी-कच्छना श्रीखरतरगच्छ संघना ग्रन्थभण्डारमांथी प्राप्त थई छे, तेना आधारे आ सम्पादन करेल छे. प्रति जरा अशुद्ध छे. पडिमात्रामां लेखन छे. नकल आपवा बदल ते संघना प्रमुख हरनीशभाईनो आभारी छुं.



#### मुनिमाला

महोपाध्याय श्रीसकलचन्द्रगणिगुरुभ्यो नमः ॥ वंदिअ सिद्धसमिद्धं पणद्वदुद्वद्वसम्मरिउज्हं । परिमिट्टिपंचमपए ठिअ-मुणिमालं विचितेमि 11811 वंदे पढमनरिंदं पढममुणिदं [च] पढमजिणचंदं । जगसुहसुरतरुकंदं रिसहं भ्वणिम्म कयभद्दं 11711 भरहस्स पुत्त-नत्तुअ-मृणिवसहसए सए य समरंतो । हिअए नमामि भरहं दसहिं सहस्सेहिं सममेअं 11311 बंभीसुंदरिबुद्धं बाहुबलि तह जुगाइपुत्ताणं । अट्राणवइम्णीणं केवलनाणीण वंदामि 11811 भरहस्स पढमपुत्तं आइच्वजसं नमामि केवलिणो(णं) । तह आसबलम्णिदं बलभद्दं वसुबलं वंदे 11411 तत्तो महाबलं तह अमिअबलं मृणिस्भद्दकेवलिणं सागरभद्दमुणिदं वंदेइ(मि?)अ अट्ट केवलिणो 11311 अत्रे रिसहजिणस्स य तित्थे गणहरसुलद्भिपत्ताणं । अइसइअणगारीणं आयरियाणं च तह वंदे 11011 एवमसंखम्णिदे सिद्धाणुत्तरविमाणसुहपत्ते । जावजिअजिअ(ण)मृणिदं गणहरम्णिसंजुअं वंदे HZII सगरं मघवं मुणिवं सणंकुमारं च संति-कुंथजिणं वंदामि अरम्णिदं पउमं हरिसेण जयसेणं 11911

विमलजिणतित्थदिक्खं महाबलं मुणिवरं च वंदामि ।	
तं च पुणोवि सुदंसण-सिट्टिमुणि वीरजिणसीसं ॥१	٥II
अयलं विजयं भद्दं वंदे सुप्पभ सुदंसणं सिद्धं।	
आणंदनंदणं चिअ पउमं इअ अहु बलदेवे ॥१	शा
रामं सुरत्तपत्तं निक्खंतं रायछक्कमवि वंदे ।	
जं मिल्लजिणसमीवे तं मिल्लजिणं सपरिवारं ॥१	शा
सिद्धं विण्णुकुमारं खंधगसीसे नमामि जे सिद्धे ।	
एगूणे पंचसए मुणिवसहे विजिअउवसग्गे ॥१	311
नेगम अटुसहस्से सह घित्तूणं च कत्तिओ सिट्ठी।	
पव्चइओ तं वंदे सुकोसलं तह य कित्तिधरं ॥१	811
किन्ह[स्स] सुए सिद्धे अट्ठ य अक्खोह-सागरप्पमुहे ।	
	411
जालि-मयालि-उवयालि-पुरिससेणे अ वारिसेणे अ।	
•	६॥
सित्तुंजयम्मि सिद्धे देवइपुत्ता य सिद्धिमणुपत्ता ।	
99	७॥
ढंढणमुणि च वंदे थावच्चापुत्तयं सहस्सेणं ।	
	८॥
पंचसयसाहुजुत्तं सिद्धं वंदे अ सेलगायरियं ।	
•	९॥
नारयरिसिपामुक्खे वीसं सिरिनेमिनाहतित्थिम्म ।	
	oll
पत्तेअबुद्धसाहू निममो जे भासिउं सिवं पत्ता ।	611
·	१॥
वंदे दमयंतमुणि बलदेवसुअं च कुञ्जवारययं ।	211

कालिअमेहलिथेरं आणंदरिक्खअं तइअं (?)।	
तह कासवयं वंदे पासावच्चिज्जमुणिपवरं	॥२३॥
सिरिओ राया निक्खंतो पालिऊण वरचरणं ।	
सळ्वटुं जो पत्तो रायरिसिं तं च वंदामि	॥२४॥
वीरस्स इंदभूइं तहग्गिभूअं च वाउभूइं च ।	
मुणिव विउत्त-सुहम्मे मंडिअ-मोरीसुए वंदे	॥२५॥
वंदे अकंपिअं पुण गणहारि अयलभायरं चेव ।	
मेअञ्जं च पभासं वीरस्स[य] सव्वमुणिवंसं	॥२६॥
वीरजिणपुव्विपअरो देवाणंदा य उसभदत्तो अ ।	
सिद्धिसुहं संपत्ते तेर्सि वंदामि तिविहेणं	ાાગ્ડા
वरकुंडमुणि दुमुहं, निमं च वंदामि निग्गई(इं) सु	गइं ।
पत्तेअबुद्धमुणिणो पसन्नचंदं च रायरिसिं	॥२८॥
वंदे वक्कलचीरिं अइमुत्तरिसिं[च]खुड्डुगं कुमरं ।	
अज्जुणमालागारं लोहज्ज दढप्पहारिं च	॥२९॥
वंदामि कूरगडुअं चउरो खवगे अ तावसे मुणिणो	l l
गोअमदंसणबुद्धे दसपंचसए अ वंदामि	॥३०॥
वंदे सिवरायरिसि दसन्नभद्दं च नंदिसेणमुणि ।	
मेअज्जमिलापुत्तं चिलाइपुत्तं नमंसामि	॥३१॥
वंदामि मिआपुत्तं बहुपिंडिअ इंदनागकेवलिणं।	
जाइसरं धम्मरुइं तेअलिपुत्तं सुबुद्धि च	॥३२॥
जिअसत्तुं पडिबुद्धं सुबुद्धिवयणेण जं च तं वंदे	l
पडिमादंसणबुद्धं तं वंदे अद्दुमरं च	॥३३॥
पेढालपुत्तयं तह वंदे अ सुदंसणं महासत्तं ।	
गंगेअं जिणपालय धम्मरुइं पत्तसव्वट्टं	ાાકશા
जिणदेवं कपिलमुणि इसुआरनिवाइसाहुछकं च ।	
संजयरायरिसि नम-खत्तिअमुणिवं च हरिकेसि	॥३५॥

वंदे सीलयसूरिं तह तस्स य भाइणिज्जकेवलिणो	1
वंदे सुबाहुकुमरं तयव्व तह नव य वरमुणिणो	॥३६॥
रोहं च पिंगलमुणि खंधगमिव तीसयं च कुरुदत्तं	1
अभयकुमारमुणिंदं मेहकुमारं च वंदामि	॥३७॥
वंदे हल्लविहल्लं साहुं सव्वाणुभूइनक्खत्ते ।	
सीहं अणगारं तह धन्नमुणि सालिभद्दं च	॥३८॥
चंपाउ वीअभए गंतुं वीरेण दिक्खिओ जो उ।	
वंदे परमपयत्थं उदायणं चरमरायरिसं	113811
वंदे जंबूसामि पभवं सिज्जंभवं च जसभद्दं।	
संभूअविजय(यं) भद्द-बाहु सुअकेवलाभोगं	ll80ll
एगं गुहाइ हरिणो बीअं दिट्ठि(ट्ठी)विसस्स सप्पस्स	l
तइअं च कूवफलए कोसघरे थूलभद्दं च	॥४१॥
चउरो सीसे सिरिभद्दबाहुणो चऊहिं रयणिजामेहिं।	
रायगिहे सीएणं निअकज्जकरे नमंसामि	॥४२॥
संपइगुरुं सुहरिथ अज्जमहागिरिगणि च वंदामि ।	
पन्नवणासामेञ्जं वंदे अ अवंतिसुकुमालं	118311
वंदे कालिगसूरिं अज्जसमुद्दं च सीहगिरिसूरिं।	
धणगिरि समिअं वयरं वंदे तह अरिहदित्रगुरुं	118811
वंदामि वयरसेणि(णं) दुब्बलिआपूसमित्तआयरिअं।	
सूरिं च अज्जरिक्खअ वंज्झं तह खंदिलायरिअं	॥४५॥
देवड्ढिखमासमणा–दिअ मुणिगुणगणेहिं जे गणिणो	ı
वंदे तव[धण]धणिणो जिणसासणभूसणे मुणिणो	॥४६॥
''पुक्खरवरदीवड्ढे धायइसंडे अ जंबुदीवे अ।	
भरहेरवयिवदेहे धम्माइगरे नमंसामि''	ાાજશા
उस्सप्पिणीइ चरिमं दुप्पसहगणहरं च वंदामि ।	
एए अन्ने अ तहा चंदणबालाइ समणीओ	118811

सीमंधरजिणगणहर, आमोसहिआइलद्धिसिद्धिजुए । सिरिविजयदाणसीसो वंदइ ते सयलचंदमुणी ॥४९॥ मुणिणाममंतमालं सिवयं समरेड् जो सयाकालं । सो पावई विसालं पुण्णं पावक्खए मूलं ॥५०॥

इति श्रीमुनिमाला सम्पूर्णा ॥ शुभं भवतु ॥

#### षड्भाषामय श्रीऋषभप्रभुस्तवः

सं. मुनि कल्याणकीर्तिविजय

श्रीऋषभप्रभुस्तव ए श्रीऋषभदेवभगवाननी, ४० श्लोकोमां पथरायेली एक सुन्दर स्तुतिमय रचना छे. तेमां संस्कृत, समसंस्कृत तथा प्राकृतनी छ भाषाओ, एम कुल आठ भाषाओमां विविध अलङ्कारो तथा व्याकरणना प्रयोगो द्वारा श्रीऋषभदेव भगवाननी अत्यन्त भाववाही स्तुति करवामां आवी छे.

भाषाओमां स्तुतिओनो क्रम आ प्रमाणे छे:

स्तुतिना श्लोको	छन्द
8-8	आर्या
4-6	आर्या
9-97	आर्या
१३-१६	आर्या
१७–२०	आर्या
<b>२१</b> –२४	आर्या
२५-२८	आर्या
<i>२९-३७</i>	दोधक
	१-४ ५-८ ९-१२ १३-१६ १७-२० २१-२४ २५-२८

३८मा श्लोकमां तो कविए पोतानी सघळी प्रतिभा कामे लगाडीने कमाल करी दीधी छे. आ श्लोक आठेय भाषामां रच्यो छे. तेमां दरेक भाषामां ते ते चरणना अर्थो अलग अलग थाय छे.

प्रथम चरण	संस्कृत, समसंस्कृत-प्राकृत, प्राकृत	छन्द-
द्वितीय चरण	पैशाचिकी, चूलिकापैशाचिकी	शार्दूलविक्रीडित
तृतीय चरण	मागधी, शौरसेनी	छे.
चतुर्थ चरण	अपभ्रंश	

३९ मा श्लोकमां संस्कृतभाषामां चक्रबन्ध बनाव्यो छे, जेमां कविए पोतानुं नाम पण गर्भित रीते मूकी दीधुं छे. अहीं पण छन्द शार्दूलविक्रीडित छे.

४० मा श्लोकमां कविए आ स्तोत्रनी महत्ता बतावी उपसंहार कर्यो

छे. छन्द मालिनी छे.

आ स्तवमां किवए काव्यशक्तिनी साथे साथे अलङ्कारशास्त्र तथा व्याकरणना ज्ञाननो पण सफळ विनियोग कर्यो छे. तेमां पण प्राकृतनी पांच भाषाओ–मागधी, पैशाचिकी, चूलिका पैशाचिकी, शौरसेनी तथा अपभ्रंश-मां रचेली स्तुतिओमां तो तेओ जाणे व्याकरणना उत्सर्गो तथा अपवादोनां उदाहरणो आपतां होय ते रीते प्रयोगो करे छे. जेमके :

- (१) मागधीभाषामां क्षा नो एक (दक) थाय छे, परंतु प्रेक्ष् तथा चक्ष् धातुना क्षा नो स्क थाय छे. आ त्रणेय प्रयोगो कविए १०मा श्लोकमां कर्या छे.
- (२) शौरसेनी भाषामां धातु पछी आवेला क्त्वा-प्रत्ययनो इय तथा दूण आदेश थाय छे. पण कृ तथा गम् धातु पछी आवेल क्त्वा-प्रत्ययनो डडुअ आदेश थाय छे. आ त्रणेय प्रयोगो कविए २२मा श्लोकमां कर्या छे.

आ ज रीते बीजा पण अनेक प्रयोगो बीजी भाषाओमां कविए कर्या छे जे व्याकरणना अभ्यासीओने रुचे तेवा छे. आ साथे, जे अलङ्कारो शृङ्गार अथवा वीर रसना वर्णन वखते वपराता होय तेवा अलङ्कारोनो पण कविए भक्तिरसमां भरपेट उपयोग करेल छे.

कविए अर्थान्तरन्यास, निदर्शन, उत्प्रेक्षा, उपमा, विरोधाभास, व्याजस्तुति व. अर्थालङ्कारो तथा श्लेष, अनुप्रास, चक्रबन्धादि शब्दालङ्कारोनो उपयोग कर्यो छे. (जुओ श्लोको – २, ३, ४, ६, ७-८, १३, १८, २२, २९, ३९ वगेरे.)

आम, आ श्रीऋषभप्रभु स्तव एक श्रेष्ठ काव्यरचना छे.

कर्ता : आ स्तवना कर्ताए पोताना नामनो उल्लेख गर्भित रीते ३९मा श्लोकमां कर्यों छे. तेमां चोथा चरणमां रत्नाज्ञान० (रत्नज्ञान) एवं पद आवे छे, तेना उपरथी एवी अटकळ करी छे के किवनुं नाम ज्ञानरत्न होवं जोइए, जे निर्विवादपणे जैन मुनि ज छे. अने आ प्रतिमां बीजी बे कृतिओ खरतरगच्छीय मुनिओनी छे ते जोतां आ मुनि पण खरतरगच्छीय ज हशे, एम मानी शकाय.

अवचूर्णि: आ स्तवनां विषम पदोनो सरळ अर्थ (संस्कृतभाषामां) अवचूर्णिरूपे आपवामां आव्यो छे, जेना लीधे श्लोकोनो पदच्छेद करवामां तथा अर्थ समजवामां घणी सरळता रहे छे. साथे साथे केटलेक ठेकाणे व्याकरणनां सूत्रो पण ते ते प्रयोगोने अनुसारे आपवामां आव्या छे. जो के, केटलांक विषम स्थानो अवचूर्णिकारे नजरअंदाज पण कर्या छे, जेना कारणे अमुक स्थानो सन्दिग्ध रह्यां छे.

अवचूर्णिकार: आ अवचूर्णिना कर्ता तपगच्छीय मुनि मितविजय छे एवुं तेना छेडे आपेल पुष्पिकाथी जणाय छे.

प्रतिपरिचय: आ प्रति कया ज्ञानभण्डारनी छे ते जाणी शकायुं नथी. प्रति पंचपाठी छे जेमां वच्चे स्तव तथा चारे बाजुए अवचूर्णि छे. आ प्रतिमां आ स्तव सिवायनी बीजी पण त्रण कृतिओ छे:

१. श्रीजिनप्रभसूरिरचित श्रीनेमिनाथ कियागुप्त स्तव, २. पद्मनिन्दमुनि-रचित यमकबद्ध श्रीपार्श्वजिनस्तव, तथा ३. श्री सोमसुन्दर(सूरि)रचित यमकबद्ध श्रीपार्श्वजिनस्तव. आमांनां बन्ने पार्श्वजिनस्तव अवचूर्णि / वृत्ति सहित छे.

प्रतिमां अक्षरो स्पष्ट-स्वच्छ छे. लेखनमां अशुद्धिओ छे. पद्मनिन्दिमुनि-रचित पार्श्वजिनस्तवनी अवचूरिमां तेनो रचना संवत् १७७९ आप्यो छे उपरथी आ प्रतिनो लेखनकाल १८मो सैको अनुमानी शकाय छे.



#### श्रीऋषभप्रभुस्तवः षड्भाषामयः

॥६०॥

निखिधरुचिरैज्ञानं दोषत्रैयविजयिनं सतां ध्येयैम् । जगदवँबोधनिबन्धन-मादिजिनेन्द्रं नैवीमि मुदा ॥१॥

अवर्चूाण: १. ज्ञानातिशय: । २. रागद्वेषमोहरूपम्, अपायापगमातिशय: । ३. पूजातिशय: । ४. वचनातिशय: । ५. णुक् स्तुतौ, **णुवु-रु-स्तुभ्य ईत्**, प्र. ई ॥

कस्तव पितिद्विषोऽलं विदतुं पितो गुणान् गुरुनिभोऽपि । चुलुकै: प्रमिमासित वा क इव जलं चरमनीरिनधे: ॥२॥ १ मानवैरिण: =प्रमाणरहितानित्यर्थ: ॥ अव० तदपि त्वद्धक्तिरस-प्रतरिलतो विच्य तावकगुणाणुम् । चौपलनुन्नोऽस्फ( स्फु )टमपि लपञ् शिशुर्वा निखेवादः ॥३॥ १. चापलप्रेरित: । २. भवति [इति शेष:]॥ अव० जानप्रदीपजमिव स्त्रिग्धाञ्जनम्पैहितं चरणलक्ष्म्या । सद्ध्यानदृगञ्जितये चिकुरचयस्तेंऽसयो रुरुचे ॥४॥ संस्कृत भाषा॥ १. ढौिकतम् ॥ अव० तमकसिणसप्पखयमोर ! मोर्ग्डेल्लाह ते किर्लिमंति । तुह सासणा ैपिधं जे कुणंति विविहे तविकलेसे ॥५॥ १. मोरउल्ला मुधार्थे । २. ते क्लाम्यन्ति । ३. पिधं = पृथक् ॥ अव० तिज्जअ केल्लाणिसिर्रे देवं कल्लाणिसिरिविलासिगिहं। तुह वंदे देहमहं विलिससमोहं पि हयमोहं ॥६॥ १. कल्याणं = स्वर्णम् । २. मोहं पि = मयूखमपि ॥ अव० तुंह मुहरण्णा सयला-रविंदलच्छीमेरट्टफुसणेणं । जं विजिओ हिमरस्सी निअकंती( ति )निवि( व )हसूहडेहिं ॥७॥ १. तव मुखचन्द्रेण । २. मस्ट्टो देशीभाषयाऽहङ्कारः ॥ अव० अंसइं तमभिभवभरं सहिउं सहिउं पहू ! <sup>र</sup>ससंको सो । दुग्गं खु स्यइ घणपरिहिदंभओ ैपरिनिसेहट्टा ॥८॥ युग्मम् ॥प्राकृतम्॥ १. असइं-तं पूर्वगाथोक्तमभिभवभरं स्मृत्वा हे प्रभो ! । २. शशाङ्कः । ३. अव० परिनिषेधार्थं = स्वारिमुखचन्द्रनिवारणाय, अन्योऽपि य: सशङ्को भवति स दुर्गं रचयति ॥ र्तुंह शुस्तिदभावस्तं <sup>१</sup>गदपञ्ञे <sup>१</sup>शमयपथमवञ्जंते । चिँणकुमदलश्कशवशे मिश्रदिस्टी पदेदि भवे ॥९॥ १. तव स्वस्तिदभावस्थम् । २. गतप्रज्ञः । ३. समयपथमव्रजन् । ४. अव० जितकुमतराक्षसवशो । ५. मिथ्यादृष्टिः पतित भवे ॥

#### तैमवय्यविय्यदिमेंधं ैआचस्किदसुस्ट( शुस्टु )मोश्कपुलमग्गं । काला चिट्ठामि हगे हिलसभिर पेस्किंदुं धन्ने ॥१०॥

अव०

१. तं समयपथमवद्यवर्जितं पापरिहतम् । २. इह जगित । ३. आख्यातसुष्ठुमोक्षपुरमार्गम् । ४. कदा स्थास्यामि अहम्, अहमहं वयं वयमोर्हगे । (अहं वयमोर्हगे [सिद्धहेम० ८/४/३०१]) । ५. हर्षभरो । ६. प्रेक्ष्य धन्य: ॥

#### केलिहंलाह गुणाहं हिलेंञ्ञ-कसवस्ट-लायि-किलणाह । दुह<sup>ै</sup> अपुलवभत्तिलसं वंदाँमि हंगे शलीलाह ॥११॥

अव०

१. केलिगृहस्य गुणानाम् । २. हिरण्यकषपट्टराजिकिरणस्य । ३. तवाऽपूर्वभक्तिरसं यथाभक्ति । ४. वन्दामहे । ५. हगे = वयम् । ६. शरीरस्य । द्वितीयार्थे षष्ठी प्राकृतत्वात्, अवर्णाद् वा ङसोडाह [सि.हे.८/ ४/२९९], आमो डाहं वा [सि.हे. ८/४/३००], अहं वयमोर्हगे [सि.हे. ८/४/३०१] ॥

#### शे <sup>१</sup>यणिदधन्नकमले ये १ पक्खालिद-महंद-पंकमले । धिद<sup>१</sup> पलमहिमसलूवे यँयदु भवं शे शदाकोहे ॥१२॥ मागधी ॥

अव०

१. स जनितधन्यकमलः, पक्षे सञ्जनितधान्यलक्ष्मीकः । २. यः प्रक्षालित[महा]पङ्कमलः । ३. धृतपरमिहमस्वरूपः । ४. जयतु भवान् स सदाऽक्रोधः, पक्षे तु कौघो =जलसमृहः ॥

#### विर्बुधान रैचिञ्ञानत ! औनञ्ज-सामञ्ज-पुञ्ज ! तिसँ पञ्जं । रंतून हितपके मे कर्तीसिद्धिकतंबनीपनया ! ॥१३॥

अव०

१. विबुधानां देवानाम् । २. राजनत ! । ३. अनन्यसामान्यपुण्य ! । ४. दिश-देहि प्रज्ञां-बोधिरूपाम् । ५. रत्त्वा हृदये मे । ६. कृतसिद्धि-कृतु(टु)म्बिनीप्रणय ! ॥

#### र्भंत्तिभरातो दूरे चिँष्टति यो<sup>ै</sup> तुह रिमय्यते नेन । <sup>8</sup>कसटभरे चरनसुधा-विहितसुनातो( नो ) |न| सो भाति ॥१४॥

अव०

१. भक्तिभराद्वरे । २. तिष्ठति । ३. यस्तव रम्यतेऽनेन । ४. कष्टभरे । ५. चरणसुधा[विहित]स्नानो न स भाति ॥

#### र्युंह्यातिसे वि तेवे <sup>२</sup>अपुरवसुरपातपे <sup>३</sup>सुतय्येव । कीरित नो येन रती से कथं वपते सुकतबीजं ? ॥१५॥

अव॰ १. युष्मादृशेऽपि देवे । २. अपूर्वसुरपादपे । ३. सदैव । ४. येन न क्रियते रित: । ५. स कथं वपते. सुकृतबीजम् ? ॥

> नैत्थून तुँरितरिपुनो भैगवं ! चि(ति?)ट्ठे तुमंमि मलरूपा । विँलसिरपमतच्छीजल-पॅक्खालितगा इवाऽपगता ॥१६॥पैशाची ॥

अव॰ १. नंष्ट्वा । २. दुरितिरिपव: । ३. भगवन् ! दृष्टे त्विय मलरूपा: । ४. विलसन्ति च तानि प्रम[ता/दा]क्षिजलानि च, तै: । ५. प्रक्षालितगा इवाऽपगता:, भवद्दर्शनेऽपि पापानि प्रणष्टानीत्यर्थ: ॥

#### काठं सिनेहेंफलिता तुँह वदनं सेवते रैमा अनखं । हातून पंर्कृरकुनं पोमं(म्मं) सँकलंकमपि च विधुं ॥१७॥

अव॰ १. गाढम् । २. स्नेहभरिता । ३. तव [वदनम्] । ४. लक्ष्मी अनघं-निर्दोषं सेवते । ५. किं कृत्वा ?-इत्याह - हातून = हित्वा । ६. किं ? - भङ्गुरगुणं = विनश्वरस्वभावं पद्मम् । ७. सकलङ्कमिप च विधुं = चन्द्रम् ॥

#### चलथलमंडलपटिमा चिंकुराली शोफैते तंवंऽशयुके । च्चलनसिरितितसथेनूचरनाय तंतव्व नवतुव्वा ॥१८॥

अव॰ १. जलधरमण्डलप्रतिमा = जलदश्यामेत्यर्थ: । २. चिकुरा: केशास्तेषामाली श्रेणी । ३. शोफते = शोभते । ४. तवांऽसयुगे = स्कन्धयुगले । ५. इवोत्प्रेक्ष्यते, तता विस्तीर्णा, नवा = सपल्लवा, अतिहरितत्वेन नीता दूर्वा । ६. कस्मै ?, चरणश्रीरूपा या त्रिदशधेनुः = चरित्रलक्ष्मीरूपा या कामधेनुः, तस्याश्चरणायाऽऽहरणायेत्यर्थः ॥

#### र्तुंच्छंसिकलितटे फुलित ैनवखनालि व्व मंचुंकचलाची । गतरच-कपोलतलरुचि-फासुरसोदामिनीतामा ॥१९॥

अव० १. तवांऽसिगिरितटे । २. नवा=सजला [स्फुरित]=गर्जती(ति) या घनालि: =मेघपटलीस्तद्वत्(०पटली, तद्वत्) । ३. मञ्जुः (मञ्जवः) कचा = वालास्तेषां राजी श्रेणि: । ४. गतरज:कपोलतलरुचिभास्वरा सौदामनीदाम = विद्युन्माला यस्यां सा ॥१९॥ लिंसफं सुम्(म)कानापिल-चनपरिहिनसंखनीलवाहखटा । पथमं फूर्वि सब्बकला निअनीती तंसिँआ तुमए ॥२०॥ चूलिकापैशाची ॥

१. हे ऋषभ ! । २. सुमार्गानाबि(वि)लजन[बर्हि =]मयुरसङ्गनीरवाहघटा अव० अनाबि(वि)ला=निर्मला । ३. भुवि । ४. दर्शिता त्वया ॥

कुमदमकज्जनिदाणं ता ेडध भवमाणविज्जदे भयवं ! । चिंदौ वि तावि नैज्जेव भोदि पावाण धना इमा ॥२१॥

१. कुमत[म?]कार्यनिदानं यतस्तत: । २. इह राजा (?) इह भवानानम्यते अव० भगवन् ! । ३. चिन्ताऽपि तावदीदृशी । ४. नैव भवति पापानां जनानाम् ॥ केंड्अ अलं हरिपदविं गेड्अ अलं वा महिं(हं)दविसह(य)सुहे । खैलु लहिअ अपुलवपदं पणइजणं पाविदुण खलु ॥२२॥

> १. इन्द्रपदविं(वीं) कृत्वाऽलम्, अलम् इन्द्रपदवीकरणेन सतमित्यर्थः । २. गत्वाऽलं वा महाविषयसुखान् । ३. अपूर्वपदं लब्ध्वा खल् पर्याप्तम् । ४. प्रणयिजनं प्राप्य खलु पर्याप्तं, तेनाऽपि न कार्यं ममेति भाव: ॥

> <sup>१</sup>दव्वाद् विरागमिदो पज्जत्तं <sup>र</sup>णेगच्छत्तरज्जेणं । ैणविर तुँह भत्तिपथिमा जिर्णंरायं फुँरद(दि) हदयंमि ॥२३॥ युगलम्॥

> १. द्रव्याद् विरागमितो=गतः । २. णः पूरणे, एकच्छत्रराज्येन पर्याप्तम् ।

३. नवरं = केवलम् । ४. तृह = तव । ५. भक्तिप्राथिमा = गृरुता।

६. जिनराजन् (राज) ! । ६. स्फुरति हृदये, ममेति शेष: ॥

हीमांणही भवादो चिकदो हं अम्हहे(अम्महे) अ दिद्रा वो । र्णं ताइथ ताइथ मं ससेवगं सामिआ ! तत्तो ॥२४॥

शौरसेनी ॥

१. विस्मयनिर्वेदे । २. अस्मन्हर्षेण (अम्महे-हर्षेऽव्ययं) । ३. वो यूयं दृष्टा: । ४. णं नत्वर्थे । ५. त्रायस्व त्रायस्व । ६. मां स्वसेवकं स्वामिन् ! । ७. कस्मात्(तस्मात्) भवात् = संसारात् ॥

हेंमसरोरुहभासं केलिमलकमलालिमंथहिमभासं । भैवभयध्लिमहाबल ! नाभेय ! भवंतमभिवंदे ॥२५॥

अव०

अव०

अव०

अव० १. सुवर्णकमलकान्ति[म्]। २. पापपद्मश्रेणिविनाशचन्द्रः। ३. संसारभयरेणूत्पाटने महाबल !॥

तव चलणोभयजलडह-पालीसेवापरायणा देवं !।
वं(वि?)दंति नरालिगणा वरसिद्धिरमामरंदलवं ॥२६॥
१. तव चरणरूपोभयपद्मसेवातत्पराः। २. लभन्ते। ३. नरभ्रमरगणाः।
४. प्रधानमोक्षलक्ष्मीरूपो मकरन्दो रसस्तस्य लव एकाग्रता॥

महिमधरं तमसमहिम-विमलं वरधीसरोरुहरिवमलं।
समयं दयारसमयं सुगमं सेवे तवार्रसुगमं॥२७॥
१. क्लीबेऽव्ययं (?), शोभना गमाः सदृशपाठा यत्र। २. असु[गमः]
दुर्ज्ञेयः॥

तव नामधेअचिता बुद्धिरसा भुवि नरावली धत्ते । संरुद्धारिनरामरभंदर्रमोलिंगकेलिरसं ॥२८॥ समसंस्कृतभाषा ॥

अव० १. भद्रं कल्याणम् । २. आलिङ्गनम्-आलिङ्गः ॥ <sup>१</sup>तउ रेहइ अलिसामली चिहुराउलभुँअपिट्टि । <sup>३</sup>निज्जिअरिउबलझाणदुग-सुहडह <sup>४</sup>नं असिलट्टि ॥२९॥

अव० १. तव राजते=शोभते । २. भुजपृष्ठे । ३. निर्जितरिपुबल-धर्म-शुक्लध्यानसुभटयसिरिट्ठी (सुभटस्याऽसियष्टि: ?) । ४. इवार्थे नं तेउरनाइ नावजविणजणव (इवार्थे नं-नउ-नाइ-नावइ-जणि-जणवः [सिद्धहेम० ८/४/४४४]) ॥

हैंद्रु मिल्हिवि सहज ठिआ छड्डिअ जणववहार । पड़ं झाँयइं मुणिहंस पर रुंभिंअ करणपयार ॥३०॥

अव० १. हठं मुक्त्वा, स्यमोरस्योत् [सि.हे. ८/४/३३१] अनेनोकारः, स्यम्-जस्-शसां लुक् [सि.हे. ८/४/३४४]२. अपभ्रंशे पइं = त्वाम् । ३. ध्यायन्ति । ४. पराः = सावधानाः । ५. निरुध्य ॥

> भामु महाभवजलहिजिल नरु निविडइ हुँहुरित । जंब न पंबिअ तुँज्झ पहु सासणनाव झड ति ॥३१॥ १. हुहुरिभ-अभिशब्दानुकरणम् । २. तव । ३. झटिति=शीघ्रम् ॥ सुकृदु कहंतिहु तासु धाइं कहं तसु सफलउ जन्म । दिवि टिन्नि जीवा जि न करित धुं वतउं जिणधम्म् ॥३२॥

अव०

अव०

१. कहंतिहु = कुत: । २. तासु = तस्य । ३. घइं पूरणे । ४. तसु = 'तस्य । ५. करोति । ६. त्वयोक्तं जिनधर्मम्, कान्तस्याऽत उं स्यमो: [सि. हे. ८/४/३५४] ॥

र्बुंविहि कुतित्थिअ जं वयणु वरुप्पर्इं विरुद्ध । तं नरसिव पंडिअ तइं जि देव प्रमाणुहिं (प्रणामुहिं?) सुद्ध ॥३३॥

अव०

१. ब्रुवते यस्य तदिव, क्लीबे जस्-शसोरिँ [सि.हे. ८/४/३५३], तद्वचनम् । २. निरस्य=निराकृत्य, पण्डिता: । ३. त्वामेव शुद्धं देवं प्रणमन्ति (प्रमाणयन्ति ?) ॥

ईंक्रसु तेहाभाव विणु छेडु पणिमअ तुह पाय । भुंजिज्जइ ताँ सुरसुहइं करिविणु दुक्खविघाय ॥३४॥

अव०

१. एकशस्तादृग्भावं विना । २. छडु = यति(दि ?) प्रणतास्तव पादा - यैरिति गम्यते । ३. भोक्ष्यन्ते सुरसुखानि । ४. ता = तस्मात्, तैरिति गम्यते ॥

मज्झ केंहंतिहु भाविरिउ-देंडवडतणउ हैंबुक्क । सामि असङ्गल तेउ छुडु नहु चंपई परचक्क ॥३५॥

अव०

१. कुतो मम । २. भावारिधौद्याभयं (भावारियोधाद् भयं ?) । ३. अवस्कन्दस्य दडवडु । ४. भयस्य हबक्कु । ५. यदि स्वामी असाधारणस्तेजा (असाधारणतेजा) स्तदा नैव चंपते [=आकामित] परचक्रम् ॥

र्जुंतिव किरिआ-नाणहिर घेंड़ ैमिणसुद्धजुगिग । कु कु न पहुच्चड़ सिवनयरि तुह सासणरह लग्गि ॥३६॥

अव०

१. योजयित्वा क्रिया-ज्ञानतुरगौ । २. घइं पूरणे । ३. मन:शुद्धियुगाग्रे । ४. भुवः पर्याप्तौ हुच्च [सि.वे. ८/४/३९०] । ५. तव शासनस्थे लिगत्वा कस्को न न शिवनगरे प्राप्नोति ? ॥

पिक्खेंवि तुहतणु ैभूंहडी कंचैणकंतिखण्ण । विअसह मुह-नयँणुल्लडी तो मइं भवदुह तिण्णि ॥३७॥

अपभ्रंश: ॥

अव०

१. प्रेक्ष्य तवः, २. तनु = भूमीं, डडीप्रत्ययाभ्यां रूपनिष्पत्तिः; ३. काञ्चनकान्तिरम्याम्, **रम्यस्य खन्नः** [सि.हे. ८/४/४२२]; ४. नयनानि, डुझ-डउप्रत्ययौ; ५. ततो मया भवदुःखानि तीर्णानि ॥

नार्यांलीहयमं दयामयमलं भासं धरन्तं परं रांकालिं पवलोतयं अखचयासत्तं कमालाचितं । धीरं लोअमहंददावहकलं छिन्नाहमायालदं नाधा निर्वृदरेसि वंदइं(उं) पइं साणंदसीसल्लइं ॥३८॥

> आद्ये अंह्रौ संस्कृतं १, सम. २, प्रा. ३ । द्वितीये पैशाची(चि)की-चूलिकापैशाचिके । तार्त्तीयीके मागधी-सूरसेन्यौ ।

> > तुर्येऽपभ्रंश: ॥

अव०

- १. अयाली लाभश्रेणिस्तत्र ईहा-आकाङ्क्षा येषु ते तथा, एवंविधा यमा अहिंसाद्या यस्य स, नैवंविधि(धं), समसंस्कृतेऽप्येवम्; न्यायालीहत-मन्दतामदमलं भाषां धरन्तं पराम्, अथवा हिट् गतिवृद्धौ, हयनं हयोऽच्प्रत्यय: (२); आयाली = वृद्धिहन्तारं (३) भाषाम्;
- २. राकासखीं नैर्मल्येन प्रबलोदयं, नेन्द्रियचयासक्तं, सुखा(?)मालाचितं =व्याप्तम् (१); रागारिप्रवरोदयम्, अघजयासक्तम्, ज्ञानश्रीराजितम्(२); ३. धीरं लोकमहत्ताविधकरं, छित्राधमाचारभावम्(१); धीमन्तं बुद्धिग्राहकं, धिया वा ईला स्तुतिर्यस्य तं, लोकमहक्ता(त्तावहा) कला यस्य स तं,

छिन्नदु:खमायालतम् (२);

४. हे नाथ ! निर्वृत्यर्थं, तादथ्यें केहिं तेहिं रेसि रेसि तणेणाः [सि.हे. ८/४/४२५]. अपभ्रंशे तादथ्यें द्योत्ये एते पञ्च निपाताः; वन्दे, अप्रत्ययस्याऽऽद्यस्य उ(अन्त्यत्रयस्याऽऽद्यस्य उं) [सि.हे. ८/४/३८५] त्यादीनामन्त्यत्रयस्य यदाद्यं वचनं तस्याऽपभ्रंशे उं इत्यादेशो वा स्यात्; त्वां सानन्दं यथा भवति शीर्षेण ॥

नैन्दाऽऽप्तोरुविशुद्ध-योगरभस्(सो)न्मीलन् प्रतोषान्वितं सुष्टः सौष्ठवभग्नमोहरचनस्त्वं विञ्जहस्तच्छविः । रैक्या भास्करतिग्मशुद्धिरमणीसङ्क्लृप्तभावः परं रत्नाज्ञान(रत्नज्ञान?)रमांशमास्तरु(र)थ मे तन्याः सुविद्यां चिरम् ॥३९॥ कविनामगर्भं चक्रम् ॥

अव०

१. नन्द त्वमिति सम्बन्धः, हे प्राप्तोरुविशुद्धः-योग-रभसोन्मीलन्, प्रतोषान्वितं यथा भवतिः, २. एवं कमलहस्तच्छविः, ३. रुच्या कान्त्या सूर्य = तीव्र!॥ जेंगति विविदवान् यस्त्वत्कमाग्न्या(ज्ञा)स्वरूपं तैव शुचिपदभावं संस्तवादध्यवस्य । रचयति निजकण्ठालिङक्रयां स्तोत्रमेतत् भवति भवकरीणां सिंह सोऽभीष्टलक्ष्मीः (?) ॥० ॥

॥ इति श्रीऋषभप्रभुस्तवः ॥ षट्(ड्)भाषामयः ॥

॥ लेखक-वाचकयोः शिवाभीष्टदायी आयतौ ॥

अव०

१. विश्वे ज्ञानमान्(वान्) यस्त्वदीयमाज्ञास्वरूपम्; २. तव संख्यावान् (संस्तवात् ?) शुचि = पवित्रं च तत् पदं च शुचिपदं मोक्षमित्यर्थः, तस्य लाभम्, अध्यवस्याऽवगम्य; ३. भूङिति सू(सौ)त्रो धातुः, प्राप्तौ विकल्पत्वाणिङ इति ङकारानुबन्धकरणेनाऽऽत्मनेपदस्याऽनैकान्तिकत्वं सम्भाव्यते इति ॥

॥ इति श्रीनाभेयात्मजस्य(?) कुमतादिदुर्जयोलूकमदपारायने (?) सूर्यसित्रभस्य, कर्माद्रिचूर्णने कुलिशायते प्रथमजिनस्याऽष्ट्रभाषामय-स्तवनावचूर्णि: ॥

॥ लि. मु॰मतिविजयेनेयम् ॥



## तपागच्छ गुर्वावली स्वाध्याय

सं. उपा. भुवनचन्द्र

पार्श्वचन्द्रगच्छ जैन संघ, मांडलना हस्तलिखित संग्रहनी प्रकीर्ण पत्रोनी पोथीमां एक पत्रमांथी मळेली त्रण रचनाओ अहीं रजू करी छे.

तपागच्छ गुर्वावली सज्झायना कर्ता वि. हीरसूरिजीना शिष्य पण्डित विजयहंसना शिष्य मुनि विनयसुन्दर छे. पट्टावलीनां नामो तो प्रसिद्ध छे, परन्तु कविए केटलीक महत्त्वनी विगतो पण सांकळी छे ते इतिहासनो अभ्यासीओने रसप्रद जणाशे. जेमके-

२६मा पट्टधर समुद्रसूरि खुमाणकुलना हता; मानदेवसूरि हरिभद्रसूरिना मित्र हता; विमलचन्द्रसूरि सुवर्णसिद्धि जाणता हता; पेथडशाहे धर्मकीर्तिगुरुना उपदेशथी १०८ जिनालयोनो जीर्णोद्धार कराव्यो हतो; विजयदानसूरि वडलिपुरमां स्वर्गवासी थया हता; विजयहीरसूरिना समुदायमां त्रण उपाध्यायो मेरु समान गणाता हता इत्यादि.

पट्टक्रमांकमां गरबड छे, प्रतिमां जेम छे तेम ज अहीं राख्या छे. गुर्वावली पछी वि. दानसूरिनी स्तुतिना श्लोको छे, ते अशुद्ध अने त्रूटक छे छतां अहीं लीधा छे. त्यार बाद हंसराज रचित वि. हीरसूरिगीत छे ते पण अहीं आप्युं छे. हीरसूरिजी महाराज प्रत्ये तेमनी विद्यमानतामां ज सकल संघमां केवो उत्कृष्ट अहोभाव प्रवर्ततो हतो तेनुं प्रतिबिम्ब गुर्वावली तथा गीतमां जोइ शकाय छे.

(१)

सकल सुरासुर सेवित पाय । प्रणमी वीर जिणेसरराय । तस शासिन गुरुपद पटधरू । भगतिइं थुणस्युं सोहाकरू ॥१॥ पहिलउं प्रणमउं गोतम स्वामि । १ सर्वसिद्धि हुइ जस लीधइ नामि । सुधर्म स्वामि २ पंचम गणधर । जंबूस्वामि ३ नामि जयकार ॥२॥ प्रभवस्वामि ४ तस पटधर ५ नमउ । शय्यंभव पटधर पांचमउ । यशोभद्र ६ भद्रबाहु ७ मुणिद । थूलभद्र ८ नमतां आणंद ॥३॥ तेहना शिष्य दोह पटधार । सूरीश्वर गुणमणि भंडार । आर्य महागिरि आर्य ९ सुहस्ति । संप्रति राजगुरु घणी प्रशस्ति ॥४॥ श्रीकौटिककाकंदक सूरि । इंद्रदिन्न १० दिन(न्न)सूरि १२ गुणभूरि । तस पाटे सीहगिरि १३ श्रीवयरस्वामी । १४ वज्रसेन १५ गुरु नमउं सिरनामि ॥५॥ नागेंद्रादिक कुल हूआ च्यार । पणि हुउ चंद्रगच्छ विस्तारि । चंद्रसरि १६ चंद्र यम निर्मलं । सामंतभद्रसूरि गुणनिलं ॥६॥ देवसूरि अभिनवदेवसूरि १७(१८) । प्रद्योतनसूरि १९ शमसुख पूरि । शांतिस्तवकर श्रीमानदेव २० । मानतुंग २१ सूरि कृतसूरसेव ॥७॥ वीराचार्य सूरि २२ जयदेव २३ । देवानंद गुरु २४ प्रणमउं हेव । विक्रमस्रि २५ स्रि नर्रासह २६ । सामुद्रस्रि खुंमाण-कुलसिंह ॥८॥ हरिभद्रसुरि मित्र मानदेव २७ । विबुधप्रभ गुरु २८ सारउं सेव । जयानंद सूरि २९ रविप्रभ वली ३१ । यशोदेवसूरि नमउं ३२ मनुरुली ॥९॥ विमलचंद्रसुरि ३३ सोवनसिद्धि । उद्योतनसूरि ३४ बहुत प्रसिद्ध । सर्वदेवसूरि महिमावंत पाटि ३५ । ज्ञानादिक गुणनइं नही घाटि ॥१०॥ अर्बदपरिसरि टेलीगामि । शुभमुह्रति वड वडतरु ठामि । आठ पटोधर गुरू थापनां । करतां भय भांगा पापनां ॥११॥ वडगच्छ नाम हुउं ते भणी । आज लगई तस महिमा घणी । रूपश्री गुरुश्री देवसूरि ३६ । सर्वदेवसूरि ३७ नमउं गुणभूरि ॥१२॥ यशोभद्रसूरि ३८ श्रीनेमिचंद्र । तस पटि प्रणमउं श्रीमुनिचंद्र । ४० अजितदेवसुरि ४१ महिमावंत । वादीदेवसूरि अतिबलवंत ॥१३॥ विजयसिंहसूरि ४३ करउं प्रणाम । सोमप्रभ ४५ सूरिनउं लिउं नाम । तास पट्टि गुरु श्रीमणिरत्न । सूरि ४६ सुगुरु मंडलि सिरिरत्न ॥१४॥ वड तपगछ जलनिधि चंद्रमा । जगचंद्र विमलआतमा । संवत बार पंच्याओं वरिस । तिणि तपगछ थापिउ मन हरिस ॥१५॥ तस पाटे सूरी श्रीदेवेंद्र । विद्यानंदसूरि सदा अतंद्र ४८ । सुविहित यति गुरु श्रीधर्म्मघोष । धर्मकीर्त्ति गुरु कृतगुणपोष ॥१६॥ मालव मंडिल मंडिपद्रिंग । पृथ्वीधर साह गुरु संसर्गि । अठहुत्तरि जिणहर उधरी । निज संपद सुकृतारथ करी ॥१७॥ सोमप्रभस्रि ४९ तस पटि भलउ । सोमितलकसूरि ५० गुणगण निलउ ।

श्रीदेवसूंदरसूरि ५१ मुनिराय । ज्ञानसागरसूरि प्रणमउं पाय ॥१८॥ श्रीसोमसुंदर सुरि ५३ तस पटि धणी । अष्टविध गणिसंपद जस घणी । मुनिसुंदरसूरि ५४ अतिगुणवंत । रत्नशेखरसूरि ५५ महिमावंत ॥१९॥ श्रीलक्ष्मीसागर ५६ सूरिंद । सुमितसाधुसूरि ५७ नमउं मुणिद । हेमवरण जिम निरमल काय । हेमविमलसूरि ५८ नमउं मुनिराय ॥२०॥ तस पटि गुरु मुनिजनअवतंस । युगप्रधान सम जास प्रसंस । आनंदविमलसूरि ५९ आनंदकार । दूरि करिउं जेणइं सिथिलाचार ॥२१॥ भव्यजीव प्रतिबोध्या घणा । गीतारथ मुनिनी नहीं मणा । उदयवंत शासन तिहां थयउं । किल कसमल सिव दूरइं गयुं ॥२२॥ विजयदान दायक सपराण । श्रीविजयदानसूरि ६० शासन भाण । विजयवंत शासन तिहां करी । वडलिपुरि पामिउ सूरपुरी ॥२३॥ संप्रति विजयमान गुरुराज । तस पटि ध्रावाजिम अविचल राज । श्रीहीरविजयसूरि ६१ सुगुरु मुणिद । तां प्रतपउं जां मेरू गिरिंद ॥२४॥ श्रीआचारय पदवी धार । श्रीविजयसेनसूरि गुणधार । तस पट वर मणितिलक समान । उदयवंत हु जुगप्रधान ॥२५॥ श्रीधर्मसागर उवझाय प्रधान । विमलहरष निरमल अभिधान । कल्याणविजयगुरु करइ कल्याण । त्रिणिउ उवझाय गछि मेरु समाण ॥२६॥ श्रीविजयहंस पंडित धुरि लीह । इम अनेक पंडित धुरि सीह । स्विहित साधु साधवी जेह । दिनि दिनि उदयवंत हु तेह ॥२७॥ तपगछ गुरुनी गुर्वावली । भगति भणत पुहती मनरुली । अन् अनुक्रमि लेई नाम । विनयसुंदर करइ तास प्रणाम ॥२८॥

इति श्री तपागच्छ गुर्वावली स्वाध्याय: । कृत: पंडित विनयसुंदर गणिना। शुभंभवतु । कल्याणमस्तु ॥ पंडित विजयहंस गणि शिष्य जयविजयेन लिपिकृत: स्वाध्याय: ॥ कल्याणमस्तु ॥



(२)

#### [गुरुस्तुति]

श्री नाभिनंदन जिनेषु कुरुष्व शांते । शांतिं सतामभयदा करता गमार्हद्यक्षः प्रभो विजयदान गुरो: प्रसन्न ॥१॥

श्रीतीर्थराजः पदपभ सेवा-हेवािक देवासुर-किनरेश ।

गंभीरगीस्तारतरा वरेण्य । प्रभावदाता ददतां शिवं व: ॥१॥ कल्याणसारसविता नहरिक्ष मोह । कंतरवा रणसमान जवाद्य देव । धर्म्मार्थकामद महोदय वीरधार । सोमप्रभाव परमागम सिद्धिसूरे ॥१॥



(3)

#### [विजयहीरसूरि गीत]

हीरजी, तंबोले सोहइ नवरस रंगा।
तेरे गुन बहु हीरविजयसूरि। पुरुषरयण तुंहि चंगा।।१॥
तंबोले पान सुधारस वाणि तुम्हारी गाजित नई जउं गंगा रे।
करण पिवत करती दुख हरती। होवित निरमल अंगा।।२॥ हीरजी तंबोले०
सो प्यारी सारी तुम सेवा, अहिनिस करइ रही संगा रे।
सो नर सुख संपित जय पामइ। कीरित आय अभंगा रे॥३॥ हीरजी तंबोले०
साचुं नाथीनंदन कइसउ, उर काचउ सहु जाणउ रे।
हंसराज कहइ मुगतिनउ अरथी। तंबोल या मुख आणउ रे॥४॥ हीरजी तंबोले०



#### श्रीवाचक सकलचन्द्रगणि-विरचित

## सत्तरभेदी पूजा - सस्तबक : अवलोकन

विजयशीलचन्द्रसूरि

श्रीसकलचन्द्रजी उपाध्याय तथा तेमनी सत्तरभेदी पूजा जैन संघ माटे अत्यन्त जाणीती बाबतो छे. १६मा शतकनो पश्चार्ध अने सत्तरमा शतकनो पूर्वार्ध ए तेमनी विद्यमानतानो समय छे. तेमना विषे घणुं लखायुं छे. तेमनी प्राकृत, संस्कृत तथा गुर्जर रचनाओ अनेक छे, जेमां तेमणे धर्म, ज्ञान, वैराग्य, हितशिक्षा, भक्ति, विधि, वगेरे तत्त्वो निरूप्यां छे.

सत्तरभेदी पूजा ए तेमनी प्रभुभिक्तप्रधान, संगीतबद्ध एवी गम्भीर शास्त्रीय रचना छे. आ रचनाए तेमने व्यापक तथा ज्वलन्त कीर्ति आपी छे. सेंकडो वर्षोथी जैन देवालयोमां आ पूजा राग-रागिणी साथे, ठाठथी भणाववामां आवे छे.

जिन भगवाननी ५, ८, १७, २१, १०८ एम विविध प्रकारे पूजा रचाती होय छे, तेमां आ १७ प्रकारनी पूजा छे. जुदां जुदां १७ वानां क्रमशः भगवान सन्मुख धरवानां, अने प्रत्येक पदार्थ धरवानी साथे अलग अलग पूजा गाई जवानी होय; तेने पूजा भणावी-एम कहेवाय; दरेक पूजा गवाया पछी ते पदार्थ भगवान समक्ष मूकवामां आवे. ते १७ पदार्थ कया, ते विषे प्रारम्भनी त्रणेक प्राकृत गाथाओमां विगते वात थई छे.

श्रीसकलचन्द्र गणि खूब ज्ञानी, ध्यानी, वैरागी, भक्तकवि हता. तेमने जातजातना अभिग्रहो लेवानो खूब शोख हतो. अभिग्रह एटले प्रतिज्ञा. तेओ एवा प्रखर तपस्वी हता के वारंवार जुदा जुदा अभिग्रह लेतां, अने ते पूर्ण न थाय त्यां सुधी आहार-पाणीनो त्याग करता. एकवार तेमणे एवी प्रतिज्ञा लीधी के गधेडां भूंके निह त्यां सुधी कायोत्सर्गध्यानमां ऊभा रहेवुं ! आ प्रतिज्ञा ७२ कलाके पूर्ण थई. तेटलो समय अखण्ड ऊभा रह्या, ते समयमां तेमणे १०८ गाथाप्रमाण आ सत्तरभेदी पूजानी रचना करी. आ घटनानो निर्देश पूजाना छेडे आवेल कलशनी ढाळनी छेल्ली कडीना टबार्थमां पण जोवा मळे छे.

अंप्रिल-२००७ 25

आ पूजा-उपर रचायेला बे स्तबक-टबार्थ जोवामां आव्या छे, अने ते बन्नेनी एक एक हाथपोथी प्राप्त थई छे. 'अ.' संज्ञक प्रतिगत टबार्थना कर्ता पं. सुखसागर गणि छे; तेमणे वि.सं. १८००मां स्तम्भतीर्थ (खम्भात) मां टबो लख्यो छे. तेनां पत्र १० छे. ते प्रति कच्छ-नवावास गामना उपाश्रयमा ग्रन्थसंग्रहनी प्रति परथी थयेल जेरोक्स प्रतिरूप छे.

बीजी 'ब-' संज्ञक प्रतिगत टबार्थना कर्ता पं. जीवविजय गणि छे. तेमणे सं. १८५४ मां आणंदपुरमां आ टबार्थ लखेल छे. पत्र १२ छे. आ प्रति कच्छ-कोडायना जैन महाजन भण्डारनी क. ८१/९१४ नी नकलरूप प्रति छे.

आ बन्ने टबार्थोनुं संकलन करीने प्रस्तुत वाचना तैयार थई छे. ज्याँ ब. प्रति जुदी पडी होय त्यां पादनोंध रूपे तेना पाठांश नोंधी मूकेल छे, अने उपर अ. प्रतिना पाठ लीधेल छे.

#### \*

आ टबार्थना आधारे तथा आ बेउ प्रतिओमां आलेखायेल पूजाना मूळ पाठोमां ज्यां ज्यां जे कांई विशेषता के तफावत जणाय छे, तेनी नोंध आ प्रमाणे छे:-

१. प्रचलित वाचनामां, अन्य पूजाओना आरम्भमां जेम 'दूहा' होय छे तेम, अहीं 'वस्तु' छन्द जोवा मळे छे. १७ पूजा, तो १७ वस्तु छन्द. अेमां जे ते पूजाना वर्ण्य विषयनुं अपभ्रंश भाषामां, पण सघन, छटादार अने अर्थगम्भीर वर्णन थयुं छे. आ वस्तु छन्दो, अहीं आपवामां आवेल सम्पादनमां छे निह. अर्थात् टबार्थनी बन्ने प्रतिओमां आ छन्दो पण नथी, तेना विवरण रूप टबो पण नथी, के छन्दो विषे कोई नोंध-निर्देश पण नथी.

ए ज रीते, पूजाओना अन्ते काव्य-मन्त्रनो पाठ थाय छे. अहीं १७ पूजानां १७ काव्यो, प्रचलित वाचनामां प्राप्त छे. काव्यो संस्कृतमां छे, अने मुख्यत्वे उपजाति वृत्तमां छे. रचना पण शुद्ध, मधुर, प्रासादिक छे. ते काव्यो के ते परनो टबो, बन्ने प्रतोमां अदृश्य छे.

आम केम हशे ? पूजानी वर्तमाने प्रचलित-मुद्रित वाचना पण मूळे तो कोई हाथपोथीना आधारे ज प्रचार पामी होय छे. तो ते (मुद्रित) वाचनामां जे बे महत्त्वपूर्ण घटको छे, ते आ बे सस्तबक प्रतोमां गेरहाजर शाथी ? आवो प्रश्न सहेजे थाय.

आना समाधानमां बे कल्पना करी शकाय तेम छे. (१) आ बन्ने घटको अन्यकर्तृक होय अने प्रक्षिप्त होय. एटले के पूजा भणाववाना समये उद्भवेली कशीक आवश्यकतानी पूर्ति माटे कोई विद्वज्जनो आ बे चीजो पाछळथी जोडी होय.

(२) अथवा, आ बन्ने चीजो, १७ छन्द पण अने १७ काव्यो पण, श्रीसकलचन्द्रगणिए ज रची होय, पण ते तेमनी स्वतन्त्र-अलग ज रचनाओ होय; जेने पाछळना समयमां पूजा भणावती वखते, पूजानी साथे संयोजी देवामां आवी होय.

मने बीजी कल्पना वास्तवनी वधु नजीकनी लागे छे. केमके आवी अर्थसभर काव्यमय रचनाओ बीजा कोईनी होय एवुं मानवानुं मन ना पडे छे; साथे ज, आटली सरस रचनाओ, जो मूळ पूजाना ज अंगभूत होय तो, ते पर टबो रचवानुं टाळवानुं जीविवजयगणि के सुखसागरगणिने कोई ज कारण न हतुं. बल्के ते पर टबो लखवानी क्षमता ते बेउमां हती ज, होय ज. एटले एम कल्पी शकाय के टबाकारोना समय सुधी एटले के १८५४ सुधी तो, आ छन्दो तथा काव्यो पूजानां अंग तरीके प्रचलित निह थयां होय; पण सकलचन्द्रगणिनी स्वतन्त्र रचनाओ लेखे ज ते जाणीतां हशे; तेथी ज बन्ने टबाकारोनी कलम ते विषे प्रवर्ती निह होय.

- २. आ पूजाओनुं जे स्वरूप मुद्रित छे, ते करतां केटलेक स्थळे आ वाचनामां जुदा पाठ जोवा मळे छे; जेमां केटलाक पाठ वधु सारा, साचा अने महत्त्वपूर्ण जणाय छे. ते पाठोनी नोंध आ प्रमाणे छे :-
  - (१) प्रारम्भिक गाथा क्र. २-
  - ह. न्हवण विलेवण अंगंमी(मि) ।
  - मु. न्हवण विलेवण अंगमें । प्राकृत गाथा होवानुं जोईए तो ह. पाठ वधु ठीक जणाय.
    - (२) गा. ३-
  - ह. आहरणारोहणं चेव ।

```
मु. धयारोहणं आभरणारोहणं चेव ।
अहीं पण प्रा. गाथाबन्धनी रीते ह. पाठ वधु बेसे छे. १७ नो क्रम
तो आ रीते पण बेसे ज छे.
```

- (३) गा. ४-
- ह. ढोयणया । मु. ढोयणयं ।
  - (४) पूजा १, कडी १-
- ह. विशदगंधोदिकं । मु. विशुद्ध गंधोदकें ।
  - (५) कडी २-
- ह. यथेंद्रादिका तीर्थगंधोदिकं । मु. यथेंद्रादिकस्तीर्थगंधोदकै: ।
  - (६) गीत १, कडी ३-
- ह. विस्ताविस्ती । मु. विस्ताविस्तीकी ।
  - (७) पूजा २, कडी १-
- ह. भाजनां सुरभिरस पूरियां । मु. भाजनं सुरभिरसपूरियं ।
  - (८) कडी २-
- ह. कर अंस सिर भालि गलि । मु. करे अंस सिर भालस्थळे ।
- ह. कंठि हृदि उदरे जिननें । मु. कंठ हृदय उदर जिन ।
- ह. दुरित कही। मु. दुरित करी।
  - (९) गीत २, कडी ३-ह. तो ही भाव। मू. तो भी भाव।
  - (१०) पूजा ३, क. १-
- ह. होय ए देव आपो । मु. दोय अम देव आपो । (११)गीत ३, क. १-
- ह. होय माणिक लेकें । 🕟 मु. दोय चक्षुवर माणिक लेके ।
- ह. मेरे जिनमुख । मु. मेरे प्रभुभुख ।
- ह. कृपा करी प्रसाद कीजैं। मु. कृपा करी प्रभु दीजे। (१२)क. २-
- ह. देखि देखि जिनमुख। मृ. देखि देखि प्रभुमुख। (१३) पूजा ३, क. २-

```
मु. चोथीय पूजामां ।
         चोथीय पूजमां ।
ह.
         जे जिन सुर० ।
                                  मु. जिम जिन सुर० ।
ह.
    (१४) गीत ४, क. २-
         पूजित तिम भवि०।
                                  मु. पूजित भवि० ।
ह.
    (१५) क. ३-
                                  म्. चूरणवासे
         चूरणवासं
ह.
         मोचित ।
                                  म्. मुंचती ।
ह.
    (१६) पूजा ५, क. १-
         शुचि मेली ।
                                  मु. शुचि भेली ।
ह.
    (१७) गीत ५, क. १
         पंकजोपरि ।
                                  म्. पंकज पर ।
ह.
         ओरनकुं ।
                                  मु. ओर देवनकुं ।
ह.
         तुह्म सम ।
                                  म्. तुज समो ।
ह.
    (१८) पूजा ६, क. १-
         वासंति ए।
                                  मु. वासंतिका ।
ह.
    (१९) क. २-
         पाडलांकोल ।
                                  मु. पाडलंकोल
ह.
    (२०) गीत-६, क. १-
         प्रभू मेरे।
                                  मु. प्रभु हमेरे ।
ह.
                                  मु. जाये जाय तनु ताप ।
         जाइ जन तन् ताप ।
ह.
         गलइ ठवी ।
                                  म्. कंठ ठवे।
ह.
    (२१) क. २-
                                  मु. चढे दिसि वासंती ।
         चडइं दसदिस वासती ।
ह.
    (२२) पूजा ७, क. १-
         जासूलस्युं चीतरिओए । मु. जासुदशुं चित्त धरेए ।
ह.
    (२२) क. २-३,-
          ''पंचवरण अंगी प्रभु० चिक्क नामा रे'' एम पाठ छे । ज्यारे मु.
ह.
    मां अहीं ''सूर्याभादि करत० सुर गाति रे'' एम पाठ छे। ए ज प्रमाणे
```

ह.

刊.

ह.

ह.

ह.

जिनवर सीसि ।

बह भूषण ।

दूषण हरो ।

```
क. ३मां, ह. मां ''चंपकस्य दमणो० सुर गातइं रे'' पाठ छे, ज्यारे
म. मां 'चंपकस्यं दमणो॰ चिक्क नामा रे'' एम पाठ छे । आमां मु.
नो क्रम वधु बंधबेसतो लागे छे।
(२३) कडी-२.-
    अंगी प्रभु अंगइं । विरचयति जिम । मु. आंगी जिन अंगे ।
विरचति जिम ।
(२४) पूजा ८, क. १-
    अंगस् पूजता । मृ. अंग सुपूजतां ।
    जिनपद करइ भवि बंध । मु. जिनपद भवि करे बंध ।
(२५)क. २-
    पुजा जिन० ।
                         ्र मु० पूजो जिन० ।
(२६) गीत ८, क. १-
    आणंद पुरो रे माई ।
                           म्. आनंद पूरे, पूरो रे० ।
(२७) क. २-
                           म. करत तिम भविजन ।
    करत मन जाणती ।
(२८) पूजा ९, क. १
     अति तुंग ।
                            म्. अति उत्तंग ।
    रणरणति ।
                            म्. रणझणंती ।
(२९) पूजा १०, क. १-
    मां पंक्ति ३-४ छे, ते मृ. प्रमाणे ४-३ एम छे।
                           म्. पांच पीरोजडा ।
    पाछि पीरोजडा ।
                            म्. जिहां जड्या ।
    तिहां जड्या ।
    काने रविमंडल सम जिनकुंडल दीजीइ ए।
काने दो कुंडल शशीरविमंडल सम जिनवरने दीजीए ए।
(३०) गीत १०, क. १-
```

म्. जिनवर सीस चड्यो ।

म्. वर भूषण ।

म्. दूषणहर ।

```
(३१) क. २-
       पाचि मोतिनैं।
                                म्. पांच मोतिनैं।
ह.
         रयणे जडे ।
                                म्. रयणे जड्यो ।
ह.
                                म्, दियो पद लिओ आखंडल ।
         लिओ देउ रे आखंडल ।
ह.
    (३२) पूजा ११, क. १-
       रच्यो ।
                                मु. खच्युं ।
ह.
        सम भावस्यं ।
                                मु. सम भागस्युं ।
ह.
    (३३) क. २-
         कुसुमनी जातिस्युं ।
                                मु. कुसुमनी भाति शुं।
ह.
        वृंदने घोलतुं ए ।
                                म्. वृंदने थोभतुं ए।
ह.
    (३४) गीत ११, क. १-
         मेरा मन रमो ।
                                म्. मेरो मन रम्यो ।
ह.
    (३५) क. २-
        कुसुम चंद्रोदय झुमक तोरण । मु. कुसुम झुंमक चंद्रोदय
ह.
    तोरण ।
    (३६) पूजा १२, क. १-
        विबुध जिम ।
                                मु. विविध जिम ।
ह.
    (३७) क. २-
        कनकपूरीसइं।
                                म्. कनकपूरसे ।
ह.
    (३८) गीत १२, क. १-
       द्वादशमी पूजा ।
                                मु. द्वादशमी प्रभुपूजा करतां ।
ह.
        तिम जनमन ।
                                म्. जनमन ।
ह.
    (३९) क. २-
       कहावति जडति ।
                                मु. कहावती उडते ।
ह.
       ताण अधो० ।
                                म्. ताकु अधो० ।
ह.
ह. जो हमु परि ।
                                मु. जो हम परे।
        कुसुमपूजा कहइ ।
                                मु. कुसुमपूजा करी ।
ह.
    (४०) पूजा २३, क. १-
```

```
सारवर तंदुला ।
                                 मु. शालि वर तंद्ला ।
ह.
    (४१) गीत १३, क. १-
        यं रे देखत ।
                                 म्. ज्यं रे देखत ।
ह.
    (४२) क. २-
         अष्टमंगल वली ।
                                 म्. अष्टमंगलावली ।
ह.
         तुह्म घरिं होइं।
                                 मु. तुम घर फिरी होइ ।
ह.
    (४३) पूजा १४, क. १-
         अंबर तुंबरस्युं मेलीओ रे । मु. अंबर तगरस्युं भोलिउं ए ।
ह.
    (४४) गीत १४, क. १-
        अती ए धूपी ।
                                 मु. आणीए धूपी ।
ह.
        करंता ।
                                 म्. करंती ।
ह.
    मु. मां चोथी एक पंक्ति अधिक: "भवि कुगति शुचति बाली"।
    (४५) पूजा १५, क. २-
         तालमुवगइं ।
                                 म्. ताल उवंगे ।
₹.
         जयतमान पडताल
                                 म्. जयति मान
ह.
         एकतालुं ।
                                    पडतालिकतालूं।
         गालो ।
                                 मु. गालुं।
ह.
    (४६) गीत १५, क. १-
         सुयणो ।
                                 म्. सयणो ।
₹.
    (४७) क. २-
         तंति वीणो ।
                                 मु. तंति वयणो ।
ह.
         वाजित तूर जलद जिम
                                 म्. वाजित तान मान
ਜ.
         गृहिरं ।
                                    करि गीतं।
    (४८) पूजा १६, क. २-
        अभिनय ।
                                 म्. अभिनव ।
ਨੋ.
         देवराजा यथा ।
                                 म्. देवराजी यथा ।
ਰ.
    (४९) गीत १६, क. २-
         वेंणी कुस्मबंधी ।
                                 मु. वेंणी कुसुम गुंथी।
ह.
```

```
(५०) क. ३-
         नट्टकुट्टिकं ठहु ठहु विच । मु. नटकटिकट ठह ठह विच ।
ह.
     हस्तकों
ह.
                                 मु. हस्तकी ।
    (48)
                                 क. ४-
ह. भंति वाजइ।
                                 मु. तंति वाजे ।
    (५२) पूजा १७, क. १-
        रणकालो ।
ह.
                                 म्. रणकार ।
    (५३) क. २-
       सरती नवि ।
ह.
                                मु. सुरती नवि ।
      वेणी वंश ।
                                म. वीणावंश ।
ह.
    (५४) गीत १७, क. १-
       जीवे घणुं ।
                                मु. जीवो घणुं ।
ह.
        ्सरणाई बोलै ।
ह.
                                म्. सरणाई वार्जित्र बोले ।
    (५५) क. २-
         सकल भविकुं प्रभो ! भव न फेरी । मृ. सकल भविकुं
ह.
                                            भवोभव न फेरी।
    (५६) क. ३-
     पूजा करो।
ह.
                                मु. पूजा करी ।
        तं प्रभु।
                                मु. तुंहि जिन ।
ह.
        पुजा करो ।
ह.
                                मु. पूजा करुं।
    (५७) कलशगीत, क. १-
         थुणिओ रे प्रभू।
                           मु. थ्णिओ थ्णिओ रे प्रभू ।
ह.
         तीन भूवन जन मोहन मू. तीन भूवन
ह.
          तुं जिन ।
                                मनमोहन लोचन ।
    (५८) क. २-
     कवित् नित्।
                                मु. कवित करी।
ह.
    क. २ना तथा ३ नां उत्तराधींनो ह. मां व्यत्यय छे।
    एटले मु. प्रमाणे २मां छे ते ह. मां ३मां छे, अने मु. ३मां छे ते
   ह.मां २ मां छे. तेमां पाठभेद-
```

₹.

क. २-

ह. मिथ्यामत । मु. मिथ्यामति ।

क. ३-

ह. कर पसरी । मु. कर फरसी ।

ह. दुरित तिमिर । मु. कुमित तिमिर । (५९)क. ४-

ह. चितवि तस फल। मु. चितवित्त तस फल।

आमांनां केटलाक पाठान्तरो महत्त्वनां छे. दा.त. १. सातमी पूजानी ढाळनी प्रथम कडीमां प्रचलित पाठ 'चित्त धरे ए' भले बंधबेसतो जणाय, पण त्यां टबा प्रमाणे तथा ह.प्रतो प्रमाणे 'चीतर्यो ए' एवो पाठ वधु सार्थक बने छे. २. दशमी पुजामां प्रसिद्ध पाठ ''पाँच पीरोजडा'' एवो छे. तेनो अर्थ पण स्पष्ट छे के लाल हीरा अने तेमां फरता पांच पीरोजा विधिवत् जड्या छे.' ते सामे ह.प्र.नो पाठ आवो छे ''पाछि पीरोजडा''. अर्थात्, पाछि एटले पाछळ-पृष्ठभूमां पीरोजा रत्न (भूरो रंग), ते उपर लाल हीरा (प्रवाल वगेरे) विधिवत् जडेला छे. अहीं लाल-वादळी रंगोनो जे एक रंगमेळ (Contrast) रचाय छे. तेने किव शब्दचित्र द्वारा देखाडी रह्या छे. ३. १२मी पूजामां आवतुं पदगुच्छ "जिम मिले कनकपूरसे" – आ प्रसिद्ध पाठनो अर्थ 'कनक-सुवर्णना पूर साथे मळवुं' एवो ज सौ विचारे. अहीं ह.प्र.मां टबाकारे तेने स्फूट करी आप्यो छे : "जिम मिलइं कनक-परीसइं" अर्थात् 'जेम कनक-सुवर्णनो पुरुष (सुवर्ण-पुरुष) मळे ने हर्ष थाय तेवो हर्ष आ पूजामां छे ! आ अर्थ जोतां आ पाठ केटलो अर्थपूर्ण लागे ! ४. आ ज ढाळमां कडी २मां "भमर पडं कहावती उडतें" आवो मुद्रित पाठ छे. 'भ्रमर' साथे 'उडते' बेसी पण जाय. ह.प्र.नो पाठ आवो छे : "भ्रमर पइं कहावति जड तिं", अर्थात् 'ते जड एवी कुसुम-माला (गुंजारव करतां) भमराना मोंए जाणे कहावे छे के.' आ अर्थ केटलो काव्यमय अने सुसंगत बने छे ! ५. १३मी पुजामां ''शालि वरतंदुला'' पाठ जाणीतो छे. 'शालि' पण ने 'तंदुला'

पण ? जरा विचित्र लागे. ह.प्र. समाधान आम आपे छे : "सार वर तंदुला''. केटलो सुन्दर पाठ !. ६. १४मी पूजाना गीतनुं मुख-वाक्य ''आणीए धूपी धूमाली'' एवं गवाया करे छे. धूपधाणामां देवता जगे छे, तेमां धूप नाखतां ज धूमावली प्रसरी गई छे, हवे तेने 'आणवानी' क्यांथी ? केवी रीते ? जामतुं नथी. ह.प्र.नो पाठ मूंझवण दूर करी आपे छे: "अती ए धुपी धुमाली" - 'आ धूप भरी धूमावली केवी अतिशायी छे !' अहीं 'अती'मां लेखन के वाचनना दोषे 'अनी' थयं हशे: अर्थ संगति माटे लेखनदोष कल्पीने तेने 'आनी' तरीके स्वीकार्यं हशे; अने पछी दूर रहेला 'ए'ने 'आनी' साथे जोडी दई 'आनी(णी)ए' एवो मेळ पाड्यो हशे ! अद्भृत ! ७. १६मी पुजा नृत्य-नाट्यपुजा ज छे अने तेमां "अभिनय"नी हाजरी अनिवार्यपणे होय-होवी ज घटे, पण आपणे तेने ''अभिनव'' बनावीने चाल्या छीए. ८. सत्तरमी पुजामां पण बधां ज वाजित्रो ज्यारे प्रभुपुजामां लागी जतां होय त्यारे 'रणवाद्य' शा माटे अलिप्त रहे ? कविए तेनो निर्देश "सरणाई रणकालो'' एम आप्यो ज छे. पण आपणे 'रणकाल एटले रणतूर-रणवाद्य' ए पल्ले ना पड्युं, एटले आपणे कर्युं "रणकारो"! सरणाईनो पण रणकार होय के ? तो आम ह.प्र. द्वारा केटलीक सरस पाठशुद्धि थर्ड शके हे.

अा समग्र पूजा शुद्ध शास्त्रीय संगीतना रागोमां गुंथाई छे. मुद्रित वाचनामां निर्देशाएल तथा ह.प्र.मां नोंधेल रागो महदंशे समान छे. परन्तु केटलेक स्थाने तफावत पण जोवा मळे छे. जेमके- ढाल १, राग-देशाख. गीत १, अडाणो, मलार-केदारो मिश्रित. गीत २, तोडी के वैराडी. अहीं गीतने 'दुआलुं' ए नामे ओळखावेल छे, जेनो मर्म पकडातो नथी. गीत ३, राग-अधरस. गीत ४, टोडी के रामगिरी. ढाल ५, आसाउरी सादो. आ 'सादो' एटले शुं ? जाणकारो कहे छे के चालु गवातो ते सादो, अने कोमल रिषभ आशावरी ते विशेष. आ पृथक्करण अन्य रीते पण होई शके. गीत ६नो राग सबाब के शबाब ते ह. प्रमाणे 'सबाफ' छे. आ राग हाल चलणमां के जाणीतो नथी एवुं सांभळेलुं छे. ढाल ७, गोडी सादो. आमां पण एकाधिक प्रकारने

अप्रिल-२००७

लीधे 'सादो' शब्द मूकेल हशे. मुद्रित – प्रमाणे आ 'गोडी सिंधुओ' छे. ढाल ९, राग तो गोडी ज छे, पण आ ढाल 'वस्तु' छन्दमां छे, अने तेनो ताल 'जाफरताल' छे, एम ह. नोंधे छे. ढाल १०, 'धवलनी देशी'मां (पण) गवाय. धवल एटले 'धोळ', 'धवल-मंगल' ज समजीए. गीत १०, मु. मां गोडी, ह.मां तोडी, ते पण त्रिताली-त्रितालमां. ढाल ११, केदारो तथा गौडी. गीत १३, मु. प्रमाणे 'महावसंत', ह.मां 'वसंत' ज. ढाल १४, आना गोडी रागने ह.मां 'गोडो' के गौड' नामे नोंधेल छे. ढाल १५, 'त्रिवेणी गोडी'. मु. मां श्रीराग छे. ढाल १६, सोरठी ने मधुमादन. आ बीजो राग हाले प्रचारमां हशे? सांभळ्युं नथी. उपरोक्त 'त्रिवेणी' ने 'अधरस'नुं पण एम ज होय तेम लागे छे. ढाल १७मां राग तो 'सामेरी' छे ज, पण तेनी देशीनुं पण नाम अहीं मळे छे : 'त्रिपदी थोयनी देशी'. गीत १७, मु. प्रमाणे राग-गूर्जरी तो ह.मां 'कडखी'(कडखानी देशी). कलशगीतने 'धन्यासी-मिश्र' गणावेल छे.

- ५. टबामां केटलाक मुद्दा परत्वे नोंध वा छणावट मळे छे ते ध्यानार्ह लागवाथी अत्रे ते विषे नोंध आपवामां आवे छे :-
  - (१) प्रारम्भिक दूहात्मक गाथा ४ ना टबारूपे तथा १३ मी पूजानी पछी एम बे बखत आरती-मंगलदीवो क्यारे करवा, ते मुद्दे चर्चा छे. टबाकार एम सूचवे छे के धूप, अक्षत, नैवेद्य वगेरे रूप पूजा करवा पूर्वे ज आरती-मंगलदीवो करवां जोईए. ते पछी उक्त पूजाओ, ने छेल्ले ८ मंगल-आलेखन होय.

कोई मत एवो पण छे के पूजानी पहेलां स्नात्र करे त्यारे स्नात्र बाद तुर्त आरती-मंगलदीवो करी लेवाय, एटले अहीं १३मीं पूजारूपे ८ मंगल रचवानो बाध नथी रहेतो. अहीं तर्क एवो आपेल छे के नित्य पूजाने छेडे पण जो आरती व. थतां होय तो स्नात्र पछी तो खास करवां ज रहे; भले पछी मोटी पूजा थवानी होय.

आ बधुं जणाव्या पछी पण लेखक कशो आग्रह राखवानी ना पाडे छे, ने बहुश्रुतनी आज्ञा प्रमाणे तथा वीतरागनी भक्ति योग्य रीते थाय तेम वर्तवानुं सूचवीने पोतानी वात पूरी करे छे. स्नात्र पछी कलश, पछी आस्ती-दीवो, पछी ८ मंगलने स्थाने स्वस्तिक, अने नैवेद्यपूजाने स्थाने 'अक्षत-त्रिण पूजा' अर्थात् अक्षतनी ३ ढगलीओ (जेने वर्तमानमां ज्ञान-दर्शन-चारित्रनी ढगलीओ गणवामां आवे छे ते) करवानो निर्देश पण अहीं सांपडे छे; तेने ज नैवेद्यपूजा गणवानुं कहे छे.

आ पछी मूल विधिनो निर्देश देतां कहे छे के 'पण नैवेद्यपूजा तो ४ प्रकारना आहार (अशन-पान-खादिक-स्वादिम) थकी ज करवी जोईए ! आटलुं कहीने पण छेवटे 'कोई हठ नथी', 'यथाशक्ति करवुं' एमतो कही ज दे छे. टूंकमां, आ बेऊ नोंधो मननीय छे.

- (२) प्रथम ढाल (पूजा)ना टबामां 'न्हवण' (जल) पूजाना विधानमां श्रावकने आभूषणोथी अलङ्कृत थवानो निर्देश थयो छे; तेमांये हाथमां वेढ-वेंटी (वींटी) पहेरवानुं खास सूचन करेल छे. कलश कुल पांच सूचव्या छे, तेमां १ कलश दूधनो अने ४ शुद्ध (अबोट) जलना लेवानुं जणाव्युं छे. वर्तमान पूजापद्धितमां आथी विपरीत रीते ४ दूधना ने १ जलनो लेवामां आवे छे. आ प्रथाना औचित्य सामे प्रस्तुत निर्देश मार्गदर्शक बने तेम छे.
- (३) नव अंगे तिलक प्रभुने शा माटे ? तेनां तात्त्विक कारणोनी चर्चा द्वितीय पूजाना टबामां मळे छे : नव वाडनी विशुद्धि अर्थे, नव नियाणां टाळवा माटे नव अंगे पूजा छे. आ पूजा पण सृष्टिक्रमे करवानी छे, संहारक्रमे निह, तेनो संकेत पण ते ज ढालमां जडे छे.
- (४) बीजी पूजाना गीतमां केशर, चन्दन, घनसार (बरास)-ए त्रण वानांनुं मिश्रण करी पूजा करवानी वात करतां कह्युं के आ ३ नो घोल करवानुं रहस्य ए छे के आ ३मां वर्ण, गंध, शीतलता-ए ३ गुणो होवाथी ते ३नो घोल लेवानो छे. केसरनो वर्ण (रंग), चन्दननो गन्ध (सुवास) अने घनसारमां ठंडक - ए त्रणेनी अहीं युति थाय छे. सरस वात थई छे आ.
- (५) तो एक विशिष्ट वात आ ज गीतमां ए पण थई छे के, पूज्य एवा

जिनिबम्बने तो ९ अंगे तिलक करवानां ज, परन्तु ते करतां अगाऊ, पूजिक पोताना अंग पर पण ४ तिलक करवानां छे, ते आ प्रमाणे – "अहो भालथल, कंठ, रिदय, उदिर च्यार, सयं पूजाकार" अर्थात् पूजा करनारे, पोताना ललाटे – भगवाननी आज्ञा माथे चडाववानी भावना साथे १, कंठे – प्रभुना गुण गावानी भावनापूर्वक २, हृदये – प्रभुना गुणोना चिन्तननी भावनाथी ३, उदरे – प्रभुगुणगाननी अतृप्ति : हजी ये पेट भरायुं नथी – एवा भाव साथे ४, आम ४ तिलक करवानां छे; ते माटेनो द्रव कपूर, अगरु, कस्तूरी, चन्दन ए ४ थकी नीपजाववानो छे

(६) कुमारपाले पांच कोडीना फूले पूजा कर्यानी वार्ता जाणीती छे. अहीं १२मी पूजा (गीत)मां सात कोडीनां १८ फूल वडे पूजा करवाथी १८ देशनो राजा थवानी वात जोवा मळे छे.

तो तेरमी पूजामां 'नंदावर्तक' नो परिचय 'नवखूणालो साथीओ' एवो आपेल छे.

आवी बीजी पण अनेक वातो, विषयो, जिज्ञासुने आमांथी जडी शके. अहीं तो मात्र दिशानिर्देश कर्यों छे.



बे हस्तप्रतोने आधारे साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजीए आ वाचना यथामित तैयार करी छे; बन्नेना पाठोनुं संकलन तेमणे ज कर्युं छे. पाठान्तरो पण घणी चीवटपूर्वक तेमणे ज लीधां-नोंध्या छे. आम छतां तेमां कोई क्षिति जणाय तो सुधारी लेवानो अनुरोध छे. तेमने आ श्रमसाध्य काम कुशलतापूर्वक करवा माटे धन्यवाद घटे छे.

आ बन्ने प्रतोनी झेरोक्स आपवा माटे ते ते ज्ञानभण्डारोना कार्यवाहकोनो आभार मानवो ज जोईए.

#### थोडाक शब्दो

चूलातला (?) (पूजाप्रारम्भनी त्रीजी गाथामां) ढोणुं ढौंकन (अर्पण, धरवा) योग्य पदार्थ-(फल-नैवेद्यादि) उपायलो 'ऊचाट'ना अर्थमां, पर्याय तरीके प्रयुक्त

मसमसाट मधमघाट महमहाट मधमघाट चांपा चंपा टोडर फूल जास्यं जासुद घंमंड आनन्द घरेणां ग्रहणा-गरहणा आ बन्ने शब्दो पूजानी ते पंक्तिना वालणी आवर्तन (गाती वेळा)नो संकेत करे छे. वलण राजेवा राजा जेवां शोभाव स्वभाव धूपजातिनो कोई प्रकार मावरदी गीयते (गवाय) (?) गीयतइं आस्ता आस्था गोहिरें गंभीर महमूर (?) (८मी पूजाना गीतमां) गोप गोफ-गुम्फ (फूलना) बीजी पूजानी क. १ना टबामां "कृष्णवाडीनुं खाटी कुंकूंशब्द कष्णो छइं ।'' एवं वाक्य छे, जे समजातुं नथी.

# उ. श्रीसकलचन्द्रगणिकृत सत्तरभेदी पूजा । सस्तबक ।

सं. साध्वी दीप्तिप्रज्ञाश्री

श्री वीर्तरागाय नम: ॥ दूहा ।

अरिहंत मुखकजवासिनी भगवती भारती देवि । समरी पूजाविधि भणुं तुं मुझ मुखकज सेवि ॥१॥

हवें स्नात्र कर्या पछी विशेषें भक्तिनें हेतें सत्तरभेद, २१ भेद, १०८ भेद इत्यादिक बहुविध पूजा कही छैं। पणि तेहमां सतरभेद पूजानो पाठ कहीइं छें।

# दूहा-दोधक छंद ।

श्री जिनेश्वरनां मुखकज कहतां मुखकमलनइं विषइं वासिनी क. वसनारी-रहणहारी-रहे एहवी, कुंण छइं ? भगवती क. ज्ञांनवती एहवी भारती-वाणी रूप जे देवी एतलें श्रुतदेवतां - ब्रह्मांणी शक्ति रूप सरस्वती नाम कहीइं छइं ॥ तेह शक्तिनुं स्मरण करीनें पूजानो विधि कहुं छुं । एतला ज माटें सरस्वती ! तुह्मे माहारा मुखरूप कमले सेवो-तिहां वसो । किहांएक 'मुखपदसेवी' पाठ छें । तिहां मुखरूप पद-स्थांनक कहीइं छइं ॥१॥

> न्हवण १ विलेवण २ अंगंमी चक्खुंजुअलं च ३ वासपूआए ४ । पुष्पारोहणं ५ मालारोहणं ६ तह वण्णयारुहणं ७ ॥२॥

न्हवण ते स्नान जलनुं १ । चंदनादिकनुं विलेपन करवुं भगवंतनइं २ । अंगनें विषइं विलेपन छें । ३. चक्षुयुगलनी त्रीजी पूजा तें आंखनुं ग्रहणुं ते चक्षु करावी चक्षूयुगल । ४. वासनी पूजा चोथी, वास तें चंदनें केसरनुं चूरण ते वास । छूटा फूलनी-विविध जातीनां कुसुमनुं आरोहण ते चढावुं, पंचवर्णे आगें थवी चढाववां पांच फूल ५ । विविध प्रकारनां गुंथ्या फूलनी माला चढाववी ते छठ्ठी पूजा ६ । तिम वली वर्णक - पंचवरण फूलनी रचना - श्रीवितरागने आंगी प्रमुखनुं रचवउं, मूगट कुंडल फूलनां [७] ।

१. गुरुभ्यो नमः-ब. । २. चक्खूजूअलं - ब. । ३. पुफारोहणं - ब. । ४. सुखड - ब. ।

40 अनुसन्धान ३९

चुन्नारोहणं ८ जिणपुंगवाणं आहरणारोहणं चेव ९ ।
पुंप्फिगिह १० पुष्पपगरो ११ आँरित्तय १२ मंगलपईवो १३ ॥३॥
चूया-घनसारादिक सुगंध चूर्णनुं आरोपवउं-चूलातला भगवंतनें सुगंध
चढावीइं तेनी पूजा कहीइं छइं । जिन कहेतां सामान्य केवली, तेहनां पुंगव
कहतां वडेरा, तेहोनइं पूजनीक छइं भगवंत [८] । वली इंहां धजानु पणि
आरोहण जिनेन्द्रोंने जिननें धजा चढावीइं, वस्त्रनी पूजा । ए नवमी पूजा
आभरणनुं आरोपण थापवुं आभरण पेरावीने ९ । जिनेस्वरनें फूलनुं घर रचवुं,
फुलघर कीजइं १० । पंचवरणी घरकाजें घर । फूलनो पगर भरवो ।
पंचवरण कुसुमनो मेघ वरसाववो ११ । जिन आगलें अष्टमंगलीक आलेखन
आलेखीइं । तथा आरती ऊतारवी । त्यार पछी-आरती ऊतारीनइं जिननें
आगलें मंगल दीपक इत्यादिक किरइं ए १३ मी पूजा ॥३॥

दीवो धूवुक्खेवो नेर्वंज्जं सुहफलाण ढोयणया १४ । गीयं १५ नट्टं १६ वज्जं १७ पूया-भेया इमे सतर ॥४॥

मंगल दीपक करिइ । धूपघटी धूप उखेववी । नैवेद्य असनांदिकनुं, अबोट लापसी, खीर, वडां इत्यादिकनुं, भला-शुभ फल श्रीफलादिकनुं ढोणुं ढोवुं, श्री जिनेश्वरनइं मुख आगलइं ढोवा ए पूजा १४ मी । गीत गावांनी १५ मी पूजा । नाटिक करवांनी सोलमी पूजा १६ । सकल-सघलां वाजित्रना शब्द पूरवानी-वजाडवानी पूजा १७ मी । ए सतरभेद पूजांनां जांणवा । अनइं केतलाएक सतरमी पूजामां धूप, आरती, मंगल दीवों कहे छइं, पिण नैवेद्य १४ मी पूजामां कह्युं तिवारे ते पहेलां आरती-मंगलदीवो पूर्वोक्त । ते माटे बहुश्रुत वचन प्रमांण । ए पूजा सर्व श्रावकनी करणी छें ॥

राग - देशाख । ढाल - रत्नमालानी ।

प्रथम पूरविदिश कृत शुचि स्त्रांनको, दंतमुखशुद्धिको धौतराजी । कनकमणि मंडितो विशदगंधोदिक, भरीय मणि कनकनी कलस राजी ॥१॥

पहिलां ब्रह्ममुहुर्त्तइं जागीनें सर्व करणी श्रावकदिनकृत्य तथा श्राद्धविधि

५. आभरणारोहणं चेव ९ ब. । ६. पुष्फगेहं १० पुष्फपगरो १९ ब. । ७. आरतिअ १२ मंगलो पईवो १३ ब. । ८. भार - ब. । ९. दीवो - ब. । १०. नेवेज्जं० - ब. ।

अंप्रिल-२००७ 41

प्रमुख ग्रंथानुंसारइ यथोक्त सर्वविध साचवी । प्रथम पूरव दीशै संमुखें करी सरीरनो सर्व मेंल टालवानें द्रव्यस्नांन करवुं, अनै भावमल टालवानें वितराग पूजा - विविध लक्षण शुभाशय छैं एहवो । मुख <sup>११</sup>शुद्ध करीनइं, श्रीवितरागनी पूजा सारु दंत-मुखादि पवीत्र करीनें मुखे आठपडो मूखकोश बांधीनें निर्मल धोतीक परिधान करवी, धोतीइंआ पेंहरी । एहवो थईनइं एहवी विधें पूजा करवी । कनक मणीनैं-सुवर्णरत्नतणें मंडित-विशेष भूषणे, तें पहेरीनें वेढ-वेंटी पेहरवी । ग्रहणे भूषीत हुंतो निर्मल सुगंध पांणीइं करी शरीर नवरावीइं। भर्या छइं मणि-कनकादिकना कलशानी श्रेणइं रहीनइं कलश ४ अबोट पाणीइं भर्या, कलश १ दूधनो एवं नंग ५ कलशा जेणइं एहवो हुंतो ॥१॥

जिनपभवनं गतो भगवदालोकने, नमित तं प्रथमतो मार्ज्जतीशं । दिवि यथेंद्राद्रिका तीर्थ-गंधोदिकं स्त्रपयित श्रावको तिम जिनेशं ॥२॥

जिनप क. जिनेश्वरना श्रीवितरागना, भवनं क. प्रसादनें प्रतें - विषें, गतो क. पोहतो थको, भगवदालोकनें क. भगवंत प्रति देखीनइं जिनने देखीनें ''निसी'' एवो पाठ कहीनइं, प्रथम-पहिलां नमइं-नमस्कार करइं-प्रणाम करइं। ते भगवंत प्रतइं प्रणमीनें पछइं पूंजणीइं पूंजइं -वितरागनुं सिरर पूंजें। जिम इंद्र ईश कहतां स्वामीना बिम्ब प्रतइं दिवि क. देवलोकनें विषइ पूजे छइं, तिम भाव राखवा। यथा क. इंद्रादिकें देवताइं स्वामी ऊपरइं तीर्थ, पदमद्रह-गंगादीकनां सुगंध पाणीइं करी न्हवरावइं, तिम स्नपयित कहतां सुगंध पाणीइं न्हवरावइं श्रावक-भव्य प्राणी, जिनेश क. जिनेश्वर प्रतइं पूजा करतां ॥२॥

राग-अडाणो । मलार-केदारो मिश्रित ।

हवें एहवइं एहज भावनुं गीत कहे छइं। अडाणें रागइं तथा मल्हार रागें केदारामिश्रित रागें कहे छइं।

भिव तुम्हे देखो अब तुह्ये देखो, सतर भेद जिन भगती । अंग उपांग कही जिन गणधरि, कुगति हैर्रेड़ दिइं मुगती ॥१॥ तुह्ये०।

अरे भवि क० भव्य जीवो-मुक्तिगमन योग्य जांणी प्राणीओ ! हवणां तुम्हे निरखो-जूओ । सतर भेदइ जिनेश्वरनी भक्ति-पूजानी विधि विविध

११. सुगंध ब.। १२. हरि ब.।

१७ प्रकारनी रचना छइं अंग आचारांगादिक, उपांग रायपसेणीप्रमुखमांहैं, जिन भगवानइं तथा गणधरइं कही । ए श्रीजिनपूजा केहवी छैं ? नरकादिक कुगतिनइं हरइ, अनें मुगतिनइं आपइ । एहवी पूजा तुह्ये निरखो ॥१॥ शृचि तनु धोति धरी गंधोदिकं, भैगी (भरीय) मणिनी कलसाली । जिन दीठइ नमी पूजी पखाली, दिइ निज पातिक गाली ॥२॥ तुह्ये० ।

तुम्हे पूजाना फल जूओ । शरीर शुचि पवित्र निर्मल करीनें, उज्ज्वल निर्मल धोतीयां पहिरी, गंधोदिकं क॰ सुगंध पाणीइं भरी, मिण-कनकादिकनी कलशनी श्रेणिइं करीनें । जेणइं श्री जिन-जिनेश्वरनें देखीनइं नमी-प्रणमीनइं, मोरनें (?) पूंजणीइं पूंजीने, पाणीइं न्हवण करीनइं-पखालीनइं, एहवो थको पूजक-पूजनारो पोताना पातिक गालइं दिइं-मोक्षनां सुख आपइं एहवी पूजा।।२।।

समिकत शुद्धि करी दुखहरणी, विस्ताविस्ती करणी । योगींसँरइं पिंग ध्यानें समरी, भवसमुद्रकी तरणी ॥३॥ तुम्हे० ॥

वली पूजा केहवी छइं ? समिकतनइं शुद्धिनी करणहारी । समिकिति नरगइं न जाय तें माटें शुद्धनी करनारी । दुर्गितिनी-दुखनी चुरणहारी । विस्ताविस्ती कहतां जे श्रावक तेहनी एह करणी छइं । योगीश्वरइं पणि ए पूजा पिंडस्थ-पदस्थादि ध्यांनमांहि संभरी छइ । पूजा संसार समुद्रनी तारणहारी-भवसमुद्रमांहि तरवानइं नावा सरीखी छै ते पूजा । वली ए पूजा केहवी छे ? ॥३॥

देखावती नहीं कबही वेतरणी, कुमितकुं रवि भरणी । सकल मुनीसरकुं शुभ लहरी, शिवमंदिर नीसरणी ॥ भवि तुम्हे० ॥४॥

ए सतरभेदी पूजा कहेवी छें ? ए पूजा किवारै वैतरणी नदी नरकमांहे छइं ते देखावइं नही । तेनुं दूख देखावें नही । वली कुमितनइं दीटइं थिकै रिव-भरणीना योगनी पिर थाइं । एतलें पूजा थकी कुमितनो योग-जोर जाइं, ''भरणी भास्करे देयात्'' इति वचनात् । सकल-समस्त मुनीश्वरनइं, तथा ग्रंथकर्तानुं नाम उ. श्री सकलचंद जणाव्युं । जें ए सकल

१३. भरीय मणी कनककी कलस आली । ब. । १४. योगीसर पिण० -ब.।

शुभ योगनी लीलालहरि छइ। वली ए पूजा कहेवी ? शिवमंदिरनी-मोक्षमंदिरे जावा नीसरणी छइं ॥४॥

> अहो भव्य प्रांणी, तूमे जिननें पूजो । एतलै प्रथम पूजा न्हवणनी थई । इहां भगवंतनें नमण करावइं ॥१॥ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥१॥



राग-रामगिरी । ढाल-जयमालानी ।

हवइं बीजी पूजा कहे छें रामगिरि रागें पूजा छे तें कहीश । ढाल जयमालानी देशीयइं कहे छइं ।

बावना चंदन सरस गोसीसमां, घसीय घनसारस्युं कुंकुमा ए । कनकमणि भाजनां सुरभिरस पूरियां, तिलक नव प्रभु करो अंगमा ए ॥१॥

मलयाचलनुं बावनाचंदन वली रसइं सिहत गोशीर्षचंदनमांहिं घसीइं। वली घसीनइं घनसार क. बरास-कपूर एकठो करीनें कुंकुम कहतां केसर साथइं कृष्णवाडीनुं खाटी कुंकूंशब्द कष्णो छइं। वली स्यूं सोनानां कचोला, रूपानां प्याला, तें (ने) कनकमणिनां भाजनमां चंदने भर्यूं छइं। ते पणि सुगंध द्रव्यनइं रसइं एहवां भाजनमांहिथी चंदन लेईनें भली व्यु(यु)गितं तिलक नव प्रभुना अंगनें विषइं करी, नव वाडी विशुद्धि नव ठामें विसुद्ध सुशीलना, तथा नव अशुभ निदान टालवानी भावनाइ। ते नव तिलक कुण कुण ठामइं ते कहइं छइं।

चरण १ जानु २ कर ३ अंस ४ सिर ५ भालि ६ गलि ७, कंठि हृदि ८ उदरे ९ जिननें दीजीइं ए । देवना देवनुं गात्र विलेपतां, हरि प्रभो दुस्ति कही लीजीइ ए ॥२॥

बे अंगूठा चरणना पगनो डाबो जमणो १। ढींचण बे पगना डाबुं जमणुं २ । वे हाथ, डाबूं जमणुं ३ । अंसे बे खभा-डाबो जिमणो ४ । सिर तेह समें द्वार तिलक ५ । भाल ते निलाडें तिलक करें ६ । गलि, कंठि ते गलुं तिलक करे ७ । हृदि ते हीउं, हिइं तिलक करे ८ । उदर ते पेटइं तिलक करइं ९ । इम सृष्ट्रइं तथा समकालें एहवां नव तिलक कीजें, जिननें नव अंग । तें ए देवनो देव ते जे वितराग तेहनो गात्र ते शरीरं विलेपतां— पूजतां पछइं समग्र लेपीइं तिलक करे ए भावना भावीइं प्रभो ! स्वामी ! तुद्दो सदा शीतल—सांत सुद्ध सहजभावइ छो, पणि हैं अनादि कालनो विषय कोध कषायें थाइं तप्त हैं छुं । दुरित कर्म-रजइ गुडित-जूत छुं । माटें तुमें दूरीत—पाप, प्रभो ! स्वामी ! यलों । ते प्रभुनी पूजा थकी उपसांत थाउं।॥२॥

हवें बीजी पूजानुं गीत ।

दुआलुं । राग तोडी अथवा वैराडी ।

राग तोडी तथा वैराडीइं रागमां स्तवनां कहइ छैं।

तिलक करो प्रभु नव अंगइं, कुंकुमचंदन घसी शुचि घनसार । प्रभु पिंग जानु कर, अंस सिर भाल गिल, कंठि हृदि उदिंर सार, अहो भाल थल कंठ रिदय उदिर च्यार, सय पूजाकार ॥१॥ तिलक०

तिलक करो प्रभु श्रीवीतरागनइं नव अंगनइं विषइ। पूर्वे कह्यी ते जाणवा स्यें करीनइं ? कुंकुम कहतां केशर-चंदन, ते आज सुकिंड साथइं शुचि घसी अंबर क० बरास कपूरमांहे भेलवीइं बावना चंदनस्यूं। एतलें ए घोलमां वर्ण, गंध नें शीतलता ए त्रिण्य त्रण्य भावें करीनें हुंता, तेहनो ए भाव केसर सुकिंड बरास मेल्यि थाई। प्रभुनइं चरणें १, जानुंइं २, हाथइं ३, अंश क. खभइ ४, शिर क. मस्तकें ५, भाल ते निलाड ६, गलकंठि ते गिल ७, हृदि क० हीयें ८, उदिर ते पेट ९, एहवा नव अंगइं सार-प्रधान तिलक कीजइं। अने इहां पूजानो कार-करनार स्वयें वीतराग पूज्या पेलां च्यार तिलक करइं ते किहां ? प्रथम भालस्थलें, कपोले, आज्ञा धारवानी भावनाइं ते १। कंठे प्रभु गुणस्तवनां घोषवानी भावनाइं २। हृदये प्रभुगुणचिंतन धारवारूपइं तें भावें ३। उदरइं प्रभु गुणनी अतृप्तिपणें ४। एवं च्यार तिलक करइ । कपूर, अगुरु, कस्तूरि, चंदन द्रव्यें मिश्रित विलेपने। ते यक्षकद्र्दम कहीइं ॥१॥

१५. अमे- ब. । १६. तप्ती छीइं-ब. ।

करीय यक्षकद्र्म अगर चूओ मर्द्न, लेपो मेरे जगगुरु गात । हरि जिम मेरु परि ऋषभकी पूजा करिं,

देखावति कौतिक उर उर भाति ॥२॥ तिलक० ॥

ते यक्षकद्र्म करीनइं अथवा ते यक्षकद्रम ते गोसीसचंदन, रक्तचंदन, रतांजणी प्रमुखनइ कहे छैं। तथा अगर चूओ भेलो मर्दीनइं मर्द्रन करीनइं, तेणें घोली करी। ते घोलनुं कचोलुं भरीनें माहरो स्वामी-मारो जगगुरु-जगतगुरु भगवाननुं गात्र ते शरीर लेपों पूजो, जिननइं एतलें विलेपन करो। ते कहनी परिं? जिम हरि क० इंद्र चोसिट्ट मेरु उपरे-मेरु पर्वतने शिखरें ऋषभदेवनी पूजा करइं, तें भाव आणीनइं। देखाडइ नवा कौतिक, भिक्तरचनानी विचित्रता नवनवी भांति विविध प्रकारनी रचना उर उर भांति-रचनाइं करीनइं॥२॥

हम तुह्य तनुं लींप्यो तो ही भाव नही छीप्यो,

देखो प्रभु विलेपन की वात । हीरो हम ताप । एँ दूजी पूजा विलेपनकी,

और हिर दुस्तिकुं, शुचि कीनो गात ॥३॥ तिलक०

हे प्रभो ! अह्ये तुम्हारुं तनुं क. शरीर चंदनादिकनें घोलें लीप्यो, ते स्यूं नवें अंगइं तिलक कर्युं । अने वली तो ही प्रभु भाव नथी छीप्यो कहतां पूर्ण नथी थयो । उल्लास वधतो छइं तेह शो भाव थयो ? हे स्वांमी! अमें तुमें उल्लाश थइनें पूजो तें विलेपननी वात दृष्टान्त देखो प्रभु, ते जोओ स्वामिन् ! हरी क० टालो भवनां जे पातिक ते कर्म आठ तेनां जे पातिक, हम क० अम्हारो भवभवना कर्मनौ ताप हरो । तें बीजी पूजा विलेपननी । बीजुं वली भगवंतनुं हृदयस्थल लींपतां भवभवनां पातिक दुरितनइं हिर क० टालो, एम बीजी पूजाइं विलेपननें कहीनें आत्मास्युं शरीर मिलें शुचि-पवित्र कीधां। एवी रीतें वीतराग पूजें ते सुलभबोधी थाइं । ए गीत कह्युं ॥३॥ तिलक०॥

#### इति बीजी पूजा विलेपननी ॥२॥

१७. ए दुजी पूजा विलेपन्नकी अघहरि ताकुं शुचि कीनो गात ॥३॥ ब.

एतलइं ए बीजी पूजा बावनाचंदनइं विलेपननी थइ । बावनाचंदन भावनाइं थइनइं पूजो तें विलेपननी वात दृष्टान्त ॥२॥



हवइं त्रीजी पूजा चक्षु युगलनी कहे छें :

राग-रामगिरी ॥

तिमिर संकोचनां खणना लोचनां, इम कही जिन मुखि भविक थापो । केवलज्ञान नें केवलदर्शन, लोचन दोय ए देव आपो ॥१॥

तिमिर क० अज्ञाननइं संकोचकारी क० टालणहार एहवां रत्नजडित लोचन प्रभूनां छइं, इंम कहीनइं प्रभुमुखइं अरं भिवक प्राणीओ ! भव्य जीवो ! चक्षुयुगल जडावनां थापो । ते देखीनइं तिहां सी भावना करइ ? प्रभु जिम तुह्मारइं अक्षय केवलज्ञांन १, अक्षय केवलदर्शन २, रूप ए बे लोचने करी सिहत एहवो तूं छइं, तिम ते लोचन अहमनइ पणि हे देव ! आपों। ए भावना ॥१॥

अथवा वली पाठांतरि त्रीजी पूजामां अंगलूणां २, तेहनी पूजा कहीं छइं :

अहव पाठंतिर त्रीजीय पूजामां, भुवन विरोचन जिनप आगई । देव चीवर समु वस्त्र युग पूजतां, सकल सुख स्वामिनी लील मागई ॥२॥

त्रिभुवननइं विषइ-विरोचन कहतां सूर्य समान एहवा जिनप आगें कहतां जिनेश्वर आगइं-आगलें देवचीवर कहतां देवताना वस्त्रयुगलने वे वस्त्रनी पूजा करतां ए भावना भावइ: सकल सुख जे मोक्षनां तेनी प्रभुतानी जे लीला, जन्म-जरा वीगर तेनी लीला, स्वांमी पासइं मांगइं छइं जाणीइं।

गीतं । राग-अधरस ॥

रयण नयण करी दोय माणिक लेके मेरे जिनमुखइं दीजइं । केवलज्ञान नें केवलदरसन हमु परि कृपा करी प्रसाद कीजैं ॥१॥

ए त्रीजी पूजानुं अधरस रागें कहइं छइं गीत प्रतइं । रयण क० रत्नजडित नयण करी एतलइं चक्षुयुगल, एहवां बें मांणिक ते लेइनइं मेरे अप्रिल-२००७ 47

कहतां माहरा जिननें स्वामीनइं मुखइं दीजइं। ते ना(ने)त्र किहां ? केवलज्ञांन ए पेहलुं नेत्र अनइं बीजुं केवलदर्शन। ए बेऊं नेत्र, तेणइं हमुपरि क० अह्म ऊपरि कृपा करीनें स्वामी! तुमे ते बें नेत्र प्रसाद करीइं एतलें आपीइं मुझने ज्ञांन-दीवो ॥१॥

देवदूष्य वस्त्र सम वस्त्र जोडि लेकें, हवइं त्रीजी पूजा कीजइं । उपसम रस भरि नंयन कटोरिंड, देखि देखि जिन मुख रस पीजइं ॥२॥ रय० ।

देवदूष्य वस्त्र सम क० देवदूष्य वस्त्र सरीखा बे वस्त्रनी<sup>१८</sup> जोडली करीनइं स्वांमीनी त्रिजी पूजा कीजें। तां थकां उपसमतारसभर्या स्वांमी सामुं जोतां जोतां जिनरूपसुं जिनने अंग लुहो ए वस्त्रयुगल ते ए सुभ भावें करीनें पूजा कर। उपशम क. समतारसें भरी <sup>१</sup>नेयनरूप कटोरी-कचोली तिणें करीनें निरखें। अमृतलो ए पीजें। जोइ जोइ जिनमुखरूप सुधारस पीजीइं॥२॥

एतलइं ए भाव आपणें त्रीजी पूजा चक्षुयुगलनी तथा देवदूष्य वस्त्र बेनी तें अंगलूहणां २, तेनी पूजा ॥३॥

### इति त्रीजी पूजा चक्षूयुगलनी ॥

हवें चोथी पूजा वासनी । राग-रामगिरीइं कहे छइं ।

#### राग-रामगिरी

नंदनवनतणां बावनाचंदनां वासविधि चूरणां विरैचियां ए । जाइ मंदारस्युं शुद्ध घनसारस्युं सुरिभ सम कुसुमस्युं चिरचिया ए ॥१॥

नंदनवन, ते मांहि ऊपनां एहवा बावनाचंदन, तेहनां काष्ट आंणीने तेहनां चूरण कीधा ते वास । तें चूर्णादिकइं करी, विधियुक्त नीपजाव्या एहवा उत्तम चूर्णनो जे वास तेणें, पूज्या । जाति-जायनां फूल, मंदार ते कल्पवृक्षनुं फूल, शुद्ध-निर्मल घनसा[र]ते बरास साथें भेलो कीधो, एहवां जे फूल, तेणें सुरिभ-सुगंध कुसुमने संघातइं विरचित-कीधो जे वास-परिमल वासना करतो, तेणें जिननें पूज्या ॥१॥

१८. वस्त्र जोडीर्ने- ब. । १९. <mark>भवन -- ब. । २०. चिरचिआ ए,</mark> ब. ।

चोथीय पूजमां गंध-वासइं करी जे जिन सुरपित अरचीआ ए । प्रभुतणइं अंगि मनरंगि भरि पूजता आज ऊचाट सिव खरचीया ए ॥२॥

चोथी पूजामां एहवा सुगंध वासइं करी वासपूजा करतां थिकां सुगंध-परिमल देवी, नीमां (?) वस्तुइं । जे जिननइं सुरपित क॰ जे जिननें इंद्रइं चोसिट्ठं अरच्या-पूज्या छें श्रीसुमेरु पर्वत पंडुशिलाइं, तिणि पिर प्रभुनइं अंगि मननें बहु प्रमोदपणें करी – घणो प्रमोद आंणीनइं, मनरंगे भरी पूजतां थकां ए भाव आंणइं:आज सघलाइं कर्म्मना ऊचाट – उपायलो (?), वासपूजा करतां ते सर्व खरच्यां ने नांख्या-खपाव्यां । जे माटइं वासपूजाथी धर्मनी वासना निर्मल थइ तिणें करी आर्त्तध्यानादिक विकल्प टलें ॥२॥

हवें ए पूजानुं गीत कहै छै

गीतं- राग टौडीं-रामगिरी ॥

सुणो जिनराज तव भैंहनं, इंद्रादिक परि किम हम होवत तो भी तुद्ध सब सहनं ॥१॥ सुणो० ॥

हे जिनराज ! ताहरुं महन कहतां ताहरी पूजा ते भक्तिभाव, ताहरों मिहमा, मनुष्य थकां ते इंद्रादिकनी पिरं हम कहतां अहमथी किम होवत क॰ किम थाइं- किम होइं ? जे भणी इंद्रादिकनें तो दिव्य शिंक छें, अचिंत्यनीय छइं । तो हि पिंग<sup>3</sup> तुह्मो सर्व सहो छौ । रंक-राजाइं समानदृष्टि-तुल्य छौ । ते माटें सर्व सहज्यौ ॥१॥

सतरभेदइं द्रुपद रायको कुमरी पूजित अंगि । जिम सूर्याभसुरादिक प्रभुनइं पूजित तिम भिव मनरंगइं ॥२॥ सुणो०॥

सुणो जिनराज ! मारी मेंनत । सतरभेदइं पूज्या<sup>२४</sup> द्रुपदी-द्रुपदरायनी कुँयरी जिम पूजइं ते कही छें । तेणें सतरभेदी पूजाइं पूज्या ज्ञाताधर्मकथांग, तेहनें विषइं । वली जिम सूर्याभौदिक देवता प्रभुनइं पूजइं छइं, जिम रायपसेणी सूत्रमांहे कह्युं छइं, तिम भैंव्य प्राणिइं मनरंगि कहतां मननें उछरंगे-मन उच्छाहइं करीनइं भूँजइं छइ ॥२॥

२१. तोडी-ब । २२. महत्रं-ब । २३. पिण तुम्हो-ब. । २४. पूजा-ब. । २५. बेटी-ब. । २६. सूस्आभदेवता-ब. । २७. भवि प्राणि-ब. । २८. पूजवा-ब.।

# विविध सुगंधित चूरणवासं मोचित अंग ऊवंगि । चउथी पूजा करित मिन जानित मेलावितआं सुखसंगइ ॥३॥ सुणो०॥

विविध क० अनेक प्रैकारना सुगंध छै जेहनें विषइं एहवा चूरणना वास प्रतइं वासना करहं । मोचित क० मूके छइ प्रभुने अंगै ते मस्तकादिके, उपांग ते करादिकने विषें, अंग-उपांगमांहि पिण कह्यूं छइं । चोथीइं पूजा वास पूजां करतां भविक-भव्यजन मनमां इंम जाणीइं जे श्रीवितरागनें मेलावितआं कहतां मेलावो स्वर्गनो होइं, मेलाववानुं हेतु ए चूर्ण छइं । एहवी वासपूजानो भाव भावइं । स्या प्रतिं ? सुखना संग प्रतइं पामइं ॥३॥

> इति श्री चौथीय सुंगंध-वास पूजा ॥४॥ हवें पांचमी फूलनी पूजा सादइ आसाउरी रागें कैहइ छइ । राग - आसाउरी सादो ॥

मोगर लाल गुलाल मालती चंपक केतकी वेली । कुंद प्रियंगु नागवर जाती बोलिसरी शुचि मेली ॥१॥

भैमोगरानां फूल धोला, रक्त अशोकादिकनां फूल रातें रंगे, गुलाबना फूल, वली मालतीनां फूल, वली पीला फूल, चंपकैना फूल, केतकीनां फूल, वेलिपुष्य-जातिनां वेलना फूल, धोलां कुंद क० मचकुंद धोलें रंगइं जातिना फूल, प्रियंगु-नीलो, अंग तें वृक्षविशेषनां वर-प्रधान जातिनां फूलनां, वृक्षनां फूल, जांबुनां फूल, तथा बोलिसरीनां फूल, ते सुचि-पवित्र, इत्यादिक फूलनी जाति मेलीनें-भेला करीनइं ॥१॥

# भूमंडल जल मोकैलइं फूलइं ते पणि शुद्ध अखंडइं । जिन पद पंकज जिउं हरि पूजइं तिण परिं तिउं भवि मंडइं ॥२॥ मो०।

भूमंडल क० पृथवीनां ऊपनां फूल तथा जलनां ऊपनां फूल, पद्मद्रहादिक । ते सर्व एकठां घणां फूल, मोकला क० ते सर्व जातिनां घणां, ते वली शुद्ध वर्ण-गंध-रस-फरस सुठाममां ऊपनां, तेणें सहित सुध-खंडित नहीं, कीडें करड्या नहीं, भूंइ पड्या निह, मिलन दुगंछनीय नहीं, एहवे फूलैं २९. भांतिना सुगंधी छें ब. । ३०. कहीइं छइं - ब । ३१. मोगर ब. । ३२. चंपाना ब. । ३३. मोकले ब. ।

49

श्रीवितरागनी भक्ति करीनें जिम जिनचरणकमल हरि क० चोसिट्ठ इंद्रइं पूज्या-अरच्या छे, ते भाव आंणी तेणी परइं हे भिवक ! तूं पिण इम करों। भव्यलोक श्रीजिनपदपंकजनें पूजे छइं तेहवो भाव निर्मल आंणीनइं॥ मोगर०॥२॥ गीत पूर्ण छइं॥

एतलें जिनचरणें कुसुम थापी हवें फूलनी पांचमी पूजानुं गीत कहस्यूं।

गीतं॰ <sup>३४</sup>नृत्यकी - आसाउरी - नट्टसिरी<sup>३५</sup> ॥

पारग तेरे पद पंकैंजोपरि विविध कुसुम सोहइं, हारे विवि० । ओरैंनकुं आक धतूरे तुह्म सम निव कोहे.... ॥१॥ पारग० ॥

हे पारग ! क. पारना पोहचनारि एतले भविजननें अपार संसार तेनो पार पमाडवें समर्थ ते माटें पारग ! तारा चरणें, हे वीतराग ! ताहरा चरण कमल ऊपरि विविध जातिँनां उत्तम वृक्षनां कुसुम फूल तें ता[रा] चरणें शोभे छइं । वली पाछली रागनी वलण केहवी । ओर-बीजा जे देव रागी स्त्रीयादिकना मोह्यां, दोसी देवनें आकनां धतुरनां कणयरादिकनां, बीलीनां पत्र, वेली प्रमूख फूल शोभइं । जे माटिं श्रीअरिहंत तुंम सरिखां कांइ नहीं निरागी, तुह्य सम कोइ अपर देव छइं नहीं ते भणी-ते माटइं पारग ॥१॥ तेरें।।

ैँ एहवी विविध कुसुम जातिसुं जव पांचमी पूजा पूजइं । तव भविजन रोग सोग सवि उपद्रव धूजइं ॥२॥ पारग० ॥

एहवी प्रकारइं विविध भांतिनां जे फूल तेणें करीनें, नाना प्रकारना कुसुमजाति करीनइं तुमनें जिवारइं<sup>80</sup> पांचमी पूजा पूजइं कहतां करइं, फूल चढावइं, तिवारइं तेहनइं सकल भविजनने -भव्य प्रांणीनें रोग सोगपणुं सर्व वेगलूं जाइं, चिंता-फिकर सर्व उपद्रव उपशमइं, विधन सर्व प्राणीनां धूजइं-अंगथी नाशइं ॥२॥

### इति पांचमी छूटा फूलनी पूजा ॥५॥

३४. नृतकी - ब. । ३५. नटिसरी - नटरागइं ब. । ३६. पदपंकज परि । ३७. उर देवकुं आक धतुरे ब. । ३८. प्रकारनां - ब., । ३९. एह विविध ब. । ४०. ज्यारइं ब. ।

एतलइं ए छूटा फूलनी पांचमी पूजा थई ॥ हवैं छट्टी पूजा फूलनी मालानी देशाख रागें कहे छइं :-

चंपगासोग पुत्राग वर मोगरा केतकी मालती महमहंती । नाग प्रियंगु शुचि कमलस्युं बोलसिरी वेलि वासंती ए दमन जाती ॥१॥

चंपक वृक्षना चांपाना फूल पंचवर्ण, अशोकैंवृक्षनां फूल, नांग-पुत्राग वृक्षना फूल, वर-प्रधान मोगराना फूल, केतकीनां फूल, तथा मालतीनां फूल, सुगंध महकती, मेंहमहाट करती दश दिशइं, नाग वृक्षना फूल, प्रियंगुवृक्ष "पुप्फेसरसी प्रीयुंग(प्रीयंगु)वत्रइंति" राजादिन पिवत्र एहवां कमल साथइ-कमलनां फुल, शतपांखडी, सहस्रपांखडी, बोलिसरीनां फूल, कालुविर वृक्षना वेलि, वासंती चंमेलिनां फुल, दश दिशें मसमसाट करतां दम[न]कनी जातिनां-दमणो-मरुओ ए फुलनी जातिना फूल।

कुंद मचकुंद नव मालिका वालको पाडलांकोल शुच्चि कुसुम गूंथी । सुरिभ कुसुममाल जिन कंठि बेठी वदइं भमर मिसि हो तुह्ये सुखी यमूथी ॥२॥

कुंद अनें मचकुंद, रिव-धवल सुगंध-पुष्पनी जाित, तेना फूलनी माला, तेज नवमािलका नवी मालती फूलनी माला, ते जूहीनइं कहीइं। तथा कुसुमना गुछनें कहीइ, ते वली सुगंध पांनडा वेल प्रमुख, पाडलां-पाडला फूलनी माला गुंथी, जासुल, अंकैंतल वृक्ष-जाितना फुल, कोरंटकािद, ए सर्व गुच्छना जाित-शुचि कुसुम क० पिवत्र कुसुँम साथे गुंथीनइं, हार-लक्ष फूलनां टोडर गूंथी करीनइं, एहवां सुरिभ क० सुगंध मनोहर जे फूल अनेक जाितना कुसुम, तेहनी माला जिनिनं - श्री जिनेश्वरनें कंिंट थापइं - आरोपी थकी शोभायमांन दीसे छइं। जिन कंटे बेटी कहे छइं ती जाणीयइं। भमर गूंजारव करे छें, भमरना शब्दने गुंजारवनइं मिसि कहे छइं। भिवकनै ते कहे छे : अरे भव्यलोको ! तुंमे जिननां चरण आराही-स्येंवा करो । जे ए जिन

४१. आसोपालव ब. । ४२. मसमसाट करतां ब. । ४३. चेलनां ब. । ४४. कोल वृक्ष - ब. । ४५. फूल - ब. । सेव्याथी मुझथी पणि सुखी थाओ । सुर-देवताइं गुंथी माला लोकनें कहे छइं । अथवा भमरा गूंजतां मालानें कहे छै अह्ये थकी पणि तुमें सुखी थाओ। जे माटें जिनने कंठइ बेठी छे ॥२॥

छट्ठी पूजा फूलमालानी तेहनु गीत सबाफ रागें कहे छइ : गीतं - राग - सबाफ ॥

कंठ पीठइं दाम दीठइं प्रभु मेरे पाप नीठइं जिउं शिश देखत जाइ जर्न तनु ताप । पंचवरण सब कुसुमकी गलइ ठवी गगनि सोहती जेसइं सुरपित चाप ॥१॥ कंठ० ॥

कंठ पीठइं क० जिननां कंठपीठनें विषें, दाम क० फूलनी माला, देखता थिकां हे प्रभो ! मेरे क० माहरा सर्व पाप नीठइं क० मिटइं-जाइं-क्षय थाइ । जिउं क० जिम चंद्रमानें दीठें - निरखतां प्राणीओना-सर्व वस्तुनां जन्मना परिताप जाइं । जे शरीर तेहना ताप जाइं । पंचवरणी सब कुसुमकी क० सर्वकुसमी- फूलनी माला जिँनैंगलें ठवी-थापी केहवी शोभइ छइं ते कहे छइं । गगनि क० आकाशमार्गे-आकाशनें विषें, सोहती क० शोभइं, जेसइं क० जिम, सुरपित क० इंद्र, तेहनुं चाप क० धनुष-केवुं सोभे? तिम-तेहनी परें शोभा, तिम जिन(जिन)ना कंठे फूलमाला शोभइं।

हिलाल चंपक गुलाल वेली जाती मोगर दमन भेली। गूंथी विविध कुसुमकी जाति। छट्टी रे माला चडड़ं दसदिस वासती तव सुखधू परि नखधू गात॥२॥ कंठ०॥

लाल पाडलनां फूल, चांपानां फूल, गुलाबनां फूल, वेलनां फूलनी माला, जाइना फूल, मोगराना फूल, दमणानां मरुयादिकइं सिंहत भेलीनइं-करीनइं टोडर गूंथ्युं, गूंथीनें विज्ञानइं करी रची विविध प्रकारना कुँसुमनी जातिइं एतलइं पंचवरणी जातिनां टोडर । छट्ठी पूजा फूलमाला चढाववानी

४६. जनमतनु ब. । ४७. अरिहंतनइं गलें - ब. । ४८. लाल गुलाब चंपकवेलि, जाइ मोगरो दमणो भेली ब. । ४९. फुलनी ब. ।

श्रीजिननें कंठे पूर्व-पछिम-उत्तर-दक्षिण-उर्ध्व-अधो ए दश दिशइं सुगंध वासती । तिवारें ते वेलाइं सुरवधु क० अपच्छरानी परें नरवधू क० मनुष्यनी वर्धुं-नारीओना वृंद पणि गीतगान गाती-करती छे ॥२॥

#### इति छट्टी फूलमालानी पूजा ॥६॥

इतिश्री छट्टी फूलनी माला चढाववानी विधि कही । हवें सातमी पूजा पंचवरण कुसुमजातिनी आंगीरंचना पूजा कहे छें गोडी रागइं ।

राग - गोडी सादो ॥

सातमी पूजमां वरणक फूलस्युं भवि कर्छं ए । चंपक दमणलो मरुओ जार्सूलस्युं चीतिसओ ए ॥१॥

पूजा पंचवरणी फुलनी आंगीनी । गोडी राग ।

सातमी पूजामां फूल साथई चरणकमलें भिव प्राणी रचना करइ। ते आंगी केहवी भव्यजीव रचइं ? चंपा-चांपना पीला फूल, दमणो नीलवर्णे, मरुओ गुलाबरंगी, रातां फूल जासुलनां रक्तवर्णइ, धोलो जास्यूं, ते साथें चीतर्यो-रच्यो हुंतो पूजा करतां चीत वस्यूं प्रांणीनुं ॥१॥

# ंअंगीय केतकी विचिं विचिं शोभती देखीइं ए । आंगीय मिसि शिवनारिनइं कागल लेखीइं ए ॥२॥

अंग कक्षानें विषइं आंगी विचइं केतकी मूंकी, आंगी माहि विचइ विचइ पंचवरणैंनी कुसुमनी शोभाइं शोभावंत, देखीईँ छइ ते जाणीइ। आंगी रचनानइं - आंगीने मसें - मिसइ "शिवरूप नारीनइं कॉंगल लिखइं छइं। ए द्रव्य पूजा थकी एहवो भाव लीधो ए में पिण मोक्षनां सुख पांमस्यइं एहवो लेख फूलें मोक्षने लिख्यो छे॥२॥

हवइं पूजा सातमीनुं गीत मालवी गौड रागै कहै छइं।

५०. स्त्री - व. । ५१. जालस्युं चीतर्यूं ए व. । ५२. आंगीय आंगीय विच विच केतकी सोभती देखीइं ए व. । ५३. पंचवर्णी विच फुल शोभइं व. । ५४. देखीनइं व. । ५५. मोक्षरूपणी स्त्रीनें - व. । ५६. लेख लखें - व. ।

गीतं ॥ राग – मालवी गोडी ॥ कुसुम जाति आंगी मनि खंतिं, पंचवरणनी जातिं रे । माहिं विविध कथीपा भांति रे ॥१॥ कुसुम०

सातमी पूजानुं गीत कहे छइं। तिमज ए फूल विविध प्रकारनां लेइ कुसुमनी जातिनी आंगी रचीइं। वली केवी ? मननें हर्षे करी-कीधी। पंचवर्णी फूलनी जातिथी आंगी रचीइं छें। वली केहवी ? मांहिं जाणीइं छे विचि विचि विविध प्रकारना कथीपानी भांतइं केवी दीसे तेहवी आंगीनी शोभा दीसइं छइं जेहनी॥१॥

> पंचवरण अंगी प्रभु अंगइं, रचयित ज्युं सुर रामा रे । ऋषभकूट चिक्र-नामा रे ॥२॥ कुसु० ॥

पंचवर्ण फूलनी आंगी प्रभु ते जिनेश्वरनें अंगइं आंगी रचयित कहतां रचइं केवी शोभे छइं ? जिम सुररामा क० देवांगना-इंद्राणीओ, तेणें आंगी रची तिम रचें-नीपजावें । कुंण दृष्टांते सोभे छइं ? जिम ऋषभकूट पर्वतनइं विषइं चक्री दिग्विजय करी पोतें नाम लिखें, तिम भविक-भवि प्राणी पणि मिथ्यात्वादिकनो जय करी चक्रीनी परें आंगीरचना मिसै ऋषभकूटें नामो लिखतो छैं, तिम जिनेंश्वरें दिग्विजयनी आंगी रचीइं छै ॥२॥

चंपकस्युं दमणो मन रमणो संझ-रागस्युं सामा रे । सूर्याभादि करइ जिनपूजा सकल सुरासुर गातइं रे ॥३॥

चांपाना फूल साथें-दमणो मनने गमतो; दमणानां पत्र केवा ? मननइं खुस्याल करइं एहवां । जिम संध्या रागें मिलती श्यामा रात्रि शोभइ छइं तिम वली आंगी शोभइं छें । वली सूरयाभादिक सुर-देवतां जिम जिननी पूजा करइ तिम । वली कुंण पूज्यइं ? सकल क. समस्त सुरासुर गाँतइं हुंतइं तिम ए कुसुम पूजा शोभइं छइं ॥३॥

ए सातमी पूजा विविध जाति पुष्पादिकइं करी आंगी करवानी ॥७॥

ए पंचवरण कुसुम जातिनी आंगी रचना पूजा सातमी कही ते माटे हिवणां संप्रदाइं विविध जातिनी आंगी करता दीसइ छइ ॥७॥

५७. गातें थकें - ब. ।

अंप्रिल-२००७ 55

राग गाथा सातमी पूजा विविध प्रकारनां फूलनी आंगीनो अधिकार कह्यो संपूर्णम् ॥७॥

हवें आठमी पूजा <sup>'</sup>चूँर्णनी राग केदारै तथा कमोद कल्याण कहे<sup>'र</sup> छइं -

राग-केदारो तथा कमोद कल्याण ॥

घनसाँ रादिक चूरणं मनोहर पावन गंध । जिनपति अंगैंसु पूजतां जिनपद करड़ भवि बंध ॥१॥

घनसार कहतां धैरास-चंदन्नादिक सुगंध वस्तुनुं सूक्ष्म चूरण कीधुं छइं, ते चूर्णनो सुगंध, अतिसुंदर पिवत्र गंध छइ जेहनो एहवो । जिनपित-जिनेन्द्र तेहने अंगइं सुपूजतां कहतां भली प्रकारे पूजता थका स्यूं करइं ? भिव प्राणी जिनपद नामकर्मनो बंध करइं ॥१॥

> अगर चूओ अति मरदीओ हेमवालुका समेत । दस दिसइं गंधइं वासतो पूजा जिनपद हेति ॥२॥

अगरैं उत्तम जातिनो, तथा चूओ प्रधान वस्तुनउं अति पवीत्र, तेणें शरीर मर्दत्र कीजइं । ते मांहि हेमवालुका क० बरास-कपूर मरदी-चोलीने- कपूरमांहि भेलीनै ते संघाते चूर्ण भेलवुं ज । ते चूर्णसहित करी दस दिसइं सुगंध वासइ तिम, सुगंधता परिमल वासतो थकी पूजा करइं, जिनपद बांधवानो ए हेतु छै ॥२॥

(यद्यपि वासपूजा पहिलां कही छै ते वास चंदननो जाणवो) ए पूजानो गीत कानडें रागे कहै छै ॥ गीतं - राग कनडों ॥

पूरो रे माई चूरो रे माई जिनवर अंगइं सार कपूर । सब सुख पूरण चूरण चरचित तनु भिर आणंद पूरो रे माई ॥ जिन० १ ॥ अरे माई ! ते उत्तम संबोधने । हे भाई ! प्राणीउ ! मनोरथ पूरउ।

५८. चूर्णादिकनी - ब. । ५९. कहीस - ब. । ६०. घनसारादि चूरणां ब. । ६१. जिनपति अंगस्युं ब. । ६२. बरासादिक ब. । ६३. अगरनो ब. । जे जिनवरनुं अंग सार बरास कपूरें पूरो, अनें आपणा दुरित चूरो । अथवा घनसारादिक महमूर चूरो । हे माता ! मननी आस्या पूरो, कर्मशत्रुं चूरो । माताजी ! श्री जिनेन्द्रना सरीरनें विषे सोभायमांन एहवो सारो कपूर भिंमसेंनी सकल सुख पूर्णे करै । सकल सुखनुं पूरण एहवुं जे चूरण तिणें करी चिरिचत क० अरचा पूजा करो । कर्म शत्रुने टाले ते जिननइं चर्चे । जिन तनुं सुरभर भर्युं ते जाणीई । आणंद-घंमंडे करी मे सरीर भर्यूं, आणंदने पूर्इं भविकें पोतानो आत्मा भर्यों छै । ॥१॥

# पावन गंधित चूरण भरस्युं मुंचित अंग उवंगइ । अष्टमी पूजा करत मन जाणती मेलावतीआ सुख-संगइं पूरो० ॥२॥

पावन क० पिवत्र, गिंधित क० गंध- सुगंध चूरण, तेहनइं भरस्युं क० जे भरण भरीइं, तेणें करीने शोभे छइं । केवूं ? मूंके । स्यूं ? प्रभुने अंग उपांगइं मुंचित क० मूके-थापे । अथवा अंगउपांगइं ए चूर्ण पूजोक्त छै ते भणी अंग उपांगना जे कर्म बांध्या तेनें मूकावइं एहवीं आठमी पूजा करतो भिवक मनमां जाणतां थकां, एहवां जे भव्य प्राणी मनमांहि इम जाणीइं छइं, ए चूर्ण पूजा सुख-संगने मेलावती क० संयोग करती छइं । तेहनें मेलावें मोक्षना सुखने एहवी वास पूजा छइं एतलें अष्टमी पूजा सुगंध चूरणनी कही चूर्ण वासनी संपूर्ण पूजा थइं ।

### इत्यष्टमी पूजा ॥

हवें नवमी पूजा ध्वजनी, गौडी **रागें** वस्तुयइ कहे छै जाफरतालनी जाति ।

राग-गोडी, वस्तु - जाफरताल ॥

देवनिर्मित देवनिर्मित गगनि अतितुंग धर्मधजा जन मन हरण । कनकदंडगत सहस जोयण, रणरणित किंकणी निकर । लघु पताक युत नयन भूषण जिम जिन आगिल सुर वहइं ए । तिम निज धन अनुसारि, नवमी पूजा धज करी कहें प्रभु तुह्य हम तारि ॥१॥

६४. आठमी - ब. ।

अंप्रिल-२००७ 57

गोडी रागेण गीयते । वस्तु, जाफरताले गावुं । तालीनी जाति । देविनिर्मित क० देवताइं निर्मित-नीपजाव्यो । स्यूं ? आकाशनें विषे अत्यंत उत्तंग-मोटो-उंचो-सहस्र योजन उंचो धर्मध्वज । एहवें नीम ध्वज, भविजननां चित्तनइं हरइं छइं । धर्मध्वज देखीनें सुंवार्णनइ दंडइं आरोप्यो-थाप्यो । केहवो ? सहस्र योजननें मानें दंड उंचो देवताइं कीधो । रणझणाट शब्द करइं छैं घुघरीना समुदाय जिहां तेनां निकर, तेणे सहीत, नान्ही वली ध्वजा सहस्र, तेणें करी-तेहना परिवारें युक्त- सहीत शोभे छइं । नेत्रनइं भूषण-जेवा योग्य एहवो ध्वज छइं । जे रीतिं प्रभु आगिलं सकल सुर समुदाय इंद्रध्वज वहइ छइ ते रीतिं भविक पणि पोताना धननइं अनुसारइं सुख पामइं ए रीतें, निज-पोताना धननें अनुसारें, संसार असार जांणीनइं ए नवमी ध्वजानी पूजा करी भव्य प्राणी प्रभु प्रतें इम कें छै: स्वांमी ! प्रभु ! अह्मने तारो, भवरूप संसार समुद्रमाहि तारो ! ॥१॥

ए नवमी पूजा ध्वजानुं गीत कहे छइं :

गीतं-राग - गोडी ॥

नट-रांमगिरि रागेण गीयते ।

माई सहस जोयण दंड ऊंचो जिनको धज राजइं । लघुपताक किंकणी निकर पवन प्रेरीत वाजइं ॥१। माई० ।

गीतं गौडी रागइं तथा नट्टरागइं तथा रामिगिरि बे रागइं ग्यांन करवुं छै। माई, हे माता ! ए शब्द संबोधनइं। हजार योँयेंणनो दंड छइं, सुवर्णनो दंड उंचो छै। एहवो जिन आगिलं एतलें जिनराज-वीतरागनों ध्वज भूषीत सिहत-युक्त छै। नांनी घुघरीउं, तेणें निकर-समूह, घूघरीना समुदाय धुत वायरइं करीनें प्रेरी हुंती मधुर शब्दइं वाजती ॥१॥

सुरनर मनमोहन शोभित जिउं सुरइं धज कीनो । तिम भिव धज पूज करतां नरभव फल लीनो ॥२॥ माई० । सुर-देवताना, व्यंतर, दानव, वली नर ते मानवना-मनुष्यसमूहनें

६५. नामें ब. । ६६. मन हरी लीइं ब. । ६७. सुवर्णनो दंड ब. । ६८. हजार योजननो ब. । ६९. आंखिनइं ब. । ७०. करतां ब. । ७१. जोजननो ब. । मननइं मोहनहार धजा <sup>७</sup>शोभावत छइं । जिम देवताइं ध्वज कीधो महेंद्र, चोसट्ठ इंद्रे समोसरणनी रचना करी, तिम भव्य जीव-भविजन-प्रांणी ध्वजानी पूजा करतां थकां जीवें स्यूं पून्य उपार्ज्युं ? मनुष्यना भवनुं फल लीइं, लाहो लीजीइं । तीर्थंकर पदवीनो लाभ पांमइं ॥२॥

#### इति नवमी पूजा ध्वजानी ॥९॥



हवें गौडी रागइं धवलनी देशी, दशमी पूजा ग्रहणानी कहे छै। राग-गोडी : धवलनी देशी।

लालैं वर हीरडा पाछि पीरोजडा विधि जड्या ए मोतीय नीलूया लसणिया<sup>®</sup> भूषणा तिहां जड्या ए ॥ अंगद रयणनो मुगट कंठाउलिं कीजीइं ए काने रविमंडल सम जिनकुंडल दीजीइ ए ॥१॥

लाल-राता वर-प्रधान जे हीरा-रत्नजाति, तथा पाछि नीलरत्न पास प्रवाली, पीरोजा ते हीरा रत्नजातिविशेष जांणवा । ते साथे विधिस्युं जड्या कारीगरें मोतीयल-स्वेत वर्ण मुक्ताफल नीलकर इति नीलें रंगइं नीलूया-नीलमणि लसणिया प्रसीध अभंग हीरा, इत्यांदिकइं ते रत्ननां भूषण ग्रहणइं-वीतरागनें ग्रहणे जड्या छइं । एहवां अंगद-अंगना-बाहुनां भूषण एहवां तथा वली रत्ननो मुकुट, तथा वली कंठावली-गलानां भूषण, वली बीजां ग्रहणां। बें काननें विषें केवा कुंडल छै ? रिवना मंडल सरीखां दीपतां कुंडल प्रभुने - जिनेश्वरनइं वेहरावीइं - दीजइं क. थापीइं ॥१॥

चंद्रमा-सूर्यसमान बे कुंडल जिननें कानें। इम इणि प्रकारिं आपीइं "चंद्र रिव मंडल, सम दोय कुंडल, जिनतणइं कानि इंम दीजीइं ए"..... ए पाठांतर॥

हवें ग्रहणानी पूजा दशमी, तेहनो गीत तोडी रागइं कहे छइं।

७२. सोभायमान ब. । ७३. लालवर हीरडां पास पीरोजका ब. । ७४. लसणीआ भूषणें ब. ।

गीतं । राग तोडी त्रिताली ॥

मुँगेंट दीओ मुगट दीओ कनकें घड्यो विविध रयणे जड्यो जिनवर सीसि । उर वर हार रचित बहु भूषण दूषण हरो जगदीस ॥१॥ मुगुट० ॥

मस्तकें मुगट ते <sup>ष्ट्</sup>थापो । सुवर्णे घड्यो-<sup>श्</sup>च्यो, रतनइं करी जडाव कीधो । वली विविध प्रकारें विचित्र जातिनइं रत्नइं करी जड्य छइं । तेणे सहीत श्रीजिनवरना मस्तकनइं विषइं घेरो-मूंको । हृदयस्थलनइं विषइं वर-प्रधान हार । एहवां रचित घणां भूषण करी सहीत ते ग्रहणां रचीनइं भुषण पेहर्यां हे जगदीश ! दूषण-अमारा कर्मनां हरो ।

> लालडे खरे हीरे पाचि मोतिनैं रयणे जमे(डे) दोए कुंडल अंगद जडित सिंहासण चामर लिओ देउ रे आखंडल.... ॥२॥ मुगट० ॥

लाल ते खरी, वली साचा हीरा, वली पैंगिछ प्रवाली मोती रत्न तेणइं करी जड़्या दोइ कुंडल कहतां बेहु कानना कुंडल सोभायमान दीशे छै। अंगद क० बाहिनां बे बाजुबंध-बाहुनां भूषण सोभे छइं ते प्रतें दीउं। अथवा जडित सिंहासन चामर विजें समोसरणें स्वामी प्रभुनइं। वली दिउ इछीत आपो अनइं जिनपद लिउं। अथवा वली आखंडल कॅं.इंद्रनी पदवी लिउं-पांम्यो तुमें आलो ॥२॥

### इति दशमी पूजा गरहणानी ॥१०॥

ए तीर्थंकरनइं भूषणपूंजा करतां इम भावीइं, एतलें दशमी पूजा

७५. मुगट दीओ कनके घड्यो ब.। ७६. थाप्यो ब.। ७७. "आगासगएणं च ... छत्तेणं सेयवर चामर धम्मब्भएणं सपायपीठिसिंहासणेणं एस आकासेँ चालता होइं ए आगम पाठ छै। समवस[र]ण बिसइ तिवारइं च्यार दिसइं च्यार ध्वज प्रमुख सर्व चोगणा होइ" आटलो पाठ अ. प्रतिमां () मां उमेरेल जोवा मळे छे.। ७८. बहु भूषणें करी ब.। ७९. पाछइं ब.। ८०. इंद्रादिक - ब.।

ग्रहणानी थई ॥ हवें इग्यारमी पूजा कुसुमघरनी राग केदारा-गौडीइं कहें छइं॥

#### राग केदारो गौडी ॥

# विविध कुसुमे रच्यो विश्वकर्मा रच्युं कुसुमगेहं । रुचिर सम भावस्युं सुर विमानं जिस्युं खणरेहं ॥१॥

राग गोडी केदारौ । तिम वली विविध जातिनइं कुसुमइं करी रच्युं क० रच्युं । वली विश्वकर्मा जे विधाता तेणइं जाणी रच्युं-नीपजाव्युं, एहवुं कुसुमनुं घर रुचिर कहतां मनोहर-प्रधान, भावइं करी देवना विमाननी परिं, रतननी रेखानी परि शोभायमान छै ।

# तोरण-जालस्युं कुसुमनी जातिस्युं शोभतू ए । गूंथि चंद्रोदय झूँबक वृंदने घोलतूं ए ॥२॥

तोरण, जाली कहतां गोख, तोरणें सहित शोभे छइं। एहवूं फुलनो घर तें फूलनी जातिस्युं करीने घर घणुं शोभतुं छइं। वली फूलनो चंद्रओ गूंथ्यो छइं, वली फूलना झूंबकना वृंदस्यु शोभतुं छे एतलें कुसुमना गोप तेहें कुसुमनें तोरणें सहित ऊपरि कुसुमनो चंद्रुओ गूंथ्यो छइं। फुलघरइं फूलनुं झूंमणुं पंचवर्णी चंद्रुआ शोभे छइं ते फूलघर ॥

हवें इग्यारमी पूजानुं गीत राग केदारें तथा विहागडें कहइं छइं ॥

गीतं - राग केदारो - विहागडो ॥

# मेरा मन रमो जिनवर कुसुमघर हं हरि कुसुमघरे, मेरा० । विविध युगतिवर कुसुमकी जाति भाति जेसें अमर घरें....मेरा० ॥१॥

अरे भविको<sup>८६</sup> ! एहवा कुसमना जिनवरना घरनइं विषइं माहरु मन रमो-रित पामो-केलाश करो । भय(भव्य) लोको कुसुमघरें मन रमो ए वालणी केहवी । ते भक्तिना घरनें विषइं विचित्र प्रकारनी प्रधान युगितं कुसुमनी जाति<sup>८६</sup> तेणें सहीत एहवी शोभइं छइं । केहवुं शोभे छे ? जे अमरघर-देवविमान ज<sup>८६</sup> नहीं साक्षात तेहवी शोभा छें कुसुमना घरनी ॥१॥ ८१. ज्योतिस्युं ब. । ८२. **झूमणुं चंद्रूइं सोभतुं ए** ब. । ८३. चंद्रूयचंद्रूए -

अ. । ८४. भविजनो ब. । ८५. भांति-ब. । ८६. ज नथी-ब. ।

### कुसुम चंद्रोदय झूमक तोरण जालिक मंडप भागि । एकादशमी पूजा करतां अविचल पद भवि मागि ॥२॥

ते कुसुमना घरनी, चंद्रुआ-गोख-कुसुमना झूबकनां तोरण तथा कुसुमना जालियां क. कुसुमना मंडपना भाग मध्ये मध्ये गोखनी रचना देखीनइं घणुं ज जीवने खुस्याली उपजइं । जाली-मांडवो, तेनो भाग तें चोका देखीनइं खूस्याल । एहवूं फूलघरनी भावना श्रीजिनेश्वरनी । एम-एणें प्रकारइं इग्यारमी पूजा करतो भविक प्राणी अविचल जे मोक्षपद तेहनइं जाणीइं स्वांमी पाशें मागइं छइं, भविजन श्राविक-श्राविका ॥२॥

### इति इग्यारमी पूजा कुसुमघरनी ॥११॥

एतलइं इग्यारमी पूजा कुसुमना घरनी गीत सहित थई। हवें बारमी पूजा फुलहरइं, कुसुमना मेघ वरसाववानी पूजा, ते मल्हार रागें कही छइं।

# पंच वर वर्णनो विबुध जिम कुसुमनो मेघ वरसइं । भमर भमरीतणा युगल रिसया परिं त्रिजग हरसइं ॥१॥

राग मल्हारेण गीयते । वर-प्रधान पंचवर्णी जे विविध प्रकारनो मेघ वरसें फुलघरें । श्रीजिनेश्वर फूलघरें विरच्यां तिहां फुलनो मेघ वरसहं । विबुध कहतां पंडितजन ते पणि भगवंत आगिल इमज कुसुमनो मेघ वरसावहं । "जिम भमर-भमरीना युगल हर्ष पांमइं गंध लेवानें तिम ते जिनपूजारिसक भव्य प्राणी श्री जिनेश्वरनी पूजाइं खुसी थाइं । तीम ते त्रिण्य जगना लोक हिंष पामइं ॥

# पगर जिम फूलनो पंचवरणें करी सुकृत तरसइं । बारमी पूजमां हरिख<sup>े</sup> तिम जिम मिलइं कनकपूरीसइं ॥२॥

जिम पगर क. समुदाय फूलनो पंचवर्णनो करतां, पंचवर्णी फूल पगर भरइं देवता, वली मनुष्य पूजइं, इम सुकृतनइं जे भली करणी करतां तरसइं छइं उच्छाहसहित पांमे । इंम पणइं मननें कहै छइं : अरे मन ! ८७. फूलनों - ब. । ८८. तिम - ब. । ८९. खुशी ब. । ९०. हरिखत तिम जिम मइं कनकपूरीसरें ब. । श्रीजीननी बारमी कुसुमवृष्टिनी पूजा हर्षे <sup>९</sup>करतो थको शुद्धभावे करें तो, सुवर्ण-पुरिसो मिलइं हर्ष पामें-तेहथी पणि अधिक हरखिवंत था[इ]॥२॥

> हवइं बारमी पूजानुं गीत मेघमल्हार रागइं कहइं छइ। गीतं – राग मेघ भेल्हार॥

मेहला जिउं मिली वरसइं करी करी फूलपगर हैरैसइं ... मेह० पंचवरण जानु-माने समोसरिण जिन(म) सुर मिली तिम करे श्रावक लोक । द्वादशमी <sup>९४</sup>पूजा तिम जनमन मुदे फरसइं... मेह० ॥१॥ अथ मेघमलारमां गीत ।

श्रीजिनेश्वरनी पूजाइं मेघनी परें घणे हखें पोहचें । मेघ जिम मिली वरसइं तिम तिम फूलपगर करी करी हर्षइ वरसो । जिम जिम फूलपगर इंद्रे भर्यों ते भावें वितरगने फुलपगर भरो । वलण करवी । पंचवर्णी कुसुम जानुं कहतां ढींचण प्रमाणइं भरें । वली "समवसरण मांहि जिम देवता मिलीने, च्यार नीकायना देवता भेला मिलै कुसुम वृष्टि करइं, तिम-तिणें प्रकारें श्रावकलोक पणि भेला थइनें जिननी भक्ति करइं, इम भव्य प्रांणी जे बारमी पूजा प्रभुनइं करेंस्यें तेहनें जनम-जनमनुं पातिक जाइं, अनंता सुखनी स्पार्श]ना करइं । लोक-भविक लोक, तेहना मनमां मुद-हर्षनइं फरसो ॥१॥

भैंमर पइं कहावति जड तिं, जाणुं अधोवृंत पडतइं ताण अधोगतिनांहि । जे हमु परि प्रभु आगलि पडिं रे हमपरि नही तस पीड । कुसुमपूजा कहइ सुख लहइं, दिन दिन जस चढतइं ॥२॥ मेह० ॥ हवइ कुसुममां जे भमर गुंजाख करे छइं ते जांणीइं जड-कुसुमनी

९१. करी तो- ब. । ९२. मलार- ब. । ९३. दिस्सिइं ब. । ९४. प्रभुपूजा ब.।

९५. सुह फरस्यें ब. । ९६. समोसरणनें विषें - ब.

९७. भमर पइं किहवती जडती जे हमुपरें प्रभु आगिल पडे रें। हम पिरं नहीं तस पीड कुसुम पूजा कहे सुख लहै दिन दिन जस चडतें ॥२॥ मे० - ब.।

अंप्रिल-२००७ 63

माला ते भमरा-मुखइ इम कहावइं छइ: ऊंधइं बींटइं जानुं-प्रमाणइं जोयण मानइं वृष्टि पडतां, स्यु कहै छै ? तेहनें अधोगित न होयइ । जिम फूलनें इंम कहे छइं । फूल भविजननइं । जेह अह्मारी पिरं श्रीप्रभूनां मूख आगिल रात्र-दिवस जे प्राणी भड़ं तेहनइं भवनां बंधन जास्यइं, जिम फूल बंधन विगर थाइं । अने वली हमपिर कहतां अमारी परइं तेहनें पीडा-बाधा पिण न होइ । बंधन-रहीत थाइं । इम कुसुम पूजा कहइं छइं ते अह्मारी परइं सुख लहस्यइं-पांमस्यइं, दिन दिन जसवाद चढतइं हुंतइं । कुसुमपूजा करें श्री कुमारपालनी परें कोडि ७नां फूल १८ तेणें करी पूज्या, तेना महीमाथी १८ देशें राज्य पांम्यूं पूजाथी ।

एतलइं इति श्री बारमी पूजा छूटा फूलना वरसात वरसाववानी पूजा थई ॥१२॥

> इति बारमी पूजा छूटा फूलनो मेह वरसाववानी पूजा ॥ हवइं तेरमी पूजा वसंत रागइं अष्टमंगलिकनी कही छइं :

> > राग वसंत ॥

रयण हीरा जिस्या सारवर तंदुला वरफल्या ए स्वस्तिक १ दर्णिण २ कुंभ ३ भद्रासन ४ स्युं मिल्या ए । नंदि-आवर्त्तक ५ चारु श्री वत्सक ६ वर्द्धमानं ७ मत्स्ययुगलं लिखी ८ अष्टमंगल हस्यइं शोभमानं ॥२॥

रतनना हीरा सरीखा सार उज्ज्वल, रत्नमांही राजेवां सारा सोभायमांन, चोथा(खा) अखंडवर-प्रधान तंदुल, वर फलइं फल्या, तेहना(मां) साथीओ प्रथम १, अरीसउ बीजें २, कलश त्रीजें ३, भद्रासन ते सिंहासन, सिंहासनें ब्येठानुं चोथइं ४, ए च्यार मंगलीक साथइं मिल्या । नंदावर्त्तक पांचमे मंगलीक ५, मनोहर श्रीवत्स हीइं जिनेश्वरनें हीयें, चक्रीनइं होय ६, वर्द्धमान ते सरावसंपुट सातमें मंगलीक ७, आठमें मत्सयुगल-बे माछलां ८, एहवां अष्ट मांगलिक आलेखीइं । साव रत्नमय चोखा अखंड पूरीइं, घणुं शोभायमान, तेनी ॥२॥

९८. **पडस्यै** - ब. ।

हवइं तेरमी पूजानुं गीत वसंत रागइं कहीइं छइ ॥ गीतं-वसंतरागेण ।

<sup>१९</sup>जिनप आगें विरचो भविलोका जस दरिसणइं शुभ होइं युं रे देखत सब कोइं ।१। जिन० ॥

जिनप कहतां वीतराग-जिनेश्वरनां पद आगिल विरचो कहतां रचो-नीपजावो, अरे भिवकैँ लोको ! भव्य प्राणीओ ! तुमइं श्री जीनेश्वरनें भजो-ध्याओ । जेहनां दिरशणथी मंगलीक होइं, अपमंगलीक वेगलां जाइं। तिम अष्टमंगलीकथी अपमंगलीक जाइं । जेह श्रीवीतरागना दर्शन थकी तथा अष्टमंगलीक दीठाथी सुख थाइं ते माटें। इम तुह्यो सहु प्रांणी देखो जाणो ॥१॥

> अतुल तंदुलइं करी अष्टमंगल वली तिम रचो जिमें तहा घरिं होइं ॥जीन० ॥

अतुल क० जेहनी तुलनाइ कोई नावइ एहवा घणां तंदुलें – अखंड चोखें करीनें श्रीजिननां मूख आगलइं, अष्ट-आठ मंगेलेंश्रेणि तिम रचो– तिम करो जिम फिरी तुम्हारइं घरइं अष्टकर्म चोर विलय जाइं, आठ मंगलिक थाइ, तथा अष्टमद घात जाइं, तथा अष्टकर्मना शोभाव मंगलीक थाइ तिम प्रांणी तुम घरें होयं, उपद्रव जाइं, भय रहीत थाइं ॥२॥

> स्विस्तिक १ श्रीवत्स २ कुंभ ३ भद्रासन ४ नंद्यावर्त्तक ५ वर्द्धमांन ६ । मत्सयुग ७ दर्पण ८ तिम वरफल गुण, तेरमी पूजा सिव कुशल निधानं ॥२॥ जिन० ॥

इम अष्टमंगलीक करवा:

साथीओ १, श्रीवत्स २, कामकुंभ-कलशं ३, भद्रासन ४, नंदावर्त्तक-नव खूणालो साथीओ ५, वर्द्धमान ते सरावसंपूट ६, मत्स युगल-बे माछलां पद्मद्रहनां ७, आरीसो, तिम वर-प्रधान 'फैलसहीत 'गुँणसहीत छै जिहां, ९९. जिनपद आगिल विरच्यो ब. । १००. भविजनो ब. । १०१. जिम घर होइं ब. । १०२. मंगलिकनी - ब. । १०३. फलें - ब. । १०४. गुणें - ब. । अप्रिल-२००७ 65

एहवी तेरमी पूजा 'सैंर्वमंगलनुं निधान छै। अथवा ए फलपूजा, पणि ए पूजामां घणे(णी?) पूजा करवानो विधि जाणिवों इंम पणि छइं। अष्टमंगर्लैं करइं 'नालिकेरादिक, पछे फुल ढोयइं'ं । एतलें तेरमी पूजा अष्टमंगलीकनी थई।।

इति तेरमी अष्टमंगलभरणपूजा ॥

यद्यपि पूजा ए पूर्वे गाथाना बंधमानथी कही जे माटें प्रथमथी पूजा मांडीयइ तिवारें ते आरती-मंगलदीवो इहां करीनइं पछै धूप ''उँखेवण-नैवेद्यढोकननी पूजा १४मी करइं । पणि इहां केतलाएक पूर्वे स्नात्र करीनें आरती-मंगलदीवो करीने पछें पूजा भणावइं, तिवारें आरती-मंगलदीवो पूर्वे कर्यां माटि इहां अष्टमंगल थापइं । '''सिद्धांतादिकें पणि अष्टमंगलीक लिखवां ते सर्व पछी छइं, ते माटें जिम श्रीवितरागनी भक्ति बधइं अनै वली बहुश्रुतनी आज्ञा प्रमाण छे'।' परं नित्य पूजाइं पणि आरती-मंगलदीवो 'केरवो जोईइं, तो स्नात्रइं तो कलशाभिषेक पूजानंतरें आरती-मंगलदीवो प्रगट करवो अनें अष्टमंगेलैंनें ठामइं स्वस्तिक पूरइं । नैवद्य ठामइं अक्षत-त्रिण पूजा करे तों नैवैद्यपूजा गणें । परं सर्व प्रत्येकें प्रत्येकें नैवेद्य च्यार आहारना करवा जोइइं । पछें यथाशक्ति । अविध आशातना 'टैंलइं जिम थाइ तिम प्रमाण छइं । इहां कोई हठ नथी । शक्तियोगें भिक्त न लोपें । शिक्तं न सो(गो)पवे अनें भिक्तं न लोपइं तिम 'केरइं । ए सर्वत्र विधिपाठ छइं ॥

हवइं चौदमी पूजा धूप-दीपनी मालवी गौड रागें<sup>११६</sup> कहै छै॥ राग मालवी गोडो॥<sup>११७</sup>

कृष्णागरतणुं चूरण करी घणुं शुद्ध घनसारस्युं भेलीओ ए । कुंदरुको तुरुक्को सुकस्तूरिका अंबर तुंबैर्रस्युं मेलीओ ए ॥१॥

१०५. मंगलीकनुं निधांन्न ब. । १०६. मंगलीक - ब. । १०७. नालेर फुल - ब. । १०८. ढोईइं - ब. । १०९. उखेववानी निवेद्य - ब. । ११०. सिद्धांते पिण - ब. । १११. थाइं - ब. । ११२. कह्यो - ब. । ११३. अष्टमंगलीकनें - ब. । ११४. टालतें - ब. । ११५. करवुं - ब. । ११६. रागेण गीयतइं - ब. । ११७. गोडी - ब. । ११८. तुंबस्यूं मलीओ ए ब. ।

कृष्णागर-शुद्ध मावरदी, तथा विविध जातिना उत्तम अगर तेनुं पवीत्र चूरण करीनइं, ते चूरणमांहिं एतली वस्तुं भेलीइं। त्यार पछी शुद्ध-निर्मल घनसार ते खरुं बरास, मांहि भीमसेनी कपूर, भेलीनइं, एतलें धूप भेलीजइं, कुंदरुको सपेत कुंद, धूप-तुरुको, एहवें नामें धुप, वली तुरुक्क कहतां सेलारस, धूपविशेष, वली भमरी कस्तूरी सुगंध द्रव्य, अंबर धुप, तुंबर धूप, <sup>११९</sup>चिडादिक विशेष तेणइं मेलवीनइं ॥१॥

# रयण कंचनतणुं धूपधाणुं घणुं प्रगट प्रदीपस्युं शोभतू ए । दस दिशइं महमहइं धूप उखेवतां चउदमी पूज रज खोभतूं ए ॥२॥

रतननुं, तथा कंचन ते सुवर्णनुं, तथा रूपानुं, तथा पीतलनुं, धूपधाणुं घणुं भर्युं धुपें करीनइं, देखतुं – प्रगट दीपकें साथैं जे धूपधाणुं शोभे छइं, पिण केहवूं ? ते धूपनो वायरो दश दशें जातां, दस दिसइं सुगंधस्युं महमहइ, मसमसाट थयो रह्यो धूप उखेवीतुं हुंतो उखेवता थकां, भव्य प्रांणीने चउदमी पूजा ते करतां, रज कहतां पापरूपी जे रज तेहनें टालें-नीवारइ, पापनें खोभतुं कहतां टालतुं छइ ॥२॥

हवइं चौदमी पूजानुं गीत कल्याण रागै कहै छइ :

गीतं - राग कल्याण ॥

अती ए धूपी धूर्मीली

जिनमुख दाहिणावर्त्त करंता देवगित सूचित चाली ॥धूपी० ॥१॥

गीतं - राग-कल्याण रागेण गीयते वाच्य ।

अरे जोओ-प्रांणी ! ए धूपना धूमनी श्रेणि श्रीजीनेश्वरनें जिनवरना मुखनें आगिलं जिमणें पासइं-दक्षिणभागइ आवर्त करती, एतलें सवली प्रदक्षिणा देती-शोभइ छइं, ते जाणिइं जे[आ]काशें धूपमा(धूमा)विल चाली, ते जाणीइं देवगित सूचइ-कहइं छैं भिवकनें, धूप करतां भव्य प्राणीनइं धूप स्यूं कहे छइं ? अरे ! अमारा परें उर्ध्वगित जास्यो ! ए भाव कृष्णागर शुचवे छइं ॥१॥

११९. चीडादि - ब. । १२०. दिवा ब. । १२१. धमाली ब. ।

'क्केंग्रागर अंबर मृगमदस्युं भेली तिम घनसारो । धूप प्रदीप दशांग करतां चौदमी पूजा भव तारो... धूपी० ॥२॥ धुप कृष्णागर, अंबर अनइं साथे वली कस्तुरी 'सैंयुं भेली, तिम वली कपूर, एहवो धूप, तथा प्रदीप । दशांग धूप करवो, वली तिम कपूरनो दीवो करीनइं, एहवी भविजनइं धूपपूजा, वली दीवानी पूजा करतां, सासग धुप करतां थिकां, चौदमी पूजा करतां भव-संसार पार ऊतारो । कुण ? एहवी चउदमी पूजाना फलथी ॥१४॥

# इति आरती मंगलदीवानी चौदमी पूजा ॥

एतलाइं इति श्रीआरती मंगलदीवानी चौदमी पूजा पूरी कही, लिखिता च । श्री गुरवे नम: ॥१४॥

हवइं पनरमी पूजा त्रिवेणी रागइं गाथा-बंधइं गीतनी पूजा कहीयै छै॥

राग - त्रिवेणी गोडी, गाथाबंधइं ॥

गगननुं नही जिम मानं, तिम अनंत फल जिन गुंणगानं तान मान लयस्युं करि गीतं, सुख दिइं जिम अमृत पीतं ॥१॥

त्रिवेणी रागें कहीस, गोडी त्रिवेणी गीयतइं गाथाबंधें । जिम गगन कहतां आकाशनुं मांन-प्रमाण नही-अनंत आकाश माहइ, तिणें दृष्टांते जिनेंश्वरना गुंण गातां अनंत फल छइं । श्रीजिनवरना गुण, तेहना गीतनुं तान-मान-लय ए त्रिण्येंनुं एकत्र करीनइं जे गीत <sup>१</sup>गैँगववुं तेहनें घणुं सुख आपइ अरिहंतनी भिक्तनुं गीत । जिम अमृत पीधुं सुख दीइं तिम जिनभिक्तनुं गीत अमृत शरीखुं सुख दीइं ॥१॥

वेणु वंश तल तालमुवगइं, सुरत राखि वरतंति मृदंगइं । जयतमान पडताल एकतालुं, आयित धरी प्रभु पातिक मा( गा )लो ॥२॥

वीणा-वंश, हस्तताल-कंठ(कर)ताल, वीणा-सरणाइ, हाथनी ताली, कंसाल, बीजाइं तंतिना वाजां ते उपांगइ, बीजा तांतनां वाजीत्र मन धारणा १२२. धुप कृष्णागर० ब. । १२३. कस्तुरीनो धुप भेलवीनइं - ब. । १२४. गाइं ब. ।

राखीनें वजाडों । सुरित धारणी राखवी । प्रधान तंतिना वाजा मादल साथइं, मादल जैयेतमान, पडताल, एकताल, इत्यादिक तालभेद । वाजीत्र पडताल जाति छै, एक तालना भेद ४८ जातिनां, एहवी आस्ता राखीनइं हे स्वामी ! अमारा भवनां पातिकने आयित कहतां उत्तर कालना पातिक भविकजननां हे प्रभु-स्वामी ! गालो कहतां टालो ॥२॥

हवें पनरमी पूजानुं गीत श्रीरागइं कहै छइ:

गीत: श्रीराग ॥

रतुह्य शुभ पार नहीं सूयणों, मानातीत यथा गयणों तान मान लयस्युं जिनगीतं, दुस्ति हरइं जिम रज पवणो ॥१॥ तुह्य०। गीत श्री समेण मीयतें।

अरे सुयणो !-स्वजनो ! अरइं स्वामीइंओ ! तुम्हारा शुभ क० तमारां शुभ पुन्यनों पार नहीं, जें जिनेश्वरनी भिक्त करी छै एतलैं घणुं जिम गगन-आकाश मानातीत छइं तिम तुम्हारा पुन्यनो पार नहीं ते माटिं । तान माननी जें लय-लव्य संघातें एतीनइं एक करी श्रीजिनना गीत गाऊं छउं । वीतरागनी भिक्त करतां पूण्यनो पार नहीं । दूरित-पापनें हरें, जिम पवन कहतां वायरें रज उडी जाइं, वायरो रजनें हरइं, तिम तुम्हारां दुरित ते पाप हरे ॥१॥

वंश उपांग ताल सिरिमंडल, चंग मृदंग तंति वीणो । वाजित तूर जलद जिम गुहिरं, पीतांमृत परि करि लीणो ॥२॥ तुह्म० ।

अरे स्वामीओ ! वंस, उपांग, ताल, श्रीमंडल, इत्यादिक वाजीत्रभेद छइं । चंग-डफ, मृदंग-मादल, रिश्वेति वीणायंत्र, तेणें । वली वाजती कहतां वाजइं, तूर कहतां वाजित्र जाणीइं, वाजां वाजें । कोनी परें ? जलद-मेघ जिम गुहिर गाजइं, जिम वरसात गोहिरें गाज करें, तिम वाजीत्र वाजें छइं । पीतां-अमृतनी परिं जाणियइ छे जे लयलीन थया, पूर्ण तृप्तिवंत थया, तुष्टिवंत थया ॥२॥

१२५. जयमांन - ब. । १२६. टिप्प. किहां एक जिन शुभ पालही सुयणो इति - अ. प्रतौ पाठां. नोंध ॥ १२७. तांति ब. ।

गायित सुर गायन जिम मधुरं, तिम जिनगुंण गण मिण रयणो । सकल सुरासुर मोहन तूं जिमें, गीत कहिओ हम तुह्य नयणो ॥३॥ तुह्म० ॥

गायित क० गायइं-गाय छै रागें करी, सुरगायन क० सुर-देवताना गायन, वली देव-गंधर्वनी पिर श्री वीतरागना गुंण गाय छै। जिम मधुरं क० मधुर होइं तिम श्रीजिन-वीतराग मधुरे सादें वाजित्र समूह वाजतें, जिन गुणना गण क० समुदाय, तद्गूप मणी-रत्न जेहनइं विषइं, सकल जे समस्त सुरासुरनें मोहइं, एहवा श्री <sup>१२९</sup>जिनवरनुं स्तवन-स्तोत्र-गीत भणइं-किहउं। अहमो तुम्हारी १<sup>२६</sup>दूष्टिं तुमारा नयन-तुह्मारी कृपायइं, तेणें करीनइं अमें भिक्त कीिंध छइं ॥३॥

एतलै १५ मी पूजा गीतनी थई ।

इति स्तवन गीत पूजा पन्नरमी १५ ॥

इति श्री गीतं स्तवनें १५ मी पूजा कही । हवइं सोलमी पूजा नाटिकनी कही :

राग सोरठी तथा मधुमादन ॥

सरस वयवेष मुखरूपकुच शोभिनी विविध भूषांगनी सुरकुमारी । एक शत आठ सुर कुमर कुमरी करइं विविध वीणादि वाजित्रधारी ॥१॥ सरस० ॥

राग सोरठी तथा मधुमादन रागें कहै छै। गीतें शुद्ध कडखो छइं। जिम सुरीआभ देवें तथा आंमलेंकेलपानगरे नाटिक कीधुं। सिरखी वयें मुख-रूप-कुचें शोभती एहवी, कुंण ? विविध प्रकारनां भुषणनी धरनारी एहवी देवकुमारी। सुरभें (शोभें ?) श्रीवर्द्धमांत्र स्वामीने वांदीनें आगिल जिमणी भुजा पसारीनें १०८ देंवकुमर कीधा, डाबी भुँजा पसारी १०८ देवकुमरी केरी तेनें हाथें ४८ वाजां विविध प्रकारें जे मांहोमांहि ४८ वाजता तान साथै बत्रीसे प्रकारे नाटिक कीधुं घणा वाजित्र बाजतें। तिम बीजायै १२८. तुं जिन ब.। १२९. जिनेश्वरनुं ब.। १३०. दृष्टि-ब.। १३१. आमलकप्यानगरें ब.। १३२. डावि भुजाथी - ब। १३३. किधी - ब.। १३४. बत्रीसबद्ध

नाटिक करें - ब.।

प्राणी नाटिक करै, बीजो प्रांणी तें भाव राखइं, ते भावनी पूजा कहइ छइ। सिरखी छइं वय अनइं वेषइं एहवी जेहनां मुख-रूप-कुच तेणइं शोभायमान, विविध भूषणवंत, तथा भूषित अंग थकी, एहवी देवकुमारी एकसो आठ, देवकुमर अनैं दैवकुमरीनां सिरखां रूप करइं विविध प्रकारनां वीणादिक वाजित्रना धरणहार ॥१॥

अभिनंदें हस्तक हावभावइं करी, विविध जुगतिं बहु नाचकारी । देवना देवनइ देवराजा यथा, करित नृत्यं तथा भूमिचारी ॥२॥ सरस०॥

अभिनैय ते हस्ततालि भेद ५४, आरभडभसोलादि नृत्त ४, हस्तकी ते हस्तसंज्ञा, हाव ते मुखना विकार, भाव ते चित्तथी उपना एवं ४ भेदइं, तेना हावभाव करी देखाडें, पगलें चालें करी भाव देखाडें। इम विचित्र-विविध प्रकारनी जुगतिं करीनें, वली घणा नाटिकनी नाचकारी करती थकइं देवाधिदेव ते प्रभु आगलि देवराजा-देवतानी श्रेणि जिम नाटिक करइ तिम भूमिचारीइं मानवी राजाइं-मानवनी श्रेणि पणि इम-तेहवां नृत्य करइं, मनुंष्य पण तें भाव राखीनइं करइं नाटिक ॥२॥

हवइं ए सोलमी पूजानुं गीतं शुद्ध नट्ट रागइ कहीयइ छइं । गीतं - राग - शुद्ध नट्ट ॥

एके शत आठ नाचइं देवकुमर-कुमरी
<sup>१३७</sup>दोँ दोँ दोँ दुंदुभि वाजित, नाचिती दिइं भमरी ॥१॥ एक० ॥
गीतं शुद्ध नटरागेण गीयतें ।

यथा एक शत आठ एतलें १०८ नाटिक करह, एकसो नें आठ देवेंतौँना कुमर अनें देवतानी कुमरी सर्व भेला थइनें श्रीवर्द्धमांनना मूख आगें दोँ दोँ रोँ <sup>१</sup>ऐँहवइं शब्दइं वाजतें थिके, दुंदुभिना शब्द वाजतें थिकें, वली अंग वालीनइं नाचती<sup>१४°</sup> नाचती भमरी दिइं<sup>१४१</sup> ॥१॥

१३५. अभिनव ब. । १३६. अभिनव – ब. । १३७. दौ दौ ब. । १३८. देवतांनां कुंमर कुंमरी – ब. । १३९. दौ दौ सब्द – ब. । १४०. नाचित थकी – ब. । १४१. देती विचर्छ – ब. ।

### घन कुच युग हार राजी कसी कंचुकी बधी<sup>१४</sup>। सोलस सिंगार सोभित वेंणी कुसुम बंधी ॥२॥ एक० ॥

घन जे निविड मांहोमांहि मिल्या जे कुचयुग तिहां हारनी श्रेणि शोभती छइं, कसी-ताणीनइं कंचूकीना बंध पणि बाध्या छइ. वली देवकुमरीना सोल सिंण गारें शोभित छइं, एहवी देवकुमरी शोभें छै। वली माथानी नीचे वेणि ते कुसुमनी सुगंधताइं वासित छइं ॥२॥

# नट्ट कुट्टिकं ठहु ठहु विच<sup>१४४</sup> पट ताल वाजइं देखावित जिन हस्तकों नृत्यिकं निव लाजइ ॥३॥ एक० ॥

नट(ट्ट)नाच करतां कंठि-किट्ठि 'तहु तहु' एहवा शब्द थातइं 'ठिम ठिम' 'चिचिपट चिचिपट' एहवा शब्द थातइं, घाति ताल वाजित थकें, देखाडती जिन-वितरागनइं आगिल हस्तकी देखावित कहतां-देखाडतां थिकां हाथनें चालें करीनइं कहइं नृत्य करती-नाटिकणी नाटिक करती लाजिती नथी एहवी थकी वली ॥३॥

## तिनीं तिना भंति वाजइ रणझणंति विणा तीं (तां )डवं जिम सुर करंति तिम करो भवि लीणा ॥४॥ एक०॥

'तत तत तनन तनन तनन तनतां तनतां तनतां' एहवइं शब्दइं तिना तिना वीणा वाजइं । तांतिना वाजांना शब्द वाजतइं हुंतइं वींणौँना रणझणाट शब्दता थइ हुंतइ, तंती-वीणा वाजतइं थकें 'हे स्वांमी ! अमने तारो'ए नाटिकमां संगीत करती थकी ताडवं कहतां नाटिक जिम देवता करइं तिम-तिणें प्रकारइं भवि क० अरं भव्य प्राणीओ ! लयलीन थइनइं करो, जिम देवताइं पूज्या तिम तुमें पण पूजों ! ॥४॥

# इति नाटिके पूजा १६ ॥१६॥

इति<sup>१४९</sup> नाटिक पूजा १६मी संपूर्ण थई ॥१६॥ हवें सतरमी पूँजीं सर्व १४२. **बांधि** ब. । १४३. **शृंगारे सोभती** – ब. । १४४. चिचपट० ब. । १४५.

१४२. बाधि ब. १४४. शृगार सामता - ब. १४४४. विषयपट० ब. १४४५. तिना तिना तिना तंति वार्जे रणझणित ब. १४४६. तानवं ब. १४४७. रणझणि विणानां शब्द हतें थिकें - ब. १४४८. नाटिक सोलमी पूजा - ब. १४४९. ए नाटिकें सोलमी पूजा संपूर्णम् - ब. १४५०. पूजा कहस्यैइं - ब. ।

प्रकारना वाजित्रनी सामेरी रागइं कहइ छइ:

राग सामेरी ॥

समवसरण जिम वाजा वाजइं, देव दुंदुभि अंबर गाजइं। ढोल नीसाण विसालो। भुंगल झल्लिर पणव नफेरी। कंसाला दडवडी वर भेरी। सिरणाइ रणकालो॥१॥

सामेरी रागेण गीयतें । त्रिपदी थोयनी देशी । चोवीस तीर्थंकरनें समवसरणनें विषइं जिम देवता गढनें कांगरें ऊभा थिकां वाजा 'वैजावें। देवतानी दुंदुभि आकाशनें विषइं गाजइं । आकाशे अंबर गाजी रहें । च्यार दरवाजइं ढोल, नींसाण, नगारां मोटां तिम वाजइ । वाजते थकइं भविजन सांभली भुंगल, नाल, झलिर, 'भरे पणंव कहतां ढोल, वली नफेरी, कंसाल, दुडवडी-मोटी भेरी, सकल शब्द वाजतें थकें, पाणव नें नफेरी ढोल वाजतै, मोटी कंसालना शब्द विल भेर वाजतें थकें, इत्यादिक सरणाईना शब्द रणतूरना शब्द 'भकें।हलना सब्द वाजतें थातइं ॥१॥

मरुज वंश सरती निव मुंकइं, सतरमी पूजा भिव निव चूकइं। वेणी वंश कहइं जिन जीवो, आरती साथि मंगल पईवो ॥२॥

मादल, वंशनी मूरली, सर तिनइं-तीन स्वरें बोलती थकी शब्द न मूंकइं। एहवी सतरमी पूजा भविक देव-मनुष्य चूकइं नहीं। जे भाव-खंडना न थाइं। वेणी वंशवीणा शब्द, मुरली, श्री वीतरागने इंम कहै छै जे 'श्रीजिन चिरंजीवो'! 'स्वामी! तुं चीरंजीव'। पूज्यें पूज्य ज्यै जीव जें आरती साथइ मंगलदीवो प्रगट करइं, स्वांमीनें आरती मंगल ॥२॥

हवइ सतरमी पूजानुं गीत कहै छै:

गीतं ॥

घणुं जीवि तूं जीव जिनराज जीवे घणुं शंख सरणाई बोलै ।

१५१. वाजइ - अ. । १५२. झालर ना शब्द ब. । १५३. काहली ब. ।

महुयरि फिरि फिरि देवकी दुंदुही हे नहीं प्रभु तणइं कोइ तोलइं ॥१॥ गणुं० ॥ गीत कडखौ ।

घणुं जीव तूं, अक्षयपणें जिन ! तुह्यो जीवो । अक्षय खजानो तारों, माटें स्वामी ! जीवनजी ! तूं घणुं जीवज्यें । तारो महीमा सर्वत्र व्यापी छइं । संख-सरणाइ जीननें बोलती इम कहइ छइ । <sup>१</sup> भेंहुयरनुं वाजुं वली मीठे वचनें फिरि फिरि वारंवार वाजां वाजतें देवकुमरी थकी कहे छै : जे प्रभुतणइं, स्वांमी ! तारे तोलइं-औपमानें को नथी, त्रिण भुवननो नाथ छइं ॥१॥

> ढोल नीसाण कंसाल सम तालस्युं झक्ली पणव भेरी नफेरी । वाजता देव वाजित्र जाणें कहें सकल भविकुं प्रभो ! भव न फेरी ॥२॥ घणुं०

ढोल, वाजुं, नींसाण, नगारां, कंसाल, समताल-सातइं एक स्वर थाइं माटिं बत्रीशबद्ध वाजा वाजतै थकें, झलिर, पडह ते ढोल, भेरि, नफेरी-इत्यादिक वाजा वाजता थकां, देवताना वाजित्र वाजता 'जीणीइ इम कहे छइं: सकल-समस्त भविकें प्राणीनै भवनी फेरी न होइं जिनवरनी पूजा करतां ए वाजां इम कहे छइं। सकलचंद्र मांन सकल-समस्त प्राणीने सुखनो देनार थाओ ए वांजां शब्द कहे छइं॥२॥

देव परि भविक वाजित्र पूजा करो भिक्ते मुखि तूं प्रभु त्रिजग दीवो । इंद्र परिं किम हमे जिनप पूजा करो आरती साथि मंगलपईवो ॥३॥ घ०

१५४. टिप्पण हांसियामां छे: तत १ घन २ शुषिर ३ आनद्धं ४ ए च्यार प्रकारें वाजित्र। मंद्र १ मध्य २, तार ३ ए ३ मान । उदात्त १ अनुदात्त २ स्वरित ३ ए ३ तान । सात स्वर । प्रशम ३ । मूर्छना २१ । लय । ताल ४९ । षट भाषा ६ । भारती १ । सात्विकी २ कोशिकी ३ आरभटी ३ वृत्ति । ए अभिनय आत्मिक १ वाचिक २ सात्विक ३ कायिक ४ । – अ.॥ १५५. जांणीने इंम – ब.। १५६. भव्य प्रांणीनें – ब.। १५७. कहो ब.।

देवतानी परिं भविक प्राणी श्राविको ! तुमें स्यूग्रह भाव आंणीनइं वाजित्रनादपूजा करो । तुमइं एहवुं कहो मुखें : प्रभो ! तूं त्रिजगदीपक छौ । इंद्रनी परिं हे जिनपति ! अह्ये किम पूजा करीसीइं हाथें, तो हि पणि आरित साथिं मंगलदीवो जिम सुर करइं छइं ते रीतइं हुं "करुं छुं.

इति वाजित्र पूजा सतरमी ॥१७॥

एतलइं सतरमी पूजा वाजित्रनी गीत सहित पूर्ण थई । हवैं धन्यासी रागें छेहली ढाल कलश कहे छइ, कवित्ता भावें करी:

राग धन्यासी मिश्र ॥

थुणिओ रे प्रभु तूं सुरपति जिम थुणिओ तीन भुवन जन मोहन तूं जिन, परम हरख तव जणीओ रे ॥१॥ प्रभु०

में इणि परि स्तव्यो जिम सुरपित क. इंद्र स्तवइं तिम स्तव्यो । सत्तरभेदी पूजाइं करीनें मे किवताइं कल्पवृक्ष सिरखो मनकामनानो पूरनारो, त्रिण्य जे भुवनना जैंनैं ते प्राणीउना मनना मोहन एहवा तुह्यो जिन-वीतराग। इम पूजा करतां थकां <sup>१६</sup>पैरम हर्ष ऊपनो । १७ भेदी करइं ।१।

एक शत आठ कवित नितु अनोपम, गुणमणि गूंथी गुणिओ । जिनगुण संघभगति कर्रै पसरी, दुस्ति तिमिर सब हणीओ रे ॥२॥ प्र०।

एक शाँते आठ १०८ किवत नवां ते अनोपम महार्थवान श्लोक कीधां छइं। तदरूप मणीआ गुंथीने माला गुंणज्यौ भिवजनो ! एहवइं करी गुण्यउ भिक्त श्रीजिनगुण अनें संघभिक्तरूप किरण पसर्या विस्तर्या। पसरी थकी स्यूं करें ?। भिव प्रांणीनइं तिणें करी दुरितरूप जें पाप तद्रूप जें तिमिर, पूजा करतां-सांभलतां तें तिमर सर्व हणाणा-नास पाम्या जाइ ॥२॥

तपगछ अंबर दिनकर सिरखो, विजय दानसूरि मुणिओ । भविक जीव तुह्य थयथुइ करतां, दुरित मिथ्यामत हणीउ रे ॥३॥प्र०॥ श्रीतपगच्छरूप आकाशनें विषइं दिनकर ते सूर्य<sup>१६४</sup>समान एहवा महाप्रतापी

१५८. सकुं - अ. । १५९. अमइं - ब. । १६०. लोकनें - ब. । १६१. घणुंज - ब. । १६२. करि ब. । १६३. सो - ब. । १६४. सूर्यनइं सिरखों - ब. ।

अंप्रिल-२००७ 75

पून्य-पवीत्र श्रीविजयदानसूरि गुणवंत केहवां ? मुनिना गुरु छइं, भट्टारक छइं। तेहनें राज्यइं अरे भव्यजीवो ! तुह्यो वीतरागनी थयथुई-स्तवनां करतां दुरित-मिथ्यामित सर्व हणो । विपरीत वासनाथी ऊपना जे पाप ते टालो । माहरां मीथ्यात्वमित गुरुथी जाइं । गुरु मोटा प्रभू छइं ॥३॥

# इंणि परि सतरभेद पूजाविधि, श्रांवककुं जिनइं भणिओ । सकल मुनिसर काउसग्ग ध्यानइं, <sup>१६५</sup>चिंतवि तस फल चुणिउ रे ॥४॥

इंणिपरें सतरभेद-पूजानां भेद १७ कह्या छें ते प्रांणी सांभलीनें पूजाविधि करें। एणी प्रकारे सतरभेदी पूजानो विधि श्रावक जननइं कहेवा भण्यो। जिनेश्वरइं द्रव्य-पूजानों अधिकार कह्यो। जे माटिं द्रव्य-पूजाना अधिकारी श्रावक छइ। अनें सकल मुनीश्वर पणि काउसग्ग ध्यांने।

'वंदणवित्तया' इत्यादिक पाठइं काउसग्ग, तत्प्रत्ययनो करी भावपूजा-चितन-फल-चुर्ण, ते कहे छइं । अथवा सकल ते सकलचंद्र उपाध्यायइं ए पूजा करवानो प्रारंभ काउसग्गमांहि कह्यो इम पणि कहै छै, जे जणाववाने ए पद आ एक छै । कोइक ग्रांमें सकलचंद्र चोमासुं हता तिहां उपाश्रयना मा कुंभार रेहतो तेना गार्द्धम भूक्यानो काउसग कर्यो, त्यार पछी काउसग्ग पार्यो तार पछी पूजा सहु भणे छइं ।

# इति श्री सर्त्तरभेद पूजाविधिसंपूर्णं ॥ श्रीरस्तु ॥ छ ॥

इति सत्तरभेदी पूजानो टबार्थ लिख्यो पं. सुखसाग[र]गणिइं भविक प्राणीनइं पूजा अर्थ सुगम थावा माटें। संवत १८०० कार्त्तिक शुदि १३ गुरुवासरे लिखत्तं श्रीस्तंभतीर्थे श्री॥<sup>१६७</sup>

१६५. चित्त वित तस ब. । १६६. भेदी - ब. । १६७. संवत १८५४ ना वर्षे चैत्र विद ५ गुरौ लि. पं. जीवविजे० ॥ संवत १८५४ ना वर्षे चैत्रमासै कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ गुरुवासरै आणंदपूर नगरेइं पं. श्री दोलतविजय गणी तत् शिष्य पं. जीवविजय लिपीकृतान् श्रीमंगलं । -ब. ॥

# कविवर-श्रीहेमस्त्रप्रणीतो भावप्रदीपः

[ प्रश्नोत्तरकाव्यम् ]

म. विनयसागर

प्रश्नोत्तर काव्यों, प्रहेलिकाओं और समस्यापूर्ति के माध्यम से विद्वज्जन शताब्दियों से साहित्यिक मनोरंजन करते आए हैं। प्रश्नोत्तर काव्य आदि चित्रकाव्य के अन्तर्गत माने जाते हैं। अलङ्कार-शास्त्रियों ने शब्दालङ्कार के अन्तर्गत ही चित्रकाव्यों की गणना की है। चित्रगत प्रश्नोत्तरादि काव्यों का विस्तृत वर्णन हमें केवल धर्मदास रचित विदग्धमुखमण्डन में प्राप्त होता है, जिसमें ६९ प्रश्नकाव्यों का भेद-प्रभेदों के साथ वर्णन प्राप्त है। उसको काव्यरूप प्रदान करने वाले किवयों में जिनवह्मभसूरि (१२वीं) का मूर्धन्य स्थान माना जाता है। उनके ग्रन्थ का नाम 'प्रश्नोत्तरैकषष्टिशतक काव्य' है। सम्भवतः इसी चित्रकाव्य-परम्परा में अथवा जिनवह्मभ की परम्परा में हेमस्त्रप्रणीत भावप्रदीप ग्रन्थ प्राप्त होता है।

किव हेमरत पूर्णिमागच्छीय थे। हालांकि भावप्रदीप में गच्छ का उन्नेख नहीं किया गया है किन्तु अन्य साधनों से ज्ञात होता है। हेमरत द्वारा स्वलिखित प्रति में आचार्य का नाम देवतिलकसूरि लिखा है। (पद्य ११८)। किन्तु अन्य प्रति में आचार्य का नाम ज्ञानितलकसूरि भी मिलता है। इसके द्वितीय चरण में कुछ अन्तर है किन्तु तृतीय और चतुर्थ चरण के पद्य ११८ के समान ही है। यह ग्रन्थ 'नर्मदाचार्य' की कृपा से लिखा गया, किन्तु यह नर्मदाचार्य कौन है? शोध का विषय है। हेमरत्न के गुरु पद्मराज थे। गोरा बादिल चिरत्र में इनको 'वाचक' शब्द से सम्बोधित किया गया है। सम्भव है बाद में ये उपाध्याय बने हो। हेमरत्न के सम्बन्ध में और कोई इतिवृत्त प्राप्त नहीं होता है।

इस काव्य की रचना विक्रम संवत १६३८ आश्विन शुक्ता दशमी, के दिन बीकानेर में की गई। (प्रशस्ति पद्य १)

इस भावप्रदीप की रचना बच्छावत गोत्रीय श्रीवत्सराज की परम्परा

में संग्रामिसह के पुत्र मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र के अनुरोध पर की गई है, जो कि बीकानेरनरेश रायिसहजी के मित्र थे। बीकानेर के विरष्ठ मन्त्री थे। नीतिनिपुण थे और लब्धप्रतिष्ठ थे (पद्य ५, ६, ७)। मन्त्री कर्मचन्द बच्छावत न केवल बीकानेरनरेश के ही मित्र थे अपितु सम्राट् अकबर के भी प्रीतिपात्र थे और पोकरण के सुबेदार भी थे।

स्वयं पूर्णिमागच्छ के होते हुए भी खरतरगच्छ के मन्त्री कर्मचन्द बच्छावत के अनुरोध पर इस काव्य की रचना यह प्रकट करती है कि उस समय में गच्छों का और आचार्यों का अपने गच्छ के प्रति कोई विशेष आग्रह नहीं था। मुक्त हृदय से दूसरे गच्छों के श्रावकों के अनुरोध पर भी साहित्यिक रचना किया करते थे। यह हेमरत का उदार दृष्टिकोण था।

इस प्रश्नोत्तर काव्य में १२१ अथवा १२४ पद्य है। किव ने इस लघु कृति में अनुष्टुप्, उपजाित, वंशस्थ, भुजङ्गप्रयात, शार्दूलिवकीडित, और स्नाधरा आदि छन्दों का स्वतन्त्रता से प्रयोग किया है। यह प्रश्नोत्तर काव्य है। जिसमें श्लोक के अन्तर्गत ही प्रश्न और उत्तर प्रदान किए गए है। इसमें प्रश्नोत्तरैकषटिशतक के समान श्लोक के पश्चात् अनेकविध जाितयों में संक्षिप्त उत्तर नहीं लिखे हैं। काव्यगत अलङ्कारिवधान प्रस्तुत करना इस छोटे से लेख में सम्भव नहीं है।

इसकी प्राचीनतम दो प्रतियाँ राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में प्राप्त है, जिनका नम्बर इस प्रकार है - २००८७। एक प्रति किव द्वारा स्विलिखित है, दूसरी प्रति उसकी प्रतिलिपि ही है। जिसमें दो श्लोक प्रशस्ति के रूप में विशेष रूप से प्राप्त होते हैं। दूसरी प्रति में प्रशस्ति पद्य २ में किव हेमरत्न को भी आचार्य माना गया है। प्रति का पूर्ण परिचय इस प्रकार है -

प्रति की क्रमाङ्क संख्या २००८७, इस प्रति की साईज २५x१०.९ से.मी. है। पत्र संख्या ४ है। प्रति पृष्ठ पंक्ति १७ और प्रति पंक्ति अक्षर ५२ है। विक्रम संवत् १६३८ की स्वयं लिखित प्रति है।

दूसरी प्रति का क्रमाङ्क प्राप्त नहीं कर सका हूँ।

### कवि की अन्य रचनाएँ

हेमरत्न प्रणीत संस्कृत भाषा में अन्य कृतियाँ प्राप्त नहीं हैं, किन्तु राजस्थानी भाषा में इनकी कई कृतियाँ प्राप्त हैं। इसमें से 'गोरा बादिल चिरित्र' ऐतिहासिक चौपई ग्रन्थ है। इस चौपई की रचना १६४५ सादड़ी में की गई है और ताराचन्द काविड़या के अनुरोध से इस रचना का निर्माण हुआ है। ताराचन्द काविड़या महाराणा प्रताप के अनन्यतम साथी, मेवाड़ के सजग प्रहरी, दानवीर और इतिहास प्रसिद्ध भामाशाह के छोटे भाई थे, तथा उस समय सादड़ी में विशिष्ट अधिकारी थे। किव स्वयं लिखता है –

पूनिमगछि गिरुआ गणधार, देवतिलक सूरीसर सार ।
न्यानितलक सूरीसर तास, प्रतपइं पाटइ बुद्धिनिवास ॥६१०॥
पदमराज वाचक परधांन, पुहवी परगट बुद्धि-निधान ।
तास सीस सेवक इम भणइ, हेमरतन मिन हरषइ घणइ ॥६११॥
संवत सोलइ-सइं पणयाल, श्रावण सुदि पंचिम सुविसाल ।
पुहवी पीठि घणुं परगडी, सबल पुरी सोहइ सादडी ॥६१२॥
पृथ्वी परगट 'रांण प्रताप', प्रतपइ दिन-दिन अधिक प्रताप ।
तस मंत्रीसर बुद्धिनिधांन, कावेड्यां कुलि तिलक समांन ॥६१३॥
सांमिधरिम धुरि 'भांमुसाह', वयरी-वंस विधुंसण राह ।
तस लघु भाई ताराचंद, अविन जाणि अवतरीउ इंद्र ॥६१४॥

ताराचन्द कावड़िया के सम्बन्ध में पुरातत्त्वाचार्य पद्मश्री मुनि जिनविजयजी 'गोरा बादिल चरित्र' के 'एक पर्यालोचन' पृष्ठ ५ पर लिखते हैं :-

"इस रचना के मुख्य प्रेरक थे मेवाड़ के महाराणा प्रताप के अत्यन्त विश्वस्त राजभक्त, और देशभक्त, राजस्थानीय महाजनों के मुकुटसमान भामाशाह के भाई ताराचन्द! सादड़ी नगर उस समय मेवाड़ राज्य की दक्षिण पश्चिमी सीमा का केन्द्रस्थान था। ताराचन्द वहाँ पर महाराणा प्रताप के शासन का एक विशिष्ट स्थानक अधिकारी था। किव हेमरत्न भामाशाह और ताराचन्द के धर्मगुरुओं के शिष्य-समूह में से एक प्रमुख व्यक्ति थे।"

यह रचना उदयपुर राज्य और राजवंश से विशिष्ट सम्बन्ध रखने वाले ओसवाल जाति के काविड़िया गोत्रीय ताराचन्द के आदेश और अनुरोध से बनाई गई है। ताराचन्द जैसा कि ऊपर कहा गया है, भामाशाह का छोटा भाई था। महाराणा प्रताप का वह विश्वस्त राज्याधिकारी था। भामासाह के साथ वह भी प्रसिद्ध हल्दीघाटी के युद्ध का एक अग्रणी योद्धा और सैन्य संचालक था। उसने चित्तोड़ के राजवंश की रक्षा के निमित्त अनेक प्रकार से सेवा की थी, अत: उसके मन में चित्तौड़ के गौरव की गाथा का गान करवाने का उल्हास होना स्वाभाविक ही था। (पृष्ठ ७)

यह पुस्तक 'गोरा बादिल चरित्र' के नाम से मुनिजी द्वारा सम्पादित होकर राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर से सन् १९६८ प्रकाशित हो चुकी है।

इस कृति के आधार से निश्चित तो नहीं किन्तु यह सम्भावना की जा सकती है कि वीर भामाशाह कावड़िया भी पूर्णिमागच्छीय थे।

किव की अभयकुमार चौपई, महीपाल चौपई (र. सं. १६३६), शीलवती कथा (र. सं. १६१३, पाली) लीलावती कथा (र. सं. १६१३), रामरासौ और सीता चरित्र आदि नाम की भी अन्य रचनाएँ उपलब्ध है। इन कृतियों का उल्लेख मुनिजी ने-गोरा बादल चरित्र, एक पर्यालोचन-पृष्ठ ७ में किया है।

कविवर-श्रीहेमरत्नप्रणीतो

### भावप्रदीपः

[प्रश्नोत्तरकाव्यम्]

॥ श्रीगणेशाय नम: ॥

श्रीमते <sup>१</sup>विश्वविश्वेकभास्वते शाश्वतद्युते । केवलजानिगम्याय नमोऽनन्ताय तेजसे ॥१॥

१. ब. समस्त ।

<sup>र</sup>प्रभूतभूतिप्रविभूषिताङ्गकः, प्रध्वस्तकामः समकामदः सदा । प्रभुर्विभूनामपि मङ्गुलार्गलः, स मङ्गलं रातु वृषध्वजो विभुः ॥२॥ पञ्चाननाङ्कितजगत्प्रभुपादसेवी, श्रीमद्विलोलविकसत्करपुष्कराग्रः । विघ्नीघपाटनपटुः कटुकष्टकुट् च, निर्मातु मङ्गलगणं गुणवानाणेशः ॥३॥ नमः समाजस्थितसज्जनेभ्यः, प्रसन्नचित्ताननपङ्कुजेभ्यः । परप्रणीतान्यपि ये वचांसि, स्वभावभेदै: परिभुषयन्ति ॥४॥ श्रीविक्रमाख्ये नगरे गरिष्ठः. प्रज्ञाप्रपञ्चेऽस्तितमां पटिष्ठः । मन्त्रप्रयोगे प्रथितप्रतिष्ठः. श्रीकर्मचन्द्रः सचिवो वरिष्ठः ॥५॥ तत्प्रार्थनाजातपरप्रमोद:, स्वान्तस्य तस्यैव विनोदहेतो: । कुर्वे नवीनं कमनीयकाव्यै-भीवप्रदीपाभिधशास्त्रमेतत् ॥६॥ श्रीवत्सराजान्वयमौलिरत्नं, संङ्ग्रामसिंहस्य तनूजराज: । श्रीराजसिंहाभिधभूपमित्रं<sup>६</sup>, श्रीकर्मचन्द्र: सचिव: स जीयातु ॥७॥ न हि निखिलशास्त्रबोधो मतिरपि विमला न तादृगभ्यास: । किन्तु कवित्वे शक्तिर्गुरुरेकः कारणं मेऽत्र ॥८॥ सस्नेहमुत्सङ्गनिवेशितोऽम्बर्या, वक्षोजविध्वस्तै-महेभकुम्भया । शीर्षं गणेश: खल् शङ्कया कया, पस्पर्श विद्वन्! वद पृच्छ्यते मया॥९॥ कुम्भावभावपि ममाङ्गतस्य मात्-र्लग्नाववश्यमिति वक्षसि शैशवे [स:]\* । [श]ङ्कासमाकुलितचित्तमिभाननः स्वौ, कुम्भौ करेण झटिति स्पृशति स्म तेन ॥१०॥ काचिच्चञ्चललोचना नववधः प्रातर्मखं दर्पणं, प[श्यन्ती शि]थिलालकं पतिरतिप्राग्भौरं-संसूचकर्म् ।

२. ब. प्रचुर । ३. ब. समग्रं सकलं समिति । ४. ब. मंगुलशब्दो देश्यः, मंगुलस्य अशोभनस्य अर्गलेति, कल्याणः । ५. ब. कट्वकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोरित्यमरः । ६. ब. प्रती 'मन्त्री' इति पाठान्तरम् । ७. ब. केवलः । ८. अ. ब. पार्वत्या । ९. अ.ब. तिरस्कृतौ । १०. अ.ब. आधिक्यं । ११. अ.ब. कथकं । \*-[]अ. पुस्तके भग्नपत्रत्वादत्र कोष्ठकान्तर्गतांशो ब. पुस्तकादुद्धृतः । एवमग्रेऽपि सर्वत्र कोष्ठकान्तर्गतांशाः ब. पुस्तकादेवोपन्यस्ता ज्ञेया ।

एकान्तस्थितिमाश्रिताऽपि च पराङ्वक्त्राऽपि भूरित्रपा-

वीचिव्यहैनिमग्निचत्तचटुला क[स्मादकस्मा]दभूत् ॥११॥ पृष्ठस्थितस्य निजजीवितवल्लभस्य, वक्त्रारविन्दममलं मुकुरे समीक्ष्य । श्रीकर्मचन्द्रसचिवेश्वर ! तेन चैषा, [लज्जावती नव]वधू: सहसा बभूव ॥१२॥ काचित्कुलीनवनिता रमणेन दूर-देशात् सुकङ्कणयुगं प्रहितं निरीक्ष्य । नि:श्वासदग्धदशनच्छदैं[माप्तदु:खा], [गूढं रु|रोद वद कोविद कि निदानम् ॥१३॥ नाथ: स मां विरहविह्नकृशां न वेत्ति, नाऽसावपीह विरहा[तुरचित्तवृ]त्तिः । [नो चेत् कथं पृथुलकङ्कणयुग्ममत्र] मां मुञ्जतीति विगणर्य्यं वधू रुरोद ॥१४॥ काचिन्निजं कान्तमवेक्ष्य कोप-कल्लोल[मग्नावनताननाऽभूत्] । [तत्कारणं पृच्छति सत्यमुष्मिन्ँ], [किं दर्पणं तस्य] करे [ददौ सा]॥१५॥ अन्याङ्ग[नानय]नपङ्कजचुम्बनेन, कृष्णाधरस्ति[लकचित्रितभालदेश:] । [अप्येष पुच्छति रुडुद्भवहेतुमस्मात्, सा दर्पणं वितराति स्म करे तदीये ॥१६॥ [काचि। त्रिजे भर्तरि द्रदेशं, सम्प्र[स्थिते तत्कुशलेषिणी सा] [गच्छाऽऽशु माऽभूतव] दर्शनं मे, शीघ्रं वधूरेवमुवाच कस्मात् ॥१७॥ तद्यान-माकर्ण्य मृतामवश्यं, मुक्त्वा [समायाति तदेत्य वर्ल्पु]। [मा दर्शनं मेऽस्तु] ततो मृताया, नाथस्य शीघ्रं बहुजीवितस्य ॥१८॥ पूर्णेणाङ्कमुखी १ महं हृदि मम त्रस्तैणशावेक्षणे,

[त्वामद्येव विभावयामिँ च नि]जप्राणप्रिये<sup>१२</sup> स्वप्रियाम् । इत्थं जल्पति हास्यपेशलैं-मथो सा स्वं करेणे<sup>४</sup> दुतं,

गल्लं फुल्लमधूकपुष्पपुलिनं पस्पर्श वस्त्रेणै [किम्] ॥१९॥ पूर्णे चन्द्रमसि ध्रुवं<sup>१६</sup> बत भवत्येव स्फुटं लाञ्छनं,

नाऽस्मद्वक्त्रसरोरुहेऽतिविमले कालुष्यलेशोऽपि च तज्ज्ञाने खलु सोपमान[वचसाऽनेना]ऽधुना कज्जलं,

गल्लेऽस्तीति ममार्ज<sup>१७</sup> लोलनयना हस्तेन गल्लस्थलम् ॥२०॥

१. अ.ब. बह्बी । २. अ.ब. समूहं । ३. ब. दन्तपत्रम् । ४. ब. गुप्तम् । ५. अ. पीडितव्यापारः । ६. ब. विचार्य । ७. ब. भर्तिर । ८. अ. गमनम् । ९. ब. चारु । १०. ब. अङ्ककलङ्कोऽभिज्ञानम् । ११. ब. जानामि । १२. ब. भर्त्तिर । १३. ब. मनोहरं । १४. ब. कृत्वा । १५. ब. सह । १६. ब. निश्चितम् । १७. ब. मृजूष् शुद्धौ ।

निशि वियोगवती युवती गृहे, विधुमवेक्ष्य नभोऽङ्गणमध्य[गम्]।
[स]खि समानय दर्पणमाशु मे, क्षुरिकया सह चेति कथं जगौ ॥२१॥
दहित मामयमेणभृदातुर्गं, चरित चाऽिल ! दवीयिस पुष्करे ।
तदमुकं मुकुरान्तरुपागतं, क्षुरिकया प्रैविभेत्तुमिदं जगौ ॥२२॥
मातुर्निजायाः पदपद्मयुग्मं, नत्वोपिवष्टः पुर एकदन्तः ।
पस्पर्श मूर्द्धानमसौ करेण, कस्मादकस्माद् वद कोविदेन्द्र! ॥२३॥
गौरीपदाम्भोजयुगप्रजाता-रुणत्वरक्तीकृतमीक्ष्य भूतलम् ।
स्वकुम्भिसन्दूरजोभिशङ्कया, मूर्द्धानमेष स्पृशित स्म तेन ॥२४॥
सुदित पृच्छितं भर्त्ति गद्धता-मितरदेशगतोऽभिमतं तव ।
अहिमह प्रहिणोमिं किमादरात्, तदनु साम्भिस किं तिलमिक्षपत् ॥२५॥
तिलकयोर्व्यितषङ्गवशादसौ, तिलकमेव निवेदयित स्म तम् ।
इतरथा कथमेव जले तिलं, क्षिपित मन्त्रिप ! कं परनामिन ॥२६॥
कश्चिद् युवा युवितवक्त्रमवेक्ष्यमाणो,

नाऽहं विलोचनयुगो धृतिभाग् भवामि । एवं विचिन्तयति चेतसि तावदासीत्,

सद्यः स कोविद वदाशु कथं षडक्षः ॥२०॥
स स्वकीयनयनद्वयमध्ये, बिम्बितप्रियतमानयनोऽभूत् ।
एवमेर्वं सिचवेश्वर ! सद्य, सोऽभवन्नयनषट्कसमेतः ॥२८॥
तदिभलिषतकान्तोपान्ततोऽभ्यागताशु, स्ववगततदिभिप्रायाः समागत्य दूती ।
तरुणमरुणरिश्मस्पृष्टपङ्केरुहास्यं, जनवृतमिभ दृष्ट्वा सर्षपं तत्करेऽदात् ॥२९॥
शीघ्रमेव समागत्य दूत्याऽथ कृतकृत्यया ।
सर्षपस्यैव दानेन सिद्धार्थोऽसीति सूचितम् ॥३०॥
अभ्यर्णमभ्येत्यं हरेः स्वभर्तुः, प्रसन्नचित्ता परिरम्भणाय ।
जगाम कस्माच्चटुवादिनोऽपं , पराङ्मुखी सत्वरमेव पद्मा ॥३१॥

१. ब. खे । २. ब. चन्द्रं । ३. ब. विदारियतुं । ४. ब. सित । ५. ब. इति इति त्वया । ६. ब. ईप्सितं । ७. ब. प्रेंखयामि (प्रेषयामि?) । ८. ब. अलुकामास: । ९. ब. षड् अक्षीणि यस्य, नयनानां षट्कं तेन । १०. ब. अनेन प्रकारेण । ११. ब. शोभनोऽवगतस्तस्या अभिप्रायो यया सा । १२. ब. समीपमागत्य । १३. ब. चटुचाटुप्रियप्रायं ।

तद्वक्ष:स्थलकौस्तुभे निजवपुर्दृष्ट्वेति जातभ्रमा,

नूनं नाऽहमरेर्मुरस्य हृदि यत् पश्यामि तत्राऽपराम् । पद्मा तेन समौनकोपकलिता -ऽभ्यणं समेताऽपि च,

र्ग्रास्तप्रीतिभरौ स्म गच्छित शृणु श्रीकर्मचन्द्रप्रभो ! ॥३२॥ प्राणिप्रये <sup>४</sup>दभ्रदिनैः समेते, देशान्तरादर्दितं सम्प्रयोगर्म् । काचित्कुरङ्गीनयना निशायां, मूर्द्धन्यमुञ्जत्कथमाशु पुष्पम् ॥३३॥ अहं पुष्पवती कान्ता कथमायामि साम्प्रतम् । सम्भोगो नाऽधुना योग्यश्चेति ज्ञापितमेतया ॥३४॥ काचित्कोविद ! कामिनीकरतलेनाऽऽदाय किञ्चित्फलं,

दृष्ट्वा दृष्टमिदं खगेन सहसा केनाऽपि किञ्चिततः । शङ्कासङ्कुचिता सती निजकरे सा वै दधौ दर्पणं,

नि:शङ्काऽथ निराचकार च करात्मौनान्विता तत्फलम् ॥३५॥ विलोक्य बिम्बाह्मफलं शुकेन, दष्टं मृगाक्षी पितखिण्डतौष्ठी । सादृश्यशङ्का धृतदर्पणासीद्, विचिन्त्य तत्कुत्सितमित्यमुञ्चत् ॥३६॥ पत्युः प्रवाससमये मृगशावकाक्ष्या, पृष्ठे(ष्टे?) पुर्रं भवित किह<sup>९</sup> समागमस्ते । स स्वाग्रजं सित पितर्यपि वल्लभायाः, कस्माददर्शयदसौ वद कोविदाऽऽशु ॥३७॥ ज्येष्ठदर्शनतोऽनेन ज्येष्ठमासो निवेदितः ।

तद्देशमागते वाऽस्मिन् भविष्यति ममागम: ॥३८॥ काचित्कोपनिरुद्धवागवनर्तां-ऽश्रुव्याप्तनेत्राम्बुजा,

पत्याऽगो<sup>१</sup>- ऽनलदह्ममानहृदयाऽपार्स्ते-प्रियप्रीतवाक् । कुर्वाणे निजभर्त्ति <sup>१</sup>क्षुतमथो सा कि ललाटे निजे,

चित्रं रत्नकरैविचित्रमकरोदाचक्ष्व तत्कारणम् ॥३९॥ कुर्वाणे मम भर्त्तरि <sup>१</sup>श्वुतमहं जीवेति वाक्यं न चे-ज्जल्यान्याश् तदा व्रजल्यवसस्थ्रेद् वच्मि <sup>१</sup>तैद्याति मे ।

१. ब. व्याप्ता । २. ब. ध्वस्त । ३. ब. समूह । ४. तूर्यदभ्रं पुरस्फिरमिति कोश: । ५. व. याचयित सित । ६. ब. संवेशनं । ७. ब. प्रयाण । ८. ब. पुरा योगे भिवष्यतार्थता । ९. ब. कदा । १०. ब. प्रतौ विनता इति पाठ: । ११. अ. अपराध: । १२. ब. निराकृता । १३. ब. छिका । १४. ब. प्रतिमहं । १५. ब. तिहं ।

मीनं मानभवं विचार्य तरुणीति स्वे ललाटेऽकरो-

च्चित्रं तेर्नं निवेदितं स्फुटतरं जीवेति वाक्यं यत: ॥४०॥ कश्चितृषार्तो मितमात्रिदाघे, हस्तस्थनीरोऽपि. निजालयस्थ: । किं शून्यमालोक्य पपौ न वारि, ब्रूतात् कवे ! तद्यदि बुध्यसे त्वम् ॥४१॥ दृष्ट्वाऽऽकाशं शून्यमृक्षेन्दुसूर्येः, सायं नाऽयं नीरपानं चकार । विश्वव्यापिप्रोज्ज्वलश्लोकराशे !, वर्यं वार्यत्राऽखिलैर्यन्मुनीशैः ॥४२॥ कश्चिद्विनीतो नयविद्गृहस्थो, वर्यं वार्यत्राऽखिलैर्यन्मुनीशैः ॥४२॥ कश्चिद्विनीतो नयविद्गृहस्थो, वर्यं नाम नासीन्न तथापि निन्द्यः ॥४३॥ वयितं जीवमुदीक्ष्य समुद्रतं, न – निमतः स निजं न तु सद्गुरुम् । सचिवशेखर ! तेन स ना जनै-र्नयरतैरिप नैव विगर्हितः ॥४४॥ काचित्कुरङ्गीनयना निशाया–मात्माननस्पद्धिनमिन्दुमुच्चैः । आलोक्य भूस्थाऽपि कुत्हलाय, जग्राह हस्तेन कथं वदाऽऽशु ॥४५॥ दर्पणान्तःप्रविष्टं सा रोहिणीरमणं निशि । तैरसा करसाच्वक्रे कौतुकेनैव कामिनी ॥४६॥ गगनसरसि हंसीभृत एणाङ्किबम्बे–

ऽभिमतरमणधिष्य्यौ-म्भोजभृङ्गीभवित्री<sup>१०</sup> । अपि पथि जनयुक्ते स्वैरिणी किं प्रयान्ती,

नयनविषयमेषा न प्रयाता जनानाम् ॥४७॥ धृतिसताम्बरभूषणलेपना, ''कुमुदराजिवराजितविग्रहाँ' । धवलिते शशिनाऽखिलभूतले, न कुलटेति गता पथि लक्ष्यताम् ॥४८॥ कश्चित् कथिङ्चित्रिजिचत्तचारी, लब्धः सुमाल्याम्बरभूषणोऽपि । भुक्तः स नो 'वासकसज्जयाऽपि, नाऽसावपीमां बुभुजे किमेतत् ॥४९॥ कान्तारूपमतीवसुन्दरमलङ्कारैरलं भूषितं,

दृष्ट्वा मन्मथमूर्च्छितः स तरुणश्चके स्वशुकच्युतिर्म् ।

१. चित्रकरणेन । २. यशस्विन् । ३. ब. निष्कपटं । ४. ब. जीवं । ५. ब. आकाशे । ६. ब. निन्दित: । ७. ब. वेगेन । ८. ब. कराधीनं करसात् । ९. ब. गृहं । १०. ब. अमृङ्गी भृङ्गी भिवष्यित । ११. ब. श्वेते तु तत्र कुमुदम् । १२. ब. इन्द्रियायतनमङ्गविग्रहाविति । १३. ब. भवेद्वासकसज्जासौ सज्जिताङ्गरतालया । निश्चित्यागमनं भर्तुर्द्वारेक्षणपरा यथा । १४. ब. शुक्रं रेतो बलं वीर्यं ।

सद्यः प्रेक्ष्य मनोभवोपमिमदं साऽपि द्रवत्वं गता सम्भोगः प्रथमस्तयोरिति गतः सिद्धि न तत्र क्षणे ॥५०॥ परस्परं रूपविमोहितौ तौ. गतौ द्रवत्वं समकालमेव ।

ततस्त्रपाभारभरावभूताँ-मन्योन्यमेतेन न सङ्गसिद्धिः ॥५१॥ पाठान्तरम्<sup>र</sup> भर्त्तुर्वियोगेन विषण्णचित्ता, <sup>वै</sup>काचित् कुरङ्गीनयना निशीथे । उद्वेजकं<sup>र्र</sup> सर्वमपीति मत्वा, कस्मात्करानेणभृतः सिषेवे ॥५२॥

कुर्वन्त्येव ध्रुविमिति वधूश्चेतिस स्वे विचिन्त्य । तानत्रापि स्वपतिवपुषाऽऽलिङ्गितानिन्दुपादान् ,

तत्राप्येते शशधरकरी मत्पतेरङ्गसङ्गं.

प्रेष्ठान्कष्टादिप विरहिणी चक्रवाकीव भेजे ॥५३॥

<sup>६</sup> नैशसन्तमससञ्चयाहु – ग्रस्तदृक्प्रसरपङ्क्तिहयोऽपि ।

कोऽप्यचित्रितमपीह, सचित्रं, हस्तमैक्षत समस्तिमिदं किम् ॥५४॥

किमत्र चित्रं गगने निशायां, हस्तं स चित्रायुतमप्यपश्यत् ।

विचार्यते किं मुहुरेष चार्थों, दृष्टोऽपि नित्यं बहुभिः स्वनेत्रैः ॥५५॥

जित्वा रिपुबलमखिलं समिर्ति झटित्येव कर्मचन्द्र ! त्वम् ।

धृतजयलक्ष्मीकोऽपि हिं, नाऽतुष्यस्तत्र को हेतुः ? ॥५६॥

अधिकसूरतया समरोत्सवं, रचयतस्तव वीतिममं क्षणात् ।

सचिवशेखर ! तेन जिताप्यभू-त्र रितदा रितदािप पतािकनी ॥५७॥

युवा कोऽपि प्रातिवषमिविशिखो -द्वेजितमना

अमुञ्चद् बन्धूकप्रसवमुडुपास्यामभिमताम् । ततः साऽपि प्राप्य प्रियहृदयभावं स्मितमुखी,

हरिद्रामेवामुं कथय किममुञ्जत् कविवर ! ॥५८॥ बन्धूकपुष्पेन स मध्यमहः, संकेतहेतोः कथयाम्बभूव । सा दर्शयामास हरिद्रयाऽथो, दोषामदोषामिति मन्त्रिराज ! ॥५९॥

१. ब. बभूवतु: । २. ब. पाठान्तरेण । ३. ब. सती । ४. ब. उद्वेगकारकं । ५. ब. चन्द्रमा: कुमुदबान्धवो दशश्चेतवाज्यमृतसूस्तिथिप्रणी: । ६. ब. अन्धकारं । ७. पंक्तिशब्दो दशवाची, पंक्तिहया: यस्य । ८. ब. संग्रामे । ९. ब. बाणा:, विषमविशिखा यस्यासौ कामदेव: ।

काचित्पत्रममत्रमत्र मदनव्यापारवारः स्फुरत्-प्रीतिस्फातिकरं करेण सहस्रोन्मुद्वर्यै प्रियप्रेषितम् । अत्यौत्सुक्यभरं दधत्यपि पतिप्रीत्याथ तद्वाचने,

सैकाकिन्यपि तत्तथैव सचिरं संवृत्य तस्थौ कथम् ॥६०॥ पत्रं विलोक्य प्रियमुक्तमेषा, यावत्प्रवृत्ता खलु वाचनाय । तावज्जलं नेत्रयुगात्प्रभूतं, प्रवृत्तमेतेन न वाचितं तत् ॥६१॥ कश्चित् स्वकान्ताकरकुड्मलस्थं , मुक्ताफलानां निकरं निरीक्ष्य । प्रीतस्तम[त्तुं] स समृत्सुकोऽभृत्, किं कारणं तद्वद कोविदाऽऽशु ॥६२॥ सरक्तकान्ताकरकोरकस्थं , सद्दाडिमीबीजचयं विचिन्त्य । मुक्ताफलानामपि राशिमासी-ज्जग्धुं समासक्तमनाः स नाऽऽशु ॥६३॥ काचिदम्भोजमादाय प्रातः सौरभ्यसुन्दरम् । सादरं सदरा साऽथो कथ तदजहात् करात् ॥६४॥ निशि यदा ननु सङ्कुचितं कजं, सपदि तत्र गतोऽन्तरलिस्तदा । उषिस तित्रगृहीतिमदं तया, श्रुतरवं च ततो मुमुचे करात् ॥६५॥ पत्रं मधी लेखनिका प्रदीप: साऽप्यप्रमत्ता रमणे रताऽपि । एवं समग्रे मिलितेऽपि हेतौ, लिलेख लेखं न हि सा किमेतत् ॥६६॥ यावत्प्रवृत्ता लिखनाय लेखं, सम्मील्यँ वस्तृन्यखिलानि चैषा । तावत्प्रवृत्तं नयनाम्ब भृरि, तेनाऽलिखल्लेखमसौ न नारी ॥६७॥ र्कुमुद्वती भर्त्तरि हर्तुमुद्यते, हृद्यंशुपादै: प्रियविप्रयुक्ता । काचित्कलै: कोकिलकेलिवाक्यै:, किं दुस्सहैरप्यतिशर्म लेभे ॥६८॥ परभुता(तो) वचनानि कृह: कुई-रिति निशापतिनाशकराणि तै: । श्रुतिगतै: शशिरश्म्यतिपीडिता, विरहिणीति सुखं लभते स्म सा ॥६९॥ हृदो मुदः कारिणि पञ्चवक्त्रे, दातुं समालिङ्गनमागतेऽपि । गौरी गृहस्तम्भे°-मनन्तभीतिः, प्रत्यग्रहीत् कोपपराङ्मुखी किम् ॥७०॥

१. ब. प्रतौ 'व्यापारवारं' इति पाठः । ब. विस्तार । २. ब. वृद्धिकरं । ३. उद्घाट्य । ५. ब. किलका कोरकः पुमानित्यमरः । ६. ब. हन्तुं । ७. ब. एकत्रीकृत्य । ८. ब. कैरवाणां कुमुद्धती, चन्द्रे । ९. ब. सा. नष्टेन्दुकला कुहूः । १०. ब. स्थूणा स्तम्भ इत्यमरः ।

पञ्चास्ये निजनायके गृहलतादूर्ध्वं समागच्छित, क्षोणीभृत्तनयान्तिके तनुपरीरम्भार्यं सत्युत्सुकम् । वक्षोजप्रतिबिम्बिते दशमुखं मत्वा पुनस्तत्कृतं,

स्मृत्वा पर्वततोलनं पतनभीः स्तम्भं ततः साऽग्रहीत् ॥७१॥ सौमित्रिगत्मीयसहोदरस्य, पपात गमस्य पदोस्तदाशु । गमः सकोपं धनुषि स्वकीये, बाणं कृपाणं च करे चकार ॥७२॥ नखेषु गमस्य स निर्मलेषु, प्रविष्टवक्तः क्रमयोः समासीत् । गमस्तु तं ग्रवणमेव मत्वा, बाणं कृपाणं च करे चकार ॥७३॥ धृतनवैककलामयमूर्त्तये, शशभृते सखि सूक्ष्मपटाञ्चलः । वितरणीय इति प्रियसित्रधी , किमुदिता करमाशु तिग्रेदधी ॥७४॥ वह्षभे स ग्रतिसित्रिधमस्या, नव्यमिन्दुमवलोकयतीदम् । सख्युवाच नखरिक्षतिगुप्त्ये, साऽपि जारनखमाशु जुगोप ॥७५॥ काचित्प्रसन्ना प्रियवह्मभाऽपि, रहोविलीना प्रियवह्मभाऽपि । आलिङ्गनप्रहाँ मुदीक्ष्य नाथ, सा संवृताङ्गी किमुवाच मा मा ॥७६॥ नाऽऽलिङ्गनस्यावसग्रेऽस्ति तस्या, जाताऽधुनैवाऽस्ति रजःस्वला सा । इति प्रिया संवृतगात्रवस्ना, मा मेत्यमन्दं निजगाद नाथम् ॥७७॥ रुद्धव्योमघनोद्भवावतमसव्याप्तान्तग्रयां निशि,

त्रस्तारण्यमृगीक्षणा सहचरी धाम्नः स्वभर्तुः स्वयम् । यावन्निर्भर<sup>९</sup>-नृपुराखमसावभ्यर्णमभ्यागता,

तावत्तत्पितनाऽऽशु मिन्दरमिणिविध्यापितः किं वद ॥७८॥ अन्याङ्गनासुरतिचह्नविचित्रिताङ्गः, प्राप्तोऽस्ति केलिशयनं स यदा तदैव । कान्तां निजामथ विलोक्य समापतन्तीं, तद्भीतिभिन्नहृदयो हरित स्म दीपम् ॥७९॥ कुँ ड्येषु कार्तस्वरमिन्दराणा-मेणाङ्कमुख्यः प्रतिबिम्बितानाम् । वक्त्राण्यपश्यन् वपुषां निजानां, नाङ्गानि नाट्यावसरे किमेतत् ॥८०॥

१. ब. अङ्कपाली परीरम्भः । २. ब. लक्ष्मणः । ३. ब. दातव्यः । ४. ब. पार्श्वे । ५. ब. आच्छादयामास । ६. ब. पुर्नभवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरेऽस्त्रियामित्यमरः । ७. ब. उत्कण्ठितं । ८. उच्चैः । ९. ब. बिलष्ठ । १०. ब. अस्तं प्रापितः । ११. अ. भित्ति । १२. स्वर्णमिन्दर ।

ताः शारदेन्द्पमपाण्ड्वक्ताः, कायेन चामीकरतुल्यभासः । तस्मादिमा: काञ्चनभित्तिभागे, वक्त्राण्यपश्यत्र हि शेषमङ्गम् ॥८१॥ काचित्रिशि व्योमगतेव देवी, वातायनस्योपरि संस्थिताऽपि । अलक्षिताऽलक्षितसौधमुच्चै-रेतत् किमासीद् वद कोविदाशु ॥८२॥ शीतांशरिमप्रकरावमग्ने सा स्फाटिके सौधतले निषण्णा। अलक्षिताधःस्थितसौधमेवं , देवीव लोकैर्ददृशेऽम्बरस्था ॥८३॥ कश्चित्करेण्-र्मदिसक्तरेणुः, प्रत्यापतन्तं कृतकोपमाशु । आत्मानमेवाऽभिद्धाव द्रा-दाचक्ष्व किं कारणमत्र दक्ष ! ॥८४॥ ऊर्मो महत्यम्बुनिधेरिभेशः, प्रत्यापतन्तं प्रतिबिम्बितं सः । आत्मानमेवं<sup>6</sup> प्रविलोक्य कोपा-दन्येभशङ्कोऽभिद्धाव दूरात् ॥८५॥ यद्गेश्म वर्षास्विप वारिदाना-माऽभेदि वार्भिन कदापि मध्ये । तत् किं विभो: कस्यचिदम्बुयोगं, विनाप्यभूद् वारिमयं निशासु ॥८६॥ <sup>९</sup>शिशिररश्मिकरप्रकरप्लुतं<sup>१०</sup>, <sup>१९</sup>प्रवरचन्द्रमणिस्फुटकुट्टिम<sup>म्</sup>रें । सदनमम्बु विनाऽपि निशास्वभूत्, सचिवशेखर ! वारिमयं तत: ॥८७॥ वारिकेलिसमये वनिताभि-लिब्धमिनसिमधां हि विनाऽपि । अन्वभावि शिशिरं पुनरुष्णं, किं तदेव सलिलं सरसोऽन्त: ॥८८॥ उपरि तरणितापादुष्णमन्तस्तदम्भः,

शिशिरमिति विदान्तच्चकुरुष्णं च शीतम् । विषमविशिखतापादुष्णमङ्गेषु लग्नं,

तिदतरिमिति शीतं ैवाविदाञ्चकुरेता: ॥८९॥ भूँरिभसङ्गसमुद्धतकोकिल-भ्रमरराजिविराजितकाननम् ।<sup>१५</sup> निजगृहं पथिकश्चिरमागत:, कथमुदीक्ष्य तथैव पुनर्ययौ ॥९०॥

१. अ.ब. गवाक्षस्य । २. ब. लग्ने । ३. ब. सौधं तु नृपमन्दिरम् । ४. ब. अनेन प्रकारेण । ५. अ. हस्ति । ६. अ.ब. सम्मुखमागच्छन्तं । ७. ब. प्रतिफलितं । ८. ब. प्रतौ 'आत्मानमेव' इति पाठः । ९. ब. शीते तुषार शिशिर इति । १०. ब. लापिनं । ११. ब. श्रेष्ठ । १२. ब. कुट्टिमत्वेस्यबद्धभू । १३. ब. विद् ज्ञाने । १४. ब. वसन्त इक्षुः सुरभिः पुष्पकालो बलाङ्गकः । १५ वाटिकां ।

वसन्तेऽप्यायाते गलदवधिरेष प्रियतमः,

समायातो नेति स्फुटितहृदया सा यदि मृर्तौ । तदा किं हर्म्येण ध्रुवमथ यदा सा न च मृता, तदाप्यस्नेहायां कृतिमह गृहेणेति वलित: ॥९१॥

पौरा रदानेव पुर:सराणाँ-मालोकयामासुरिभेश्वराणाम् ।
नाङ्गानि कस्माद् ददृशुः कदाचित्, किं चात्र चित्रं वद कोविदाशु ॥९२॥
विसृत्वरा राजपथे निशायां, बंहीयसौ संतमसेन नागाः ।
लक्षत्वमेते न गताः सदृक्त्वाद्दन्तास्तु दीप्तं दधुरुज्ज्वलत्वात् ॥९३॥
जग्धुं समायातमपि स्वधान्यं, न त्रासयामेणगणं बभूवुः ।
केदारगोप्यः कथमेष चापि, नाऽऽदात् क्षुधात्तोऽपि हि शालिसस्यम् ॥९४॥
केदारगोपी कलगानमग्ना, जक्षुः कुरङ्गा न हि शालिसस्यम् ।
ता अप्यतोप्यऽक्षिदिदृक्षयापि, न त्रासयामेणगणं बभूवुः ॥९५॥
कश्चिदतः काञ्चनमेव लातुं, कृत्वाऽपि वित्तं निजहस्तमध्ये ।

बध्वा रजःपोट्टलिकां स गेहे, समागतः किं वद चित्रमेतत् ॥९६॥ वित्तं कराद्व्यग्रतयाऽस्य मार्गे, पपात धूलीपिहिते<sup>९</sup> ततः सः । तत्रत्यधूलीपटलं प्रमील्य, तच्छोधनायाशु गृहं निनाय ॥९७॥

तनुसुतनुरिरंसुं:° कामधामोज्ज्वलश्री-

रुषसि गृहवनान्तर्गन्तुकामाप्यवश्यम् । अनुवलति ततः स्म व्यायकेशाकुलाक्षी,

सचिकतिमिति कस्माच्चिन्त्यमेतद् वदाशु ॥९८॥ गृहवनमुपयाति यावदेषा, भ्रमरगणोऽभिमुखं दधावै तस्या: । वदनसुरभितानुबद्धलोभ:, प्रतिवलिति स्म ततो झटित्यमुष्मार्त् ॥९९॥

१. अ. मुई तस सनेही गई रही तउ तुट्टउ नेह । जिणि परि तिणि परि धण गई वरिस सुहावा मेह । २. ब. प्रतौ तथाप्यस्त्रेहायामिति पाठ: । ३. ब. अलं । ४. ब. अग्रे गच्छतां। ५. अ. ब. प्रसरणशीलो । ६. ब. प्रचुरेण । ७. ब. सवर्णत्वात्। ८. ब. भक्षयामासु: । ९. ब. संवृत्तं पिहितं छत्रं। १०. ब. कीडितुकामा: । ११. ब व्यस्त इति इति वा । १२. सन्मुखं जगाम । १३. अ. वनात्; ब. अस्मात्।

देवीयसोप्यागतमात्मकान्तं, संवीक्ष्य काचित् कृतमौनमेव ।
एत्यालयान्तः पुरुह्तपूष-स्वर्गापगाः पूज्य किमर्दति स्म ॥१००॥
इन्द्राद्रवेश्चापि सुरापगाया, अक्ष्णां कराणां च तथा मुखानाम् ।
प्रत्येकमेवेति सहस्रमेषा, यतो ययाचे तदुपास्तिकामा ॥१०१॥
क्रीडाशुकं पञ्चरतः प्रभाते, काचिन्निजे पाणितलेऽभिनीयै ।
अध्यापनायोद्यतमानसाऽपि, साऽध्यापयामास कथं न पश्चात् ॥१०२॥
रैदा दाडिमीबीजतुल्या मदीयाः, शुकः प्रातरस्ति क्षुधार्तः स नूनम् ।
अतश्चञ्च्रघातं समाशंक्य तन्वी, न तं पाठयामास सा केलिकीरम् ॥१०३॥
प्रियस्य काचिद् रेभसाऽभिसारिणी , समेत्य सद्माङ्गणमुज्ज्वलं निशि ।
तमङ्गुलीयेन निहत्य सत्वरं, विवेश पश्चादिति किं तदिङ्गितम् ॥१०४॥
अनण्मणिनिबद्धं प्राङ्गणं तस्य धाम्नः,

प्रतिफलितघनान्तस्तारतारं समीक्ष्य । सलिलमिति विचिन्त्य व्यग्रचित्ता तदन्त-

र्गमनमभिलषन्ती मुद्रया तज्जघान ॥१०५॥ काचित्कान्ता भर्तुरालोक्य वक्त्रं, <sup>१</sup>चैञ्चच्चन्द्राखण्डबिम्बानुकारि । चिक्षेपाऽक्ष्णोः किं पुनः कज्जलं सा, विद्वन्नेतद्भावमावेदयाऽऽशु ॥१०६॥ पत्यः साऽधरपल्लवे<sup>११</sup> नयनयोरात्मीययोरञ्जनं,

दृष्ट्वा चुम्बनत: समं<sup>१२</sup> स्मितमुखी निष्कज्जले लोचने । मत्वैवं पुनरेव नेत्रयुगले चिक्षेप सा कज्जलं,

श्रीमन्त्रीश्वर ! कर्मचन्द्र ! शृणुताद् भावार्थमेनं शुभम् ॥१०७॥ तद्वस्तुभूयोऽपि निवेदितं मया,

नाऽनीयतेऽद्यापि कथं विभो ! त्वया । तर्तिक मृगाक्षि ! प्रणिगद्यतां पुनः,

सा किं ततो वंशमधीं-दुरोजयो: ॥१०८॥

१. अ. अतिदूरात् । २. अ. ब. इंद्र-सूर्य-गङ्गा । ३. अ.ब. प्रतौ **पाणितले च नीत्वा** इति पाठान्तरम् । ४. ब. दन्ताः । ५. ब. वेगेन । ६. अ. कुलयः; ब. स्वैरिणी कुलय जातिर्या प्रियं साभिसारिका । ७. ब. ऊर्मिमका त्वङ्गुलीयकिमति । ८. ब. वेषमकार्षीत् । ९. ब. प्रतौ 'अभिलिखन्ती' इति पाठः । १०. ब. चञ्चद् देदीप्यमानः । ११. ब. नवे तस्मिन् किसलयं किसलं पळ्ळवोऽत्र तु । १२. ब. सकलं । १३. ब. धारयामास ।

नितम्बिनीतुम्बकयोरिवोच्चै-विक्षोजयोमूर्धनि वेणुदानात् ।
निवेदयामाशु बभूव वीणां, पति मनोभाविवदां वरिष्ठम् ॥१०९॥
प्रैसाधिकाङ्कस्थितपादपदां, काचित्रिजे सद्मिन सित्रिविष्टा ।
अनूर्ध्ववक्त्रापि रसालशीर्षात्, कथं स्वहस्तेन फलं लुलाव ॥॥११०॥
सौधस्याङ्के यत्र सा सित्रिविष्टा, तत्राऽधस्ताद्धस्तसादस्ति चूतः ।
हस्तेनैषाऽनूर्ध्ववक्त्राप्यखेदं, जग्राहैवं तत्फलं तस्य मूर्णः ॥१११॥
काचित्रिरागस्यपि नायके स्वे, कस्मात्प्रकुप्यावनताऽऽननाऽभूत् ।
ततोऽनुतापं महदादधत्या, क्रोडे धृतोऽसावनया तदैव ॥११२॥
दृष्ट्वा स्पष्टं दशनवसने कज्जलं सा स्वभर्तु-

र्मत्वा कान्तं परललनया भुक्तमुक्तं चुकोप । पश्चात्रम्रा मणिमयगृहं प्राङ्गणे धौतनेत्रं,

वक्तं दृष्ट्वा स्ववगतरहस्यानुतापं चकार ॥११३॥

कैर्पूरं कुमुदाकरं कुमुदिनीकान्तं च कुन्दोत्करंै,

कैलाशं कतुभुग्नदीमपि दलत्काशं पयो भःपतिम् ।

डिण्डीरं जलधेश्च मन्त्रिमुकुट ! श्रीकर्मचन्द्रप्रभो !

ह्यन्तर्वाणिगणस्य लोचनपथं गच्छन्ति नैते कथम् ॥११४॥

त्वत्कीर्तिप्रसरद्युता धवलिते विश्वेऽखिलेऽपि प्रभो,

सावर्ण्यादिह संप्रमग्नवपुषः कर्पूरकुन्दादयः ।

लक्ष्यन्ते कविभिनं चेति मिलिता दीपेऽन्यदीपप्रभा-

ऽभिन्नत्वेन न लक्ष्यते खलु यथा कोऽन्यो वृथा विस्तरः ॥११५॥

नेदं व्योमसरोवरं सुरपतेनैंतानि भानि ध्रुवं,

चञ्चत्प्रोज्ज्वलमौक्तिकानि विलसन्नायं विधुर्दृश्यते । श्रीमन्त्रीश्वरकर्मचन्द्रसुयशोहंसोऽयमित्युज्ज्वल-

स्तारामौक्तिकमालिकां कवलयन्नेवं बुधैर्लक्ष्यते ॥११६॥

१. ब. मण्डनकर्त्रा । २. ब. प्रतौ-कर्पूरं कुमुदाकरः कुमुदिनीकान्तश्च कुन्दोत्करः, कैलाशः ऋतुभुग्नदी प्रविदलत्काशः पयो भः पतिः, डिण्डीरः- इति पाठः । ३. ब. पुञ्जोत्करौ संहतिः । ४. ब. गङ्गा ।

इति सुललितभावं शास्त्रमेतत्स्वकण्ठे, प्रणयित<sup>१</sup> निपुणो यः सन्ततं सत्सभासु । अनुभवित स शोभामुह्लसन्तीमनन्तां,

न भवति परभावव्यग्रचेताः कदापि ॥११७॥

श्रीदेवतिलकसूरिर्जयति यशःपूरपूरितदिगन्तः । नरनरपतिमुनिमधुकरचुम्बितचरणारिवन्दयुगः ॥११८॥

श्री**नर्मदाचार्य**गुरोः प्रसादात्, श्री**पदाराज**स्य पदौ प्रणम्य । श्री**कर्मचन्द्रा**हृययाञ्चयेदं, श्री**हेमरत्नेन** कृतं च शास्त्रम् ॥११९॥ सद्वाक् शुभार्थः सुगुणः सुवृत्तो-ऽलङ्कारकान्तः शुभभावशाली ।

परोपकारप्रवणः स चाऽयं, ग्रन्थश्चिरं जयति सज्जनवज्जगत्याम् ॥१२०॥

मुष्णाति चेतांसि स भूपतीनां, पुष्णाति चातुर्यमपि स्वकीयम् । मध्नाति मानं ननु दुर्जनानां, यः कण्ठपीठस्थमिदं करोति ॥१२१॥

इति श्रीभावप्रदीपाभिधं शास्त्र समाप्तं । श्रीरस्तुँ । शुभम्भवर्तुं । श्री: ।

विक्रमतो वसुविह्निक्षितिपतिवर्षे (१६३८) तथाऽऽश्विने मासि । विजयदशम्यामयमिति विनिर्मितो **हेमरत्नेन** ॥१॥ • [श्री**ज्ञानितलकसूरि**र्जयित यशोर्राशभासितिदगन्तः । नरनरपतिमुनिमुनिवरपूजितपादारिवन्दयुगः ॥१॥ तत्पट्टे **हेमरत्ना**ह्नसूरिर्जयतु शास्त्रकृत् । विनिध्वंसितपापौघः प्रसन्नानपङ्कजः ॥२॥]



१. ब. निर्माति । २. ब. प्रेती- 'ग्रन्थश्चिरं तिष्ठतु सज्जनोपि' इति पाटः । ३-४-५. ब. नास्ति । ६. ब. प्रतौ 'विजयदशम्यामेतद् विनिर्मितं हेमरत्नेन' इति पाटः । ७. [] कोष्ठकान्तर्गती द्वाविप श्लोकौ हेमरत्नस्विलिखितादर्शे अ.संज्ञकपुस्तके न स्तः ।

# टूंक नोंध

#### आ अंकना आवरण-चित्र विषे

मारी सामे 'क्षेत्रसमास प्रकरण'नी एक सचित्र पण जर्जरित अने खण्डि प्रतिनां थोडांक पानां छे. सद्भाग्ये तेनुं अन्तिम पत्र एमां छे. ते पानां पर ६ पंक्तिनी पुष्पिका छे, ते पैकी ३ पंक्तिओ हरताल वडे भूंसी नाखवामां आवेली छे, अने शेष ३ वंचाय छे, तेनुं लखाण आ प्रमाणे छे :

''संवत् १६२९ वर्षे फागुण पासे सुकुलपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ शुक्रवासरे मेवातमण्डले बेरोजनगर मध्ये मुनि जगराजेन लिखिता, चित्रता मुनि-पासचन्द्रेण श्रीमस्तु कल्याणं वाच्यमानं भूयात् ॥''

आ पानांमां जे थोडांक चित्रो छे ते पैकी बे चित्रो आ अंकना आवरण पर मूक्यां छे. उपरनी पुष्पिकाथी निश्चितपणे समजाय छे के आ प्रति जैन साधुए लखी तो छे ज; पण तेनां चित्रो पण एक जैन साधुए ज आलेखेलां छे. जैन मुनिओ लिलत कलामां केटला पारंगत हता ते आ उपरथी फलित थाय छे.

अने आ कांई एकलदोकल दाखलो नथी. ताजेतरमां ज ब्रिटिश लायब्रेरी द्वारा प्रकाशित 'जैन हस्तप्रतोना सूचिपत्रो'मां त्यांनी सचित्र के विशिष्ट प्रतिओनी छबीओ छापेल छे, तेमां पण एक प्रतिना अन्तभागनो फोटो छे. तेमां आ प्रमाणे वंचाय छे :

''०००पण्डित देवकुशलेन लिखिता प्रतिरियम् । पं० कनककीर्तिमुनिना चित्रिता ॥''

ए प्रति शालिभद्रचौपाईनी छे.

– शी०

# विहंगावलोकन

उपा. भुवनचन्द्र

अनु० ३८नी प्रथम कृति 'गुरुस्थाप्नाकुलक' स्थापनानिक्षेप अथवा गुरुपदे स्थापित करवानी विधि अंगेनी कृति नथी परन्त "आ काळे पण साधुओं छे अने तेमनी निश्राए ज आराधना करी शकाय, श्रावक गरुनं स्थान लई शके नहि" - एवा मुद्दा पर रचायेली छे. आना कर्ता श्रीधर गृहस्थ श्रावक होवानी सम्भावना वधु छे एवुं अनु०ना सम्पादकश्रीनुं कथन स्वीकार्य जणाय छे अने तेथी एक श्रावक द्वारा रचाएली विद्वत्तापूर्ण प्राकृतभाषा बद्ध प्रौढ कृति तरीके आ कृति विशेष नोंधपात्र बने छे. कृतिसम्पादक आनो रचनाकाल १३-१४मी सदी होवानुं धारे छे परन्तु कृतिनो विषय सचवे छे के रचनाकाल एटलो जूनो नथी. सोळमां शतकमां कडवामती, वीजामती जेवा सम्प्रदायो ऊभा थया हता जेमनी मान्यता हती के ''आ काळमां मुनिपणुं न होय'' आ मान्यतानो प्रतीकार प्रस्तुत कृतिमां थयो छे. 'संपई केई सङ्खा' (गा. ५३) वगेरेमां आवी मान्यता धरावता वर्गनो सीधो उल्लेख थयो छे. १३-१४मी शताब्दीमां आवा मतना उल्लेख नथी, १६मा शतकमां छे, तेथी आ कृतिनी रचना १६मा शतकना उत्तरार्ध के १७माना पूर्वार्धमां थई होय तेम मानवुं वधु योग्य गणाशे. कर्तानो अभ्यास उच्च कोटिनो देखाई आवे छे, तेथी सोळमा सैकामां पण आवी प्रौढ रचना थवी अशक्य के असंगत नथी

कृतिना पाठमां वाचनभूलो छे.

गा.	अशुद्ध	शुद्ध
२	. अनाण	अन्नाण
६	संघो	संघे
२६	निज्जइ	नज्जइ
२७	सुंदर०	ऽसुंदर०
३०	०निहस्स	०निहसस्स

३९	सामन्न-	सम्मत्त-
४२ .	हेण	तेण (?)
8/9	रएसु	वएसु
<b>૭</b> ૫	स(से)वमाणं	सळ्वमाणं
९५	सा	सो
९६	ताइ वीस	ता इ[ग]वीस

अमृत पटेल द्वारा सम्पादित पादपूर्तिमय स्तोत्रपञ्चक संस्कृतप्रेमीओ माटे रसल्हाण समुं छे. जैन श्रमणोए गीर्वाणिगराने अपित करेलां आवां अगणित कृतिकुसुमो अद्यापि ग्रन्थागारोमां-पोथीओमां प्रकाशनना प्रकाशनी राह जोता किलकानी जेम अज्ञात पड़ी रह्यां छे. सम्पादके रघुवंशना पाद शोधवानो श्रम लीधो छे. कृतिओना कर्ता, काल वगेरेना सम्बन्धे सन्दर्भग्रन्थोना आधारे ऊहापोह कर्यों छे. अनुसन्धान करनार दरेक विद्वाने-संशोधके सन्दर्भसाहित्यनो पर्याप्त उपयोग करवो जोइए. अनेक संशोधक विद्वानोए जीवनभरना परिश्रमथी साहित्य-पुरातत्त्व-इतिहास सम्बन्धी तथ्योना विशाल सन्दर्भग्रन्थो आपणने तैयार करी आप्या छे. आपणे तेनो उपयोग करवानुं पण आळस दाखवीए छीए ! कृतिसम्पादकोए कृतिसम्बद्ध माहिती सं. ग्रन्थोमांथी एकत्र करीने कृति साथे आपवी जोइए अने कृतिमांथी सांपडेल नूतन माहितीनी चर्चा करवी जोइए.

स्तोत्रपञ्चकमांनां शुद्धिस्थानो-

युगादि जिनस्तवन-

श्लो. २. अन्तिम चरणे आ प्रकारे होई शके-

प्राप्नोत्यसावद्धुतभाग्यसिन्धुः

श्लो. ६मां 'यदीशोऽहं'ने स्थाने 'यदीदृशोऽहं' सार्थक बनी रहे छे. श्लो. ९. 'ध्यानानि' निह 'ध्यातानि' जोइए.

श्लो. १८. गुणाम्बुनिधि० पाठथी छन्दोभङ्ग थाय छे. अहीं 'गुणाम्बुधि० पाठ सहजताथी कल्पी शकाय एम छे. वीतरागस्तवनमां श्लो. ५मां मोदा- छे त्यां मोहा- होवुं घटे. ऋषभदेवस्तोत्र श्लो. ४०मां 'धृती' छे त्यां 'धृता' साचो पाठ बने. महावीरस्तोत्रमां '०भवे' एवो पाठ सम्पादके कल्प्यो छे पण अहीं '०भवग्रीष्मकाले' एवो समास ज वांचवो. जोइए. टिप्पणोमां १ २ ३ वगेरे अंको पूर्णिवरामना चिह्न वगर मूक्या छे. क्रमसूचक अंको १. २. ३. एम पूर्णिवराम चिह्नयुक्त लखवा जोइए. ते वगर अंको जोडेना शब्दनी संख्याना वाचक विशेषण बनी जाय. आ आधुनिक परिपाटी छे.

श्रेयांसनाथस्तवननी देशीओ ध्यान खेंचे छे. कविए मोटा भागे दीर्घ देशीओ लीधी छे, अने तेमां प्रास-लय-आंकणी बराबर साचव्या छे. ढबना आधारे जोतां आ देशीओ ते समयना लग्नगीतो के प्रसंगगीतोनी होवानी कल्पना आवे.

सीमन्धरजिनस्तवन द्वारा अतिशयवर्णनना स्तवनोमां वधु एक स्तवननो उमेरो थाय छे. क. ६मां वाचननी भूल छे. अहीं कविनो आशय एवो छे के प्रभु जेवो समोविडयो बीजो कोई नथी के जेनी उपमा आपी शकाय. अर्थ-आशयना आधारे पाठनी अशुद्धि जणाय अने शुद्ध पाठनी कल्पना पण करी शकाय. "जि अनुपम दिवाइ' एम वांच्युं छे त्यां 'जिअ उपमा दिवाइ' एवुं होवानी पूरेपूरी सम्भावना छे. 'नुपम' वांच्युं छे त्यां उपम होइ शके. ए ज रीते 'होइय स्युं' छे त्यां 'होइ यस्युं' होइ शके. यस्युं =जस्युं =जिस्युं क. १४मां मांद छे ते मान्द्य (रोग)मांथी निष्पन्न छे. मरगी-मांद एवो प्रयोग ते समये प्रचलित हशे. आथी मांद(गी) एम (गी) कल्पवानी जरूर नथी. क. १४-१५-१६मां नु हइ, नु हवइ वगेरे प्रयोगो छे. ते आजना न्होय, नो'यना पूर्वगामी छे. 'हुइ'नो उकार 'न'मां आवी जतां न् हइ थयं. स्वख्यत्यास नामे ध्वनिपरिवर्तननो नियम आमां काम करे छे. कडी ३१मां इंद्री. कडी ३२मां जीवी शब्दमां अन्तिम वर्णनो-इन्द्रिय अने जीवित =जीवियना 'य'नो - लोप थयो छे अने अन्तिम स्वर दीर्घ थवा द्वारा लुप्त 'य'नी हाजरी परखाय छे. क. ३७मां 'समु' पछी [द्र] सम्पादके लखवां जोइतो हतो. क. ३८मां बीजा-त्रीजा चरणोमां थोडा शब्दो छूटी गया छे. अन्तमां कळश छे खरो पण ते मात्र छेल्ली कडीमां छे, ज्यारे अहीं तेनाथी आगली कडीने कलश

तरीके ओळखावी छे, जे वस्तुत: ढालनी अन्तिम कडी छे.

म. विनयसागरजीए अनु॰मां प्रगट थयेली कृतिओना कर्ता विशे विस्तृत पूरक माहिती पत्र-चर्चामां आपी छे. ऐतिहासिक विगतोनो विशाल भण्डार तेमणे पोतानी दीर्घ साहित्ययात्रामां एकत्र कर्यो छे ते नूतन अभ्यासीओ माटे प्रेरणारूप बनवो जोईए.

> C/o. जैन देगसर नानी खाखर (कच्छ)

### नवां प्रकाशनो

१. **उ. यशोविजयजीकृत ३५० गाथाना स्तवननो पं. पद्मविजयजी**-**कृत बालावबोध**: सं. आ. प्रद्युम्नसूरि; प्र. श्रुतज्ञान प्रसारक सभा, अमदावाद, वि.सं. २०६३.

वाचक श्रीयशोविजयजी गणिनी गुर्जरिगरानी गेय एवी सैद्धान्तिक रचनाओमां ३५० गाथानुं सीमन्धरिजन-विनित्स्वरूप स्तवन, पोताना विषयवस्तुने कारणे आगवी मुद्रा धरावती रचना छे. तेना अर्थ-बोध माटे पण्डित श्रीपद्मविजयजी गणिए विशद बालावबोध रच्यो छे. आ स्तवननो विषय गहन छे, तेने उघाडवामां आ बालावबोध घणो उपकारक छे. तेनुं प्रकाशन तो अगाउ थयेल छे, परन्तु प्रस्तुत सम्पादनमां, पूर्व-प्रकाशित वाचनामां रहेली अगणित क्षतिओ सुधारी लेवामां आवी छे, जेने लीधे एक समीक्षित वाचना आमां प्राप्त थाय छे. ३५० गाथाना स्तवनना अध्ययननी परिपाटी जैन संघमां व्यापक होई तेमां आ वाचना घणी उपकारक थशे तेम मानी शकाय. परिशिष्टो तथा सम्पादकीय नोंधो थकी प्रकाशन वधु मूल्यवान बन्युं छे. बालावबोधनी साथे साथे दरेक गाथानो संक्षिप्त-सरल गुर्जरानुवाद पण आपवामां आवेल छे, जे वाचको माटे घणो उपयोगी छे.

२. **ज्ञानसार** - **सस्तबक** : कर्ता : उपाध्याय यशोविजय गणि; सं. आ. प्रद्युम्नसूरि, डॉ. मालती शाह; प्र. श्रुतज्ञान प्रसारक सभा, अमदावाद; सं. २०६३.

ज्ञानसार ए उपा. यशोविजयजीनी प्रसिद्ध तात्त्विक संस्कृत पद्यबद्ध रचना छे. तेनुं अध्ययन जैन संघमां व्यापकपणे हमेशां थाय छे. तेना पर कर्ताए गुर्जर भाषामां बालावबोधनी रचना करेल छे, तेनी सम्पादित वाचना आ पुस्तकरूपे उपलब्ध थाय छे, जे अध्येताओ माटे उपकारक छे. सम्पादकनी प्रस्तावना, परिशिष्टो तथा प्रत्येक पद्यनो सरल गुर्जरानुवाद-आ त्रण वानां होत तो ग्रन्थनुं महत्त्व अनेकगणुं वधी जात.

३. **जैनविधि-विधान सम्बन्धी साहित्य का बृहद् इतिहास** : ले. साध्वी सौम्यगुणाश्री, सं. डो. सागरमल जैन; प्र. प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर;

#### ई. २००६

एक विशद शोधप्रबन्ध-समान ग्रन्थ. आमां १३ अध्याय छे, जेमां जैन विधिविधानोना उद्भव तथा विकासनी विगतोथी प्रारंभीने क्रमशः १. श्रावकाचारसम्बन्धी; २. साध्वाचार सम्बन्धी; ३. षडावश्यक; ४. तपस्या; ५. संस्कार तथा व्रत; ६. समाधिमरण; ७. प्रायश्चित्त; ८. योग-मुद्रा-ध्यान; ९. पूजा-प्रतिष्ठा; १० मन्त्रादि; ११. ज्योतिष-निमित्त; १२. शेष प्रकीर्ण विषय; आटला विषयो-सम्बद्ध विधि-विधान परक साहित्यनी परिचयात्मक विस्तृत नोंध लेखिकाए आपी छे. एकज स्थाने लगभग बधा ज विषयना विधिविधानने स्पर्शती साहित्य-सामग्रीनी जाणकारी उपलब्ध थती होई, आ ग्रन्थ, आ विषयनो महत्त्वपूर्ण सन्दर्भग्रन्थ बनी रहेशे. अहीं लिखित तथा मुद्रित अने प्राचीन तथा अर्वाचीन एम प्राप्य बधी सामग्री विषे नोंध मळे छे. स्वाभाविक रीते ज आमां केटलीक सामग्री छूटी जाय, अने तो तेमां लेखिकानो दोष न गणाय. एटलुं के जो आवी, छूटी गएली सामग्री जाणवामां आवे, तो तेनी नोंध करी लेवाय, अने भविष्यमां आ ग्रन्थनी पुनरावृत्ति के पूर्तिमां तेनो समावेश करी लेवाय, तो ते उपयुक्त थशे. लेखिकाने साधुवाद.

४. सागरिवहङ्गमः (सचित्र); सं. कीर्तित्रयी; प्र. भद्रङ्करोदय शिक्षण ट्रस्ट, गोधरा, सं. २०६२, ई. २००६.

Richard Bach नामना अंग्रेज लेखके लखेल, जगप्रसिद्ध आध्यात्मिक नवलकथा ''Jonathan Livingston Seagull''नुं संस्कृत रूपान्तर, सुज्ञ जनोना कथन प्रमाणे, आ प्रकारनुं अनुवादकार्य आ प्रथमवार ज थयुं छे. 'नन्दनवनकल्पतरु' नामना संस्कृत अयनपत्र (सं. कीर्तित्रयी) साथे जोडायेल प्रकाशनमाळानुं आ द्वितीय पुस्तक छे.

**५. पञ्चसूत्रकम्** (सचित्र); कर्ता : श्रीहरिभद्रसूरिः; संस्कृत-पद्यरूपान्तरकारः-उपा. भुवनचन्द्रजी; सं. कीर्तित्रयी; प्र. भद्रङ्करोदय शिक्षण ट्रस्ट, गोधरा; सं. २०६३, ई. २००७.

'पञ्चसूत्र' ए भगवान् हरिभद्राचार्यनो सुविख्यात ग्रन्थ छे. तेनो संस्कृत पद्यबद्ध अनुवाद उ. भुवनचन्द्रे प्राञ्जल शैलीमां करीने साहित्य जगत्ने एक विलक्षण उपहार अर्पण कर्यों छे. तो 'पञ्चसूत्र'ना उत्तम भावोने चित्रोमां ढाळवानुं काम कीर्तित्रयी-मुनिराजोए कर्युं छे, जेने आकार आप्यो छे चित्रकार नैनेश सरैयाए. सर्व प्रकारे सरस-रूपकडुं कही शकाय तेवुं आ प्रकाशन 'नन्दनवनकल्पतरु'नी प्रकाशनमाळानुं तृतीय प्रकाशन छे.





जैन मुनि द्वारा चित्रित पोथीचित्र ( जुओ आ अंकमां टूंक नोंध )